لطايف ہندی

OR,

THE NEW CYCLOPÆDIA HINDOOSTANICA OF WIT;

CONTAINING A CHOICE COLLECTION OF

Humorous Stories,

IN THE

PERSIAN AND NAGREE CHARACTERS;

TO WHICH IS ADDED,

A VOCABULARY OF THE PRINCIPAL WORDS, IN HINDOOSTANEE AND ENGLISH.

By SHREE LULLOO LAL KUB,
B,hasha Moonshee in the College of Fort William.

Calcutta:

PRINTED AT THE INDIA GAZETTE PRESS.

1810.
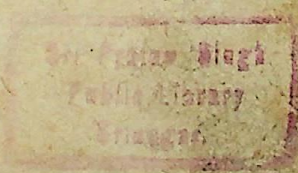
श्री गणेशाय नमः

नक़्ल १

एक साहूकार पोरड़ों का रज्जा ज़माने के पेच पाय में आ अपनी दौलत सब खो बैठा और लगा निपट दुखपाने और फ़ाके कड़ाके खैंचने ः निदान उसके जीमें यिह ख़याल गुज़रा कि जो मैं किसी महापुरुष या सिद्ध के पास जाऊं तो यिह दुख मिटे - क्यूंकि सुना है साध के दरशन से ब्याध जाती है ः इतना बिचार चला चला एक जोगी के पास गया - यिह उस से कुछ न कहने पाया कि उस ने अपने जोग से इसका मतलब दरयाफ़्त के कहा ः

सुख दुख प्रतिदिन संग हैं मेटसके नहि कोय॰॰
जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय॰॰

यिह मख़्कूल जवाब पा वुह बियासा खबर कर अपने घर आया

नक़्ल २

एक अंधा बैरागी काशी के बीच मनकरनिका घाट पर बैठा गहन में दही पेड़े खारहा था कि देख कर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यिह क्या करते हो ॰ बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं - कहा गहन में ॰ जवाब दिया बाबा मेरे गुरू की दया से सदाही गहन है॰ यिह सुन पंडित हंस कर चुप होरहा

नक़्ल ३

कोई राजपूत बहुत अफ़ीम खाता था इत्तिफ़ाक़न उसे सफ़र दरपेश हूआ और किसी मनज़िल में आकर उतरा वहां के लोगों ने आकर इससे कहा कि ठाकुरसाहिब यहां चोरी बहुत होती है आप

चौकसी से रहियेगा ः यिह बात सुनकर रात तो उसने जागकर काटी पर यिह बात जी में रखी कि चोरी बहुत होती है ः फ़जर होते ही घोड़े की पीठ लगा - एक शहर के बीच चला जाता था कि एकाएकी पीनक से चौंककर पुकारा अरे रम चेरा अरे रमचेरा घोड़ा कहां - वुह बोला महाराज - घोड़े पै तो बैठेही जाते हो और घोड़ा कैसा ः कहा बेटा इस बात का कुछ मुज़ायक़ः नहीं लेकिन हुशयार रहना ख़ूब है

नक़ल ४

एक बनियां कहीं गया था दो तीन दिन बअ़द वहां से आया तो उसने अपने घर का दरवाज़ः बंद पाया ः पुकारा किवाड़ा खोलियो - भीतर से उस की जोरू ने जवाब दिया कि खोलूं हूं बाबा - इस ने सुनकर कहा ऐ रांड़ क्या बकती है - वुह बोली मेरी आंख दुखे है - कहा आंख की तो सच है मैया

सुख दुख प्रतिदिन संग हैं मेटसके नहि कोय॥
जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय॥
यिह मुआकूल जवाब पा वुह बियारा खुश कर
अपने घर आया

नक़्ल २

एक अंधा बैरागी काशी के बीच मनकरनिका घाट
पर बैठा गहन में दही पेड़े खारहा था कि देख
कर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यिह क्या
करते हो॥ बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं-
कहा गहन में॥ जवाब दिया बाबा मेरे गुरू की
दया से सदाही गहन है॥ यिह सुन पंडित हंस
कर चुप होरहा

नक़्ल ३

कोई राजपूत बहुत अफ़ीम खाता था इत्तिफ़ाक़न
उसे सफ़र दरपेश हूआ और किसी मनज़िल में
जाकर उतरा वहां के लोगोंने आकर इससे कहा
कि ठाकुरसाहिब यहां चोरी बहुत होती है आप

ऐकसी से रहियेगा ॰ यिह बात सुनकर रात तो उसने जागकर काटी पर यिह बात जीमें रखी कि ऐरानी बहुत होती है ॰ फ़जर होते ही घोड़े की पीठ लगा - ऐक शहर के बीच चला जाता था कि ऐका ऐकी पीनक से चौंककर पुकारा अरे रम येना अरे रमयेना घोड़ा कहां - वुह बोला महा राज - घोड़े पै तो बैठेही जाते हो और घोड़ा कैसा ॰ कहा बेटा इस बात का कुछ मुज़ायक़ः नहीं लेकिन हुशयार रहना ख़ूब है

नक़्ल ४

ऐक बनियां कहीं गया था दो तीन दिन बअ़्द वहां से आया तो उसने अपने घर का दरवाज़ः बंद पाया ॰ पुकारा किवाड़ा खोलियो - भीतर से उस की जोरू ने जवाब दिया कि खोलूं हूं बाबा - इस ने सुनकर कहा ऐ रांड़ क्या बकती है - वुह बोली मेरी आंख दुखे है - कहा आंख की तो सम है मैया

नक़्ल ५

पठानों की किसी बस्ती में एक मुल्ला था - जो कुछ फ़ातिहः दरूद का उन्ह के काम होता उस को बुला लेते और अपना काम करवा लेते ॰ इस में शबिबरात जो आई तो हरएक के घर से उसे बुलाहट हुई तब उस के किसी आशना ने पूछा कि कहो दोस्त - आज तुम अकेले क्या करोगे और किस तरह घर घर फ़ातिहः पढ़ोगे ॰ बोला भाई मुझे फ़ातिहः पढ़ने से क्या काम मुरदः दोज़ख़ जाय या बिहिश्त मुझे अपने हलुवे माड़े से काम है

नक़्ल ६

किसी ने एक ज्ञानी से पूछा कि महाराज- आदमी जग में पैदा हो कर दुख से क्योंकर छूटे सो दया कर मुझसे कहो- तब उस ने इस को जवाब तो न दिया पर यिह दोहा पढ़ा

भुगतमान भुगतें बने ज्ञानी मूरख दोय
ज्ञानी भुगते ज्ञान सों मूरख भुगते रोय

नक़्ल ७

दो कलावंत दक्षिन से कमाई किये दिल्ली को चले आते थे - कि राह में दौड़ों ने आय लिया और लगे बर्छियां भाले उठाय उठाय मार मार डाल डाल पुकारने ः उस वक़्त ये दोनों भी हट गाड़ी से उतर चट परतल के टट्टू पर जा बैठे और लगे उन से पूछने कि बलैयालों मार मारडार डार ही कर जान्यौ है कै कभू चौपड़ हू खेले हौ ः उन में से एक बोला कि क्यौं - इन्हों ने कहा कि कंहू जुग हू मार्यौ जातु है ः इस लतीफ़े से वे बहुत ख़ुश हूए और इन्हें न लूट हंस कर चले गये

नक़्ल ८

किसी ठाकुर द्वारे में कई एक अताई चैन से बैठे गाय रहे थे और बहुत से लोग खड़े सुन्ते थे ः इस में एक ढीठ बैरागी आया और उन के हाथ से तंबूरा ले सब के बीच में बैठ लगा बेसुरा हो गाने ः उसका खटराग सुन सब उदास हूए पर

कोई कुछ न बोला ॰ निदान एक औवे खड़ा सुनता था- उस ने कहा बाबाजू बस कभी बस कभी बहुत गाये - वैरागी ने खिजलाकर जवाब दिया महाराज - मैं तो अपने ठाकुर को रिझाता हूं और कोई रीझा तो क्या और न रीझा तो क्या औवे बोला सारे मोकों तौ रिझायही न सक्यौ कहा ठाकुर मोहू सों कूछ है जो तू रिझाय लेगौ ॰ यिह सुन वुह शरमन्दः हो चुपचाप उठ कर चलागया

नक़्ल ७

कई एक अमीरज़ादे किसी जगह एक मेख़ गाड़ उसपर रुपया रख तीरंदाज़ी करतेथे और शर्त यिह थी कि जो इस रुपये को उड़ावे सो ले ॰ इत्तिफ़ाक़न किसी अल्लाद ने जा वहीं उन से सुवाल किया कि बाबा कुछ मौला नाम का सौदा करो उन में से एक ने हंसकर कहा शाह साहिब निशानः मारो और रुपया लो ॰ फ़क़ीर ने झट उसके हाथ से तीर कमान ले यामअ़बूद करके एक

और अटकलपच्चू माना कि वुह रुपया उड़ गया ॥ वे बोले वाहवा - इन ने दौड़ के रुपया तो उठा लिया और कहा क्यों बाबा फ़क़ीर को कुछ जवाब न मिला - उन में से एक ने कहा सांई रुपया तो लिया अब क्या कहते हो ॥ बोला बाबा यिह तो मेहमान के लिया है अभी फ़क़ीर का सुवाल बाक़ी है

नक़्ल १०

एक वाइज़ किसी गांव में कितने एक आदमियों को वअ़ज़ करता था - इस में कोई गंवार भी वहां आबैठा और लगा उस का मुंह देखदेख बेक़रार हो रोने ॥ इस को रोता देख सब ने जाना कि यिह कोई बड़ा मोमदिल है जो इतना रोता है - एक ने इस से पूछा कि भाई सच कह तू जो इतना रोता है तेरे दिल में क्या आया है ॥ वाइज़ को उंगली से बता बोला कि इन मियां की डाढ़ी हिलती देख मुझे अपना मुआ हुआ प्यारा बकरा

याद आया कि जब न तब उसकी भी इसी तरह डाली हिलती थी - इस लिये मैं रोताहूं यिह सुन सब खिल खिला उठे और बाद़ज़ शरमंद: हो रहमखारहा

नक़्ल ११

कोई बड़ा दौलतमंद था पर उस के फ़रज़ंद न था उस ने लड़के की ख़ातिर बहुतेरे तरद्दुद किये और रुपये ख़रचे लेकिन न हूआ - तब उस ने हारमार ऐक ग़रीब के लड़केको गोद लिया और अपने माल असबाल का मालिक किया ॰ कितने ऐक दिन बअ़द वुह मरगया- यिह उस मालको पातेही लगा अंधाधुंध लुटाने और कुचाल चलने- इस की यिह चाल देख किसी ने ऐक से पूछा कि इस का क्या सबब जो यिह दौलत पातेही बुकला या॰ उस ने इस के जवाब में यिह दोहा पढ़ सुनाया

कनक कनकतैंसौगुनी मादिकता अधिकाय

वुह प्यारे वैरात है यिह पारे वैराय

नक़्ल १२

मथुरा के चौबे बड़े ठट्ठेबाज़ होते हैं - एक दिन कोई चौबे बाज़ार से मारू बैंगन ख़रीद लाया ॰ देखकर उस की जोरू ने पूछा कहा भरता करूं - यिह बोला मेरे कहा सूक परी - उस ने जवाब दिया लोग तुम्हें जोयसी कहत हैं ॰ यिह सुन चौबे लाजवाब हूआ

नक़्ल १३

लाड़ कपूर नाम दो कलावन्त अकबर के यहां थे - अकसर बादशाह उन से युहल करते - इस से वे भी गुस्ताख़ होरहे थे ॰ एक दिन बादशाह ने उनमें से किसी को कहा गाओ - वुह बोला नहीं जहांपनाह बैल - फिर हज़रत ने फ़रमाया अबे कुछ बोल - जवाब दिया मोल बीस रुपये - फिर शाह ने कहा क्या हरामज़ादः है - उसने कहा हरामज़ादः हो तो कौड़ी नलूं ॰ इतनी बात के

सुनते ही बादशाह ने ख़फ़ा हो कर उन्हें कहा कि मेरे मुल्क में रहे तो बेतरह पेश आऊंगा और क़िलए से निकलवा दिया ॥ ये मारे डरके दिन को तो दुकोसी औ कोसी शहर के बाहर गाओं में निकल जाते और रात को आते - इसी भांति नित शाम को आवते और दो घड़ी के तड़के चले जाते इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ ये इधर से जाते थे और उधर से शिकार किये बादशाह घोड़े पर सुवार चले आते थे ॥ ये दूर से देखतेही एक ऊंचे बड़ के दरख़्त पर जा चढ़े और विन्हों ने भी घोड़ा मार विसी पेड़ के नीचे ला खड़ा किया और इन्हें पह चान कर कहा - क्यों बे मैं ने जो तुम से कहा था कि मेरे मुल्क में न रहना - जवाब दिया कि बले था लेउं - हम सब मुलकन में फिर आए जहां देख्यो तहां आपही को मुल्क देख्यो - यातें हार मान अब आसमान की राह लई है ॥ इस लतीफ़े से ख़ुश हो बादशाह ने उन की तक़सीर मु

साफ़ की और नौकरी बहाल

नक़्ल १४

किसी कुंजड़न के आलीस बरस की उमर में बड़ी
आरज़ू करते करते ऐक बेटी हुई - उन ने नि
पट लाड़ प्यार से उस का नाम फ़ज़ीहती रखा ॥
क़ज़ाकार वुह दो तीन बरस की होकर मरगई
उस के ग़म से वुह नित शाम सुबह नाम ले ले रो
याकरे - ऐक दिनसो हाय मेरी फ़ज़ीहती हाय
मेरी फ़ज़ीहती कर के रोरही थी - कि इस में
उस का ख़ाविन्द आया और समझाने लगा कि
सुन नेकबख़्त हमारी तुम्हारी हयात बाक़ी और ख़ु
दा का फ़ज़ल चाहिये तू ऐक फ़ज़ीहती को क्या रो
ती है बहुतेरी फ़ज़ीहती हो रहेगी

नक़्ल १५

ऐक कायथ कमसवार घोड़े पर बैठा बाज़ार में च
ला जाता था - किसी शाहसवार ने उसे मेंडकी से
भी पीछे हटा बैठा देख के कहा कि भैया जी ज़रा

आगे हट बैठो ॰ बोला क्यौं - कहा आसन ख़ाली है - फिर उस ने जवाब दिया - क्या तुम्हारे कहे से हट बैठेंगे जैसे साईस ने बैठा दिया है तैसे बैठे चले जाते हैं

नक़्ल १६

एक बनियां जो वह्न लाता सो नित का नित ग़रीब भूखे प्यासों को बांट देता और आप निहंग लाड़ला हो रहता ॰ एक दिन उस के बड़े भाई ने पांच चार पड़ोसियों को बिठाय उससे कहा कि भाई जी हम महाजन हैं - हमें पूंजी रख ब्योहार किया चाहिये - इस तरह बेठौर ठिकाने दिया करें तो हमारी महाजनी क्योंकर रहे ॰ जवाब दिया भाई साहिब क्या तुम ने यिह दोहा भी नहीं सुना जो ऐसी बात कहते हो

सब से दिया अनूप है दिया करो सब कोय
घर में धरा न पाइये जो कर दिया न होय

नक़्ल १७

कोई ग़ुस्सःवर अंधा कहीं को चलाजाता था कि एक अंधे कुऐ में गिरपड़ा और लगा पुकारने कि चलियो दौड़ियो लोगो मैं कुऐ में गिरपड़ा ॰ लोग सहमय्या दौड़के वहां गये और कुऐ के मन घटे पर खड़े हो उस के निकालने का तरद्दुद करने लगे - कुछ देर जो हुई तो वुह भीतर से ख़फ़ा हो बोला कि जल्दी निकालते हो तो निकालो नहीं तो मैं किधरही को चला जाता हूं मुझे फिर न पाओगे

12

नक़्ल १८

किसी बड़े आदमी के पास ऐक ख़ुश मसख़रा आ बैठा था और इन के यहां कहीं से गुड़ आया - उस ने ज़राफ़त से कहा कि ख़ुदावन्द मैं ने उमर भर में तीन दफ़अः गुड़ खाया है ॰ बोला बयान कर - कहा ऐक तो छठी के दिन जनम घूंटी में खाया था और ऐक कान छिदाये थे तब और ऐक

/3

आज पाऊंगा ः उस्ने कहा जो मैं न दूं - बोला

सोही दफ़ः आया सही

नक़्ल १९

पांच चार पोस्ती किसी मकान पर बैठे दरमियान

ते थे - कि उन में से एक का ख़्यालः जो मरकज़

नेयान हुआ - बोला पोस्ती ने पिया पोस्त तो दिन

चला अढाई कोस ः यिह सुन कोई दूसरा बोल

उठा कि वुह पोस्ती न होगा कोई क़ासिद होगा-

पोस्ती ने पिया पोस्त तो कूंडे के इस पार या

उस पार और जो बीच में जगह पावे तो वहीं

मक़ाम करे

नक़्ल २०

14 दो आशना मिलकर सैर को निकले और चले च

ले दरया कनारे पर पहुंचे - तब एक ने दूसरे से

कहा कि भाई तुम यहां खड़ेरहो तो मैं जलदीसे

एक ग़ोतः लगा लूं ः इस ने कहा बहुतबिहतर यिह

सुन वुह बीस रुपये इसे सुपुर्दकर कपड़े किनारे

पर नग्न जों पानी में पैठा तों इस ने चालाकी से वे रुपये किसी के हाथ अपने घर भेज दिये ॰ उस ने निकल कपड़े पहन रुपये मांगे - यिह बो ला हिसाब सुन लो - उस ने कहा अभी देनेदेन भी नहीं हूई हिसाब कैसा ॰ ग़रज़ दोनों से तकरार होने लगी और सौ पचास आदमी घिर आये - उन में से ऐक ने रुपयेवाले से कहा कि मियां क्यों झगड़ता है हिसाब किस लिये नहीं सुन लेता ॰ हार मान उस ने कहा अच्छा कह - वुह बोला जिस वक़्त आप ने ग़ोतः मारा मैं ने जाना डूब गये पांच रुपये दे तुम्हारे घर ख़बर भेजी और निक ले तब भी और पांच रुपये ख़ुशी की ख़ैरात में दि ये - रहे पांच सो मैं ने अपने घर भेजे हैं जिन का कुछ अन्देशः हो तो मुह से तमस्सुक लिखवा लो ॰ यिह धांधल पने की बात सुन वुह बिचारा बो ला भला साहिब भर पाये

नक़्ल २१

दो कायथ अक़्लमन्द लिखे पढ़े किसी मकान पर बैठे बहसते थे - एक कहता था कि आदमी उत्तम बरन में पैदा होने से पंडित चतुर होता है और दूसरा कहता था कि अच्छी संगत से ॰ उन का बहसना देख किसी मरदे आदमी ने कहा कि इस बहस ने से तो तुम्हारा क़ज़िय: न मिटेगा - बिहतर है कि इस मुआमले में किसी को मुनसिफ़ मानो यिह बात उन दोनों को पसन्द आई और सूरदास जी के पास जाकर हरएक ने अपना दावा इज़हार किया ॰ सुनतेही सूरदास ने उन के जवाब में यिह दोहा पढ़ा

> स्वात बूंद सीपी मुकत कदली भयौ कपूर
> कारे के मुख बिष भयौ संगत सोभा सूर

नक़्ल २२

15 कोई पोस्ती जंगल में बैठा प्याले में पोस्त घोल रहा था - इत्तिफ़ाक़न किसी हाड़ हूड़ से एक ख़र

गोश जो निकल दौड़ा तो उसके धक्के से इसका प्याला लुढ़क पड़ा ः यिह ख़फ़ा हो बोला कि मुंह से क्या कहें भला तेरे मुनब्बी ही से जाकर कहेंगे - इतना कह कूंडी सोंटा बगल में दबा शहर में जा हर एक चौपाये को देखता चला - निदान एक गधे को जो उस के रंग से मुशाबः पाया तो गधेवाले से जाकर कहा कि तेरे इस जानवर के बेटे ने मेरा पोस्त का प्याला भरा हूआ लुढ़ा दिया ः उस ने कहा कि जिस के बेटे ने लुढ़ाया है तिसी से जाके कहो - यिह सुन वुह गधे के पासजा उस की पीठ पर हाथ रख चाहे कि कुछ कहे वोंहीं उस ने फिरकर एक ऐसी दुलत्ती मारी कि यिह बियाना आह कर बैठ गया और हंस कर बोला कि क्यों न हो जिस का मुनब्बी ऐसा हो तिस का लड़का वैसा हूआ ही चाहे - इतना कह चला आया

नक़्ल २३

एक बादशाह ने किसी से कहीं यिह बात सुनीथी

16

कि पूरब के लोग बड़े बद लिहाज़ औ बेतमीज़ हो
ते हैं ः इस बात के इमतिहान करने को बादशाह
ने चार तरफ़ से चार रंडियां मंगवा तरबीयत
करवा अपनी खिदमत में रक्खीं - कई बरस के ब
ऋद एक दिन बादशाह महल सरा में सरिशाम
से बैठे नाच देखते थे चौर चार घड़ी रात पिछ
ली बाक़ी रहगई थी - उस वक़्त शाह ने वुह बात
याद कर के पहले पच्छम वाली रंडी से पूछा कि
रात कितनी होगी ः वुह बोली जहां पनाह रा
त थोड़ी है - कहा तूने किसतरह जाना - ऋर्ज़ की
कि नथ के मोती ठंडे लगते हैं ः फिर दखन वाली
से पूछा किश्रब कितनी होगी - जवाब दिया कि क़
रक़रीब है कि फ़जर हो - फ़रमाया तू ने क्योंक
र दरयाफ़्त किया - बोली पान सीठा लगता है ः
बऋद उत्तर वाली से पूछा - जो रैन किस क़दर
होगी - कहा निपट थोड़ी है - इरशाद फ़रमाया
तें ने किस ढब से मऋलूम किया - बोली हज़रत

सलामत यन्नाग की जोत मंद हूई ॐ पीछे पुनव
नी से पूछा कि तिस कितिनी नहीं हो गी- उत्तर दि
या निहायत थोड़ी है - बोले तूने कैसे जाना - ऋ
र्ज़ की कि जहांपनाह मुझे पाख़ाने की हाजत हूई
है ॐ इस बात के सुनतेही सब बेगमात और सहे
लियां खिलखिला उठीं - तब शाह ने खफ़ा हो
यिह कह उसे उठवा दिया कि उस शख़्स ने स
च कहा था उस मुल्क के लोग लाइक़ बादशाहों की
मजलिस के नहीं

नक़्ल २४

ऐक दिन अकबर बादशाह ने बीरबल से कोई
बात कहक उस का जवाब पूछा ॐ बीरबल ने वुह
जवाब दिया कि जो बादशाह के दिल में ठहना
था - सुन कर शाह ने कहा कि यही बात मेरे भी
जी में आई है ॐ बीरबल बोला कि पीरमुरशिद
यिह वही बात है जो सौ सियाने ऐक मत - शाह
ने कहा कि यिह मसल भी तो मशहूर है जो घिन

सिर अक़्ल गुमगुम किया ⁘ फिर बीरबल ने अर्ज़ की कि जहांपनाह मिज़ाज में आवे तो इस बात को आज़मा लीजे - फ़रमाया बहुत अच्छा ⁘ इस नी बात के सुनतेही बीरबल ने शहर में से सौ आ ऱमन्द बुला भेजे और दो पहर रात के वक़्त बाद शाह के हुज़ूर उन्हें एक ख़ाली हौज़ बता कर क हा - हुज़ूर का हुक्म है कि इसी वक़्त हरएक आ दमी एकएक घड़ा दूध का भर कर इस हौज़ में डाले ⁘ हुक्म बादशाही को सुनतेही हरएक ने अपने जी में यिह बात समझके कि जहां निन्नानवे घड़े दूध के होंगे तहां मेरा एक घड़ा पानी का क्या मालूम होगा पानीही डाला - बीर बल ने शा ह को दिखाया शाह ने उन सब से कहा - तुम ने क्या समझ के मेरे हुक्म को न माना सच कहो नहीं तो बेतरह पेश आऊंगा ⁘ तिनमें से हर किसी ने हा थ बांधबांध कर कहा कि जहांपनाह ख़्वाह मारि ये ख़्वाह छोड़िये गुलाम के जीमें यिह बात आई

कि जहां निन्यानवे घड़े दूध के होंगे वहां ऐक घ ड़ा पानी का क्या मअ़लूम होगा ॐ यिह बात सबकी ज़बानी सुनकर बादशाह ने बीरबल से कहा जो कानों सुनते थे सो आंखों देखा - कि सौ सियाने ऐक मत

नक़्ल २५

ऐक शख़्स बड़ा अफ़ीमी था - उसके यहां कोई ख़िदमतगार नया नौकर हूआ - उनने उससे पूछा कि मियां तू कुछ नशः तो नहीं पीता - बोला पीर मुरशिद गुलाम सिवाय अफ़ीम और किसी नशे से आशना नहीं ॐ यिह बात सुन बहुत ख़ुश हो अफ़ीम की डिबिया निकाल उनने आप खा उसे देकर कहा - कि मियां आज हमारा जी या हता है मीठे चांवल जलदी से पका दो तो खांय - बहुत ख़ूब करके पकाने लगा ॐ इसमें पीनक जो लगी तो दो पहर गुज़र गये - आक़ाने पुकारके कहा कि अरे भाई चांवल पके या नहीं - बोला कि ख़ु

दाबेंद पक चुके हैं पर दस देना बाकी है - कहा जल्दी लाओ ॐ किस्सः कोतह व हलवाई पनावी फ़ जर से पकाते पकाते शाम को तैयारकर लेगया - देख कर आक़ा ने कहा शाबाश क्या जल्दी पका ला या है ॐ इतनी बात के सुनते हीवुह हाथ जोड़कर बोला कि क़िबलः फ़िदवी से आपकी नौकरी नहो सकेगी - कहा क्यों - जवाब दिया ऐसी शिताबी में एक रोज़ मेरी जान जाती रहेगी और चलागया

नक़्ल २६

शाहजहां बादशाह दाराशिकोह शाहज़ादे को बहुत चाहते थे - एक रोज़ चंडालीदार हाथी पर सुवार और दाराशिकोह सवारी में चलेजाते थे - इस में शाहज़ादे ने एक तरफ़ देखा जो कोई साहूकार बच्ची सोलह सतरह बरसकी जिसका चांद सा मुखड़ा काजल मिस्सी लगाये पान खाये नखसिख से सिंगार किये जवानी का मद पिये दोनों हाथ किवाड़ के दोनों बाज़ुओं पर दिये बेहिजाब

9575

पुसी बंदो खड़ी देखती है ॰ विसकी बेबाकी देख शाहजादे ने गीह कर बाप से कहा -जहां पनाह देखिये यिह औरत किस बेहिजाबी से इधर देख ती है - शाह ने शहजादे की बदतीननी देख फ़र माया बाबा जान बाप भाई के रूबरू हिजाब क्या चाहिये ॰ यिह सुन शहजादः शरमा कर चुप हो रहा

नक़्ल २७

किसी तीरथ के नज़दीक एक मठ में कितने एक फ़कीर रामावत नीमावत नानकपंथी दादू पंथी सन्यासी बैठे आपस में मत का बिबाद कर रहे थे कोई किसी की बात न मानता था अपने अपने पंथ की थोड़ाई बड़ाई करते थे ॰ निदान झगड़ते झगड़ ते तूंबे खपर फूटने की नौबत पहुंची - इस में एक अबधूत बोला साधो क्यों लड़ मरते हो इस दोहे के अर्थ को तो समझो ॰

घट घट में मूरत वही लाल जो नहीं विवेक

जैसे फूटी आनसी खंड खंड मुख ऐक

नक़्ल २८

ऐक उमरा बड़ा बख़ील था कि कभी झूठे हाथ से कुत्ता भी उस ने नमारा था और खाने खिला ने का तो क्या ज़िक्र - ऐक रोज़ कोई कलावंत भूला भटका उसके यहां जा पहुंचा और उसे बड़ा आ दमी जान तंबूरा मिला ख़ूब गाया और उनने भी रीझकर दाद दी - बारे इतने में बकावल ने आ अर्ज़ की कि ख़ुशबन्द ख़ासः तैयार है ॐ बोला कि मेरे सिर में दर्द है अभी रहे ऐक नींद लेकर खाऊंगा - यिह बहानः कर मुह ढक सो रहा और कलावन्त भी उस के मकर करने के मक़सद को दर याफ़्त कर पलंग के तले पांयती लोट रहा - पहर ऐक के बाद उमरा ने किसी अपने चाकर से पूछा कि अबे वुह बला गई - इस में कलावंत ने जवाब दिया कि बलैया लेउं यिह बला तो क़दम लगी है बिन खाना खाये कब जाति है ॐ इस तरी

फे को समझ खुश हो उस ने इसे अपने साथ खाना खिला कुछ दे रुख़सत किया

नक़्ल २७

किसी गांव में एक लड़का छदाम की कौड़ी ले भड़ भूंजे की दूकान पर चबेना लेने गया - उसने चबेना कौड़ी ले तोल दिया - इस ने खंभे की घपची में कर दोनों हाथ बढ़ा ले तो लिया पर हाथ न निकाल सका - तब रोने लगा - उस का रोना सुन बहुत से लोग वहां जमा हूसे और हाथों में खंभा देख हैरान - किसी की अक़्ल कुछ काम न करती थी ॐ निदान एक ने उन में से कहा कि भाई लालबुझक्कड़ आवे तो यिह लड़का बचे - नहीं तो इस का बचना दुश्वार ॐ यिह सुन कोई उस का मालिक लालबुझक्कड़ को बुला ही लाया और आते ही विन्हों ने देख कर फ़रमाया ॐ

कि बूझे लालबुझक्कड़ और जो बूझे को छान बलेंडा दूर करो इसे ऊपर कर के लो

नक़्ल ३०

लाड़ कपूर एक दिन अकबर बादशाह के रूबरू ख़ूब गारहे - शाह ने रीझ कर हाथी दिया - ये लेआए ः बरस एक के बअद इन दोनों भाइयों के जी में आया कि आज हाथी की ख़ुराक मल कर देखें कि कितना खाता है और किस तरह खा ता है ः ग़रज़ रातिब के वक़्त मूढ़ा बिछा बिछा हा थी के पास जा बैठे और उस का खाना देख निहा यत हैरान ओ फ़िक्रमंद हो आपस में कहने लगे - कि भाई साहिब बादशाह ने यिह हमारे पीछे कोई बड़ी बला लगादी - न इसे बेच सकें न किसी को दे सकें जो यिह चंद रोज़ यहां रहा तो इस के खाने के आगे हमारा गाना बजाना सब ख़ा क में मिल जायगा ः इतना कह कुछ दिल में सम झ ढोलक तंबूरा उस के गले में डाल छोड़ दिया - उन ने शहर में जा धूम की और शहरियों ने जा बादशाह के यहां फ़रयाद ः शाह ने फ़रमाया

देखो किस का हाथी है किसी ने आ अर्ज़ की कि जहांपनाह लाड़ कपूर का - हुक्म किया कि उन्हें बुलवाओ - कहने के साथही वे आन हाज़िर हूए देखतेही खफ़ा हो हज़रत ने कहा कि क्यों वे तुम ने हाथी क्यों छोड़दिया - उन्हों ने हाथ बांध अर्ज़ की कि़बलये आलम- गुलाम को जो हुनर आताथा सो बरस रोज़ में सब सिखला ढोलक तंबूरा उस के हाथ दिया ॥ इस लिये कि शहर बादशाही है इस में जाकर कमावे और कुछ विस में से आप खा हमें खिलावे ॥ इस लतीफ़े के सुनते ही खुश हो बादशाह ने उन का क़ुसूर मुआफ़ किया और हाथी के इवज़ एक गांव दिया

नक़्ल ३१

कोई बनियां बटोही बाट भूलके एक बन में जा निकला - विसे वहां और तो कोई न नज़र आया पर एक जोगी दिखाई दिया - इस ने उसे दंड वत कर के पूछा नाथ जी आते हो कहां से और

जाओगे कहां ः जवाब दिया - बाबा हिंगलाज ज्वा
लामुखी हरिद्वार कुरुक्षेत्र करके तो आता हूं
और काशी हो गंगा गोदावरी का मेलाकर सेत
बंधरामेश्वर को जाऊंगा ः बनिये ने कहा महा
राज ऐक बात पूछूं जो खफ़ा न हो - बोला बाबा
ऐक नहीं दो - कहा महाराज हम गृहस्ती हैं जो
देसदेस फिरें तो कुछ दोष नहीं आप फ़क़ीर हो
भटक भटक क्यौं जनम गंवातेहो - ऐक ठौर बैठ
कर किसलिये अपने भगवान का ध्यान नहीं कर
ते - कहा बाबा तूने यिह कहावत नहीं सुनी

बहता पानी निरमला बंधा गंधीला होय
साधू जन रमता भला दाग़ न लागे कोय

नक़्ल ३२

किसी ताजिर का लड़का बड़ा ग्रानःजंग हूआ जब
वुह ग्रानःजंगी करके पकड़ा जाय तब उस का
बाप रुपये दे कर छुड़वा लाय- ऐक रोज़ तिस
के बाप से किसी उसके भाई ने समझा कर कहा

कि जो तुम इसी तरह बेटे की मामीपीके निन डांड़ भरोगे तो एक दिन सब दौलत खो भूखे मरोगे ॥ इस ने पूछा मैं क्या करूं - जवाब दिया अब ख़ानःजंगी करके क़ैद पड़े तो न छुड़वाओ फिर आप ही सीधा हो जायगा - कहा बहुत अच्छा ॥ ग़रज़ वुह ख़ानःजंगी कर क़ैद में पड़ा और इसने न छुड़ाया - पांच चार बरस वहीं रहने दिया - इस में किसी भले आदमी ने आकर इन से कहा कि अब तुम्हारे बेटे ने ख़ानःजंगी से हाथ उठाया और तौबः की ॥ इन्हों ने उस की बात मान उसे छुड़ा मंगाया - एक दिन वुह बातों हीं बातों में किसी पर ख़फ़ा हुआ तब उस के बाप ने कहा मियां यिह वही मसल है रस्सी जलगई पर बल न गया

नक़्ल ३३

सुनते हैं कि इबराहीम अदहम का सेज सवामन फूलों से संवारी जाती थी - एक रोज़ बांदी ने

25

सेज तैयारकरके अपने जी में बिचारा कि इस बिछौने पर सोनेसे कैसा आराम जी को होता होगा - यिह सोच इधर उधर देख हुए जों उस पर लेटी तों आराम पाके बेहोश सो गई और फूलों के अन्दर पैठ बे मअ़लूम हो गई - पहर एक पीछे बादशाह ने भी आ उसी पर आराम फ़रमाया - घड़ी दो एक बअ़द उस ने जो करवट ली शाह घबराकर उठ खड़े हूए और बोले कि देखो इस पलंग में क्या बला है ॰ एक के कहते दस दौड़ आए और उन्हों ने बांदी को निकाल बाहर किया - देख कर हज़रत ने फ़रमाया कि इस मुरदार के मेरे रूबरू सौ तारिया ने मारो - बात के कहते ही लोगों ने सौ कोड़े गिन कर बेदरेग़ लगाए - उस ने पयास हंस हंस कर और पयास रो रो कर खाए ॰ यिह तमाशा देख बादशाह ने उसे पास बुला के पूछा कि सुन तो मार खाने से आदमी रोता है तू जो

हंसी और रोई इस का क्या सबब - अर्ज़ की ज
हांपनाह फूलों की सेज पर पहर भर सोने की
सज़ा ख़ुदा के यहां न हो यहां ही हुई - इस बात
को तो सोचके मैं हंसी और आप को ख़ुदा के
यहां इस सेज पर नित सोने की न जानूं क्या सज़ा
होगी यिह अन्देशः कर के रोई ॥ कहते हैं कि
इबराहीम अदहम इस बात के सुनते ही बाद
शाहत छोड़ फ़कीरी ले जंगल को चला गया

नक़्ल ३४

शाहजहां बादशाह के शाहज़ादः दाराशिकोह
को चिड़ियाओं से बहुत शौक़ था - एक रोज़ फ़र
माया - शहर में मनादी फेर दो कि जिस के यहां
जो जानवर शिकारी उड़ने लड़ने बोलने वाला है
लेकर कल फ़जर हुज़ूर में हाज़िर होय - इस
ख़ुश ख़बरी के सुनते ही जितने शहर में शौक़ीन
थे अपने अपने परन्दों को उड़ाय लड़ाय बुलाय
दौड़ाय तैयार कर बड़े तकल्लुफ़ से ले गये और

कोई तमाशबीन तमाशा देखने के वास्ते से एक कौवे को पिंजरे में बन्द कर कोई एक अमदः गिलाफ़ उस पर डाल उन के पीछे लिये चला गया- वहां सब के जानवर खुले और दिखलाये गये - हर किसी ने अपने जानवर की तअरीफ़ की और इनआम पाया - जब इस की नौबत आई तो यिह अपने दिल में घबराया ॐ गरज़ लोगों ने इस के हाथ से पिंजरा ले गिलाफ़ उतार कौवा शहज़ादे को दिखाया - देखते ही हंस कर शहज़ादे ने इस से पूछा कि मियां इन सब के जानवरों का तो वस्फ़ देखा और सुना अब तुम अपने जानवर का बयान करो कि यिह क्या वस्फ़ रखता है ॐ हाथ बांध खड़ा हो बोला पीरमुरशिद - किसी का उड़ना लिया है किसी का लड़ना किसी का बोलना किसी का दौड़ना - पर इस का गुन ही लिया है ॐ इस हाज़िरजवाबी से खुश हो दारा शिकोह ने इनआम सब के साथ उस को भी

दिया।

नक़्ल ३५

किसी रोज़ अकबर बादशाह और बीरबल एक बाग़ के बुरज पर बैठे खेतों का सबज़ा देख रहे थे - इस में बादशाह ने एक मोर को खरहर के खेत में जाते देख पूरबी ज़बान में चड़ना हि ज़रा फ़र बीरबल को कहा ॰ बीरबल देख तोर में मोर जात है - समझ के वाहीं विसी बोली में बीरबल ने भी जवाब दिया - जहांपनाह तोर फाटत जात है मोर पैठत जात है ॰ सुन कर बादशाह चुप ही हो रहे

नक़्ल ३६

एक कबीश्वर अपने शागिर्द को साथ ले किसी शहर में रोज़गार के लिये गया और वहां के उमदः लोगों से मुलाक़ातकर के कई बरस विस जगह रहा - पर कुछ उसे फ़ायदः न हुआ क्यों कि वहां के लोग अपनी जहालत से इस के गुन

को न समझे - तब इस के शागिर्द ने यिह दोहा उस के सोंहीं पढ़ा॰

जहां न जाकौ गुन लहै तहां न ताकौ ठांव
धोबी बैठ कहा करै दीगंबर के गांव

उस के जवाब में उस्ताद ने भी यिह दोहा कह सुनाया

जहां न जाकौ गुन लहैं तहां न दुष्य सुष्य बात
बन में तज मुकुतानकौं पहरत गुंज किरात

नक़्ल ३७

कोई मरदे आदमी किसी तालिबुल इ़ल्म की ज़बानी एक आलिम के इ़ल्म की तारीफ़ सुनकर मुश्ताक़ हो उस के घर मुलाक़ात को गया - वुह अपने दरवाज़े पर बैठा किताब मुताला़ करता था - यिह सलाम कर उन के सोंहीं मुअ़द्दब बैठ बोला - हज़रत सलामत - यिह कौन सी किताब है - जवाब दिया - तू कौन है जो मुझ से पूछता है ॰ कहा आप का ख़ादिम हूं - बोला जा तुझे इस के समझने

की लियाक़त नहीं - इस ने कहा बस मअ़लूम
हुआ कि आप इल्म ग़ैब की किताब देखते हैं कि
जिस से वे मुलाक़ात आप ने मेरी लियाक़त दर
याफ़्त की ॰ इस बात को सुन वुह शरमिन्दः हो
बोला - अख़्लाक़ की किताब है - तब इस ने हंस
कर यिह कहा कि आप इसी से ऐसे साहिबि अ
ख़्लाक़ हैं और अपनी राह ली

नक़्ल ३८

एक बहरा गडरिया जंगल में अपनी भेड़ें चरा
ता था - क़ज़ाकार उस की एक भली भेड़ खोई गई -
तब उस ने एक लंगड़ी भेड़ की तरफ़ देख कर
कहा कि जो वुह भेड़ मिले तो इसे मैं किसी को
ख़ुदा की राह पर दूंगा ॰ इतना कहतेही भेड़
मिली - तब वुह लंगड़ी भेड़ का कान पकड़ किसी
को देने ले चला - इस में सांहीं से एक और बहरा
आया - इस ने विस से कहा कि यिह भेड़ तू ले ॰
वुह बोला ख़ुदा की क़सम मैं ने इस की टांग नहीं

तोड़ी - ग़रज़ यही कहते कहते दोनौं क़ाज़ी के यहां गए - क़ाज़ी भी बहरा था और अपने घर में किसी से ख़फ़ा हो बैठा था - इन्हें दूर से आते देख उसने अपने जी में जाना कि शायद ये किसी का पैग़ाम लिये आते हैं ॐ यिह समझ इतना कह अपने घर भीतर भाग गया - कि उस बदज़ात की बात मैं कभी न सुनूंगा

नक़्ल ३७

किसी उमरा के दो बेटे थे - एक सख़ी दूसरा बख़ील - सख़ी तो अच्छे अच्छे जवानों को बड़े बड़े दरमाहे करके नौकर रखता और बख़ील छोटे छोटे लोगों को कम महीने पर चाकर रखता ॐ एक रोज़ उन के बाप ने इन दोनौं को किसी ग़नीम से लड़ने को भेजा - जंग में सख़ी की जीत हुई और बख़ील की हार ॐ इस बात के सुनतेही उन के बाप ने किसी अपने मुसाहिब से पूछा कि इस का क्या सबब जो एक हारा और एक जीता-

उसने जवाब दिया कि पीरमुरशिद - आपने यिह मसल नहीं सुनी - जो मानेटट्टू संग्राम तो क्यों ग्रॅ नयें ताली को दाम

नक़्ल ४०

ऐक कछुऐ और कौवे से बड़ी दोस्ती थी - काम प ड़ने से ऐक ऐक की मदद करता ॰ ऐक रोज़ किसी चिड़ी मार ने कौवे को पकड़ा तब कछुऐ ने चिड़ीमार से कहा कि तुझे इस के लेजाने से बाज़ा र में क्या मिलेगा - बोला दो पैसे - कहा जो तू इ से छोड़दे तो मैं तुझे ऐक मोती दूं - कहा अच्छा ॰ उस ने गोतः मार के मोती लादिया - पर इस ने कौवे को न छोड़ा - तब कछुऐ ने कहा कि मैं ने मो ती तो तुझे लादिया - अब इसे क्यों नहीं छोड़ता ॰ बोला ऐक मोती और लादे तो छोड़दूं नहीं तो नहीं छोड़ूंगा - इस ने कहा अच्छा तू इसे छोड़दे मैं लादेताहूं ॰ वुह बोला मैं तेरी बात का कैसे इ अतबार करूं - कहा इस ने मैं झूठ नहीं बोलता-

इस बात के सुनतेही उस ने कौवे को छोड़ दिया और इस ने दूसरा मोती ला दिया ॰ फिर यि ड़ीमार दूसरे मोती को छोटा देख बोला कि यिह मैं नलूंगा - इसी की बराबर का लादे - इस ने कहा येसा नहीं पर जो तू यिह मोती मुझे दे तो मैं इस के बराबर का वहां से देख लाऊं ॰ मारे लालच के इस ने मोती दिया - वुह ले गया: मार बैठ रहा - एक पहर के पीछे इस ने घबरा के विसे पुकारा - तब उस ने आकर ख़फ़ा हो कहा कि तू बड़ा बेवकूफ़ है जो मुझे पुकारता है - क्या तें ने यिह कहावत नहीं सुनी ॰ जोकुछ जुदा करे सो हो - लेना एक न देना दो ॰ यिह सुन यिड़ीमार निरास हो अपने घर गया

नक़्ल ४१

बनारस में एक कौवे ने किसी मकान पर कितने एक विद्यार्थियों को हिल हिल कर पढ़ते देख किसू पंडित से सुवाल किया ॰

हुकत हुकत बिद्यानथी कहा बूढे कहा बान
मैं तोहि पूछों हे सखे या कों कौन बिग्यान ः

जवाब दिया ः

आगे समद अगम्य है अपने बैठ कमान
रतन लैन कों हुकत हैं हिहकत देख्य अपान

नक़ ४२

किसी दिन सवाई जयसिंह एक मकान में बैठे ब्राह्मन खिलाते थे और दरबानों को यिह हुक्म था कि सिवाय ब्राह्मन के अंदर और कोई न आ नेपावे ः इस में एक भाट दरवाज़े पर गया और उस ने चाहा कि भीतर जाऊं पर डिवढ़ीदारों ने न जाने दिया - इस ने सबब पूछा उन्हों ने जो राजा का हुक्म था सो कह सुनाया - तब इस ने इतना राजा को लिख भेजा ः

दर्दमंद दरवाज़े ठाढ़े भीतर हैं वेदुआ ः
रस की बतियां हम जानत हैं वे बांधत हैं हुआ ः

इस बात के पढ़तेही हंसकर राजा ने सो रुपये दि

नवा भेजे - वुह ले असीस दे ख़ुशी से अपने घर
गया

नक़्ल ४३

एक बनियां हमेशः भंडसाल भरा करता - किसी
दिन विस के बड़े भाई ने आके उस से कहा कि
भैया तुझे इस में क्या नफ़ः होता होगा - कुछ
और रोज़गार क्यों नहीं करता जो ज़ियादः फ़ा
इदः हो ॰ बोला भाई साहिब - इस में भी आम
के आम गुठली के दाम होते हैं और कितना न
फ़ः होगा - उस के भाई ने कहा मैं कुछ नहीं
समझा बुझा के कहो - जवाब दिया मह नफ़ः दा
म उठाता हूं और बचता है सो बरस भर अच्छी
तरह खाता हूं ॰ यिह सुन वुह चुपकाही चला
गया

नक़्ल ४४

ईद के दिन दो ठालीबच्चे एक हथियार बन्द
और दूसरा निहत्था - मिल कर किसी उमरा के य

हां ढोलक तंबूरा साथ लिवाये मुजरे को गये और जब वहां से गाय बजाय रिझाय इनआम ले फिर आऐ तब आपस में बखरा बांटा करने के वक्त झगड़ने लगे ॐ कई एक राहगीर तमाशा देखने को आन खड़े हुऐ और उन में से एक ठठोल ने निहत्थे से कहा कि मियां तू इस से डरता नहीं इस के हाथ में तलवार है ॐ बोला कि हज़रत स लामत यिह अपने जी में कुछ और न समझे मेरे घर बटुऐ में दो रुपये धरे हैं - घर से रुपये ले चौक में जा डेढ़ रुपये की तरवार खरीद आठ आने बाड़िये को दे मझली बाड़ धरवा ला अभी सिर काट डालता हूं ॐ इस बात को सुन सब तमाशबीन हंस पड़े और उन दोनों को मिला चले गये

नक़्ल ४५

राजा सवाई जैसिंह ने मथुरा में अबदुन्नबी खां की मसजिद के मीनार की बलन्दी देखकर कहा कि इस पर से कोई कूदे तो हज़ार रुपये दूं ॐ

यिह सुन एक चौबे ने पूछा कि महाराज-जो या पै तें कूदैगो वाहि हज़ार रुपैया देउगे-कहा हां ः इतनी बात के सुनतेही वुह चौबे अपने घर जा एक बुढ़िया सो बरस की जां बलब हो रही थी उसे ले आया-उसे देखकर राजा ने कहा इसे क्यों लाए हो-बोला यही गुमटी पर सों कूदैगी हज़ार रुपैया देउ ः राजा ने कहा बुढ़िया की शर्त नहीं-जवाब दिया-महाराज आप कों बढ़ी बारी तें कहा काम-तुम्हें एक हत्या लेनी है सो लेउ और मोकों हज़ार रुपैया देउ ः इस ज़राफ़त और हाज़िर जवाबी से ख़ुश हो राजा ने उसे रुपये दिलवा दिये-वुह ले अपने घर गया

नक़्ल ४६

एक बनियां अपने घर में रात को नींद में ग़ाफ़िल पड़ा सोता था कि एक चूहा उस के पेट पर होकर इधर से उधर चला गया-वुह नींद से

आंकपड़ा और लगा चोष मार मार रोने और यिह कहने कि हाय जान गई हाय जान गई - उस के रोने की आवाज़ सुनके सब घर के लोग घिर आये और लगे पूछने कह तुझे क्या दुष है जो इतना रोता है - बोला इस घर में रह नहीं सकता - कहा क्यों - जवाब दिया एक चूहा मेरी छाती पर हो कर इस तरफ़ से उस तरफ़ चला गया ॰ लोगों ने कहा चला गया चला गया इस के वास्ते इतना रोना क्या था - बोला किसी ने सच कहा है कि - जातन लगे सोई तन जाने दूजा क्या जाने रे भाई ॰ मैं उस के जाने पर नहीं रोता - रोता इस वास्ते हूं यिह राह बुरी निकली - आज चूहा गया है कल को सांप जायगा तो मैं काहे को जीता रहूंगा

नक़्ल ४७

एक चतुरानी नौ जवान ख़ूबसूरत चुस्त चालाक बसंत ऋतु में अपनी बहनेली के यहां गई और

कुछ इधर उधर की मनलगन बातें कर रही थी कि प्यासी हूई और पानी मांगा - इस की उस मुंह बोली बहन ने कोरे कुल्हड़े में भरकर ला दिया - जो इस ने मुंह लगाकर पिया तो कुल्हड़ा होठों से लग रहा ॥ यिह खिल खिला कर हंसी और इस दोहे को पढ़ने लगी

रे माटी के कूल्हरा तोहि डारों पटकाय
होठ रचे हैं पीउ कों तू क्यों चूसे जाय

यिह दोहा सुन उस की बहनेली ने कुल्हड़े की तरफ़ से जवाब दिया

लात सही मूंकी सही उलटे सहे कुदार
इन होठन के कारने सिर पर धरे अंगार

नक़्ल ४८

एक सौदागर का गुमाश्तः कहीं से रोकड़ लिवाये चला आताथा - राह में किसी सराय के बीच उतरा कि वहां डाका आया - तब इसने वहां के रहने वालों से कहा कि भाइयो जो तुम लड़ भिड़

के इन रुपयों को डकैतों के हाथ से बचाओ तो आधे पाओ ॰ ग़रज़ उन लोगों ने जो तो कर रुपये बचाए और आधे पाए - बाक़ी रहे सो ले वुह अप ने ख़ाविन्द के पास पहुंचा - उस वक़्त उस के मुनीब ने राह का अहवाल सुन ख़ुश हो उसे एक दुशाला इनआम देकर कहा कि शाबाश तुम ने ख़ूब दानाई की ॰ उस वक़्त वही मुनासिब था - यिह मसल हम भी हमेशः बुज़ुर्गों की ज़बानी सुन्ते आए हैं कि जो धन जाता जानिये तो आधा दीजै बांट

नक़्ल ४९

किसी उमरा के यहां कोई भला आदमी कई एक महीने से आमद ओ रफ़्त करता था - एक रोज़ उस ने इस के हाल पर मिहरबान हो कर पांच सौ रुपये अपने दीवान से दिलवाए - उस ने नट खटी और अपनी बदज़ाती से टालमटाल कर के कई एक दिन लगाए तब दुख पा इस बिचारे ने सरि मजलिस कहा कि दीवानजी साहिब - भला

मानिये या बुरा हक़ बात कहने में कुछ ऐब नहीं॰ आप की वही मसल है कि दाता दे भंडारी का पेट फूले ꞉꞉ इस मसल के सुनतेही शरमंदः हो उस ने इसे उसी वक़ रुपये गिनदिये

नक़्ल ५०

किसी मकान पर कई एक तिजारतपेशः बैठे आपस में अपनी अपनी कमाई का अहवाल बयान कर रहे थे कि एक आशिकतन भूला भटका वहां जा निकला और उन की बातें सुन आह कर यिह शिअर पढ़ा

जो आए इस जहां में सो कुछ कुछ कमा चले
एक बे सलीक़ः हम हैं कि दिल भी गंवा चले

नक़्ल ५१

एक गैंगीरा किसी हकीम के यहां हिकमत की किताब पढ़ने नित आता और यिह बात कहता कि पीरमुरशिद - जो गुलाम को आप के तसद्दुक़ से इस फ़न में कुछ मुनासबत हो जायगी तो यिह

बिन मोल का ग़ुलाम आप के क़दमि मुबारक छोड़ कर कहीं न जायगा और हमेशः ख़िदमत में रहेगा ॥ ग़रज़ इसी दमबाज़ी से कई एक बरस के अरसे में तमाम किताब पढ़ सुनके वहां से ऐसा गया कि जैसे गधे के सिर से सींग गये - फिर नज़र भी न आया ॥ एक रोज़ हकीम जी ने उस के किसी दोस्त से कहा कि तुम्हारे आशना ने हम से क्या क़ौल किया था और अब दिखाई भी नहीं देता - वुह बोला हकीम साहिब क्या आप ने यिह मसल नहीं सुनी जो ऐसी बात ज़बान पर लाते हो - काम सरा दुख्य बीसरा छाड़ न देत अहीर

नक़्ल ५२

कोई शख़्स किसी पर आशिक़ था पर मारे हिजाब के अपना इश्क़ उस के आगे इज़हार न करता और जिस पै आशिक़ था वुह भी जान बूझ कर शरम से कुछ न कहता ॥ एक रोज़ वे दोनों किसी

मकान पर रात को बैठे थे कि एक परवानः शमअ़ पर आ जला - उस को जलता देख आशिक़ ने किनाये से यिह दोहा पढ़ा

आहि दई कैसी बनी अन आहत को संग
दीपक के भावें नहीं जल जल मरे पतंग

इस के जवाब में मअ़्शूक़ ने भी यिह दोहा कह सुनाया

आव पतंग निसंक जल जलत नमोड़ो अंग
पहले तो दीपक जले पाछे जले पतंग

नक़्ल ५३

अकबर बादशाह का यिह मअ़्मूल था कि हमेशः फ़क़ीर का भेष ले रात को शहर की गली गली कूचे कूचे में फिरते और जिस ग़रीब कंगाल दुखी को देखते उस का दुख दूर करते ❋ एक दिन जो निकले तो देखते क्या हैं कि कोई सौदागर बच्चो दरबाज़ः के ऊपर गोख में खड़ी रो रो बिहूर रही है - ये बोले माई टुकड़ा भेजियो - वुह रोटी

देने आई - इन्हों ने उस से पूछा तू क्यों रोती है- जवाब दिया मेरा ख़ाविन्द बारह बरस से जहाज़ ले सौदागरी को निकला है उस की कुछ ख़बर न हीं पाई इस दुख से रोती हूं ॥ इतना सुन रो टी ले दुआ दे आगे बढ़े तो देखा कि कोई रंडी रो रो पक्कीपीस रही है - उसी तरह उस से भी पूछा - उन ने कहा मेरा ख़सम चोरी को गया है उसे तीन दिन हूए न जानूं जीता है या मारा गया इस दुख से रोती हूं ॥ यिह सुन वहां सेभी चल निकले फिर देखा कि एक औरत नौजवान खिड़की में बैठी डाढ़ें मार मार रोती है - उस से पूछा तू क्यों रोती है - उन्ने कहा मेरा शौहर कम सिन है ॥ इस बात के सुनतेही बादशाह उ दास हो घर आए और दूसरे दिन दीवानि ख़ास में बैठ बीरबल की तरफ़ मुख़ातिब हो बोले - वे ती नों बिल्लांय ॥ बीरबल ने कुछ जवाब न दिया - फिर शाह ने कहा बीरबल वे तीनों बिल्लांय - बोला

हो जहांपनाह सलामत ❁ इतनी बात के सुनते ही शाहने लीली पीली आंखेंकर कहा यातो इस का बयान कर नहीं तो अभी मार डालता हूं - तू ने क्या समझ के मेरी बात का जवाब दिया - बोला ❁ एक समन्दर बनसा करे चोर नित उठ खोरी जांय ❁ बालकही से नेह लगावे वे तीनों बिलांय ❁ इस बात के सुनतेही खुश हो बादशाह ने बीरबल को निहाल कर दिया

नक़ल ५४

किसी दिन अकबर बादशाह ने लाड़लपूर का गाना सुन रीझ के एक घोड़ा दिलवाया - इस बल के दारोगः ने नटखटी कर के भला घोड़ा न दे एक बहुत बूढ़ा तुरकी दिया ऐसा कि जिस के पांसे मानन्द घड़े के थे - ये से नाख़ुश हो अपने घर आये ❁ कितने दिनों के बअ़द एक रोज़ बादशाह ने इन से कहा कि कल तुम भी मेरे साथ फ़ज़र शिकार को चलियो - ये बहुत ख़ूब कह कर रुख़सत

हो अपने मकान पर आये और दूसरे दिन चार
घड़ी रात रहे सवार हो दोनों बादशाह की
डिवढ़ी पर जा हाज़िर हूये ॥ ऐक भाई उसी
नुकरी के गले में बालूका भरा घड़ा बांध सवार हो
गया था - जों हज़रत बरामद हूये तोंही इन्हों
ने बढ़के सलाम किया - शाहने देखतेही हंस दिया
और फ़रमाया कि अबे फ़जरही फ़जर यिह
क्या सवांग बना लाये हो - बोले बलैयालेउं उलल
पड़ने के डर सों दोऊ और बोझ बराबर कर
लियौ है और हज़ूर के दारोग़: ने तो गिराने
कौ फ़िकर मऩकूलही कियौ हो ॥ इस लतीफ़े के
सुनते ही शाह ने दारोग़: को तंबीह की और
इन्हें उस के एवज़ दो घोड़े दिये

नक़्ल ५५

सूरज मल्ल के वक़्त में किसी मुसलमान ने अज़ रा
हि तमस्ख़ुर ऐक जाट से कहा - अबे जाट बे
जाट तेरे सिर पर खाट - उस ने कहा अबे मियां

वे मियां तेरे सिर पर कोल्हू - यिह बोला तुक न मिली - उस ने जवाब दिया कि तुक न मिली तो कहा भयौ अरे बोझन तो मरैगो

नक़्ल ५६

दो ज़मीदार अपने गांव से कहीं को चले जाते थे राह में एक पचास साठ बीघे अच्छी ज़मीन का क़तअ़ देख कर उन में से एक ने कहा कि भाई यिह जगह हमारे तुम्हारे हाथ लगे तो क्या करो बोला मैं तो अपने हिस्सः की ज़मीन में फुलवारी लगाऊं - कहो तुम अपनी जगह में क्या करोगे - कहा मैं अपनी गायें भैंसें चराऊंगा - इस ने कहा भला मानो या बुरा मैं तो अपने बाग़ीचे के पास न चराने दूंगा - वुह बोला तुम्हारा कुछ इजारा नहीं है मैं अपनी ज़मीन में जो चाहूंगा सो करूं गा ॥ ग़रज़ इसी तरह हुज्जा तुज्जी करके लगे हाथा पाई करने ॥ इस में कई एक राहगीर जो इन को झगड़ते देख जमअ़ होगये थे - उन्हों ने

बीच बिचाव करके इन से पूछा कि तुम क्यौं आपस में लड़ते हो इस का सबब कहो - उन्हों ने सब माजरा कह सुनाया - सुनते ही उन में से एक शख्स बोला कि भाई तुम्हारी वही मसल है - कि सूत न कपास कोली से लठा लठी

नक़्ल ५७

किसी मकान में पंडित साहूकार और सिपाही ये तीनों बैठे बहस रहे थे ः एक कहता था कि मनुष गुन से बड़ा कहलाता है और दूसरा कहता था कि नहीं धन से और तीसरा कहता था कि न - मदद गारों से आदमी बड़ा कहलाता है ः इस में कोई कवीश्वर वहां जा निकला - विन्हों ने इसे सालिस मानके कहा कि महाराज इस मुक़द्दमः में जो तुम्हारे नज़दीक सच्च हो सो अपने धर्म से कहो तब इस ने उन के जवाब में यिह सोरठा कह सुनाया

गुन तें गरुवो होत - नहि संपत न सहाय तें ः

पूनैं। चंद उदोत दुतिया की सन बन नहीं ः
यिह सुन वे तीनों चुपके होरहे

नम्ब.५८

एक रोज़ अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा
कि तू मुझे चार शख़्स ला दे - हूरबीर - काय
र - साहिबिशर्म और बेशर्म - बीरबल दूसरे
दिन भोरही एक रंडी को साथ अपने हुज़ूर में
ले गया ः शाह ने पूछा लाया - बोला ख़ुदावन्द हा
ज़िर है - यिह कह बीरबल ने उस रंडी को बाद
शाह के सोंहीं ले जा खड़ा किया - हज़रत ने
फ़रमाया अबे मैंने चार शख़्स बुलवाए थे तू एक
को लाया औरतीन कहां हैं - अर्ज़ कीजहांपनाह -
इस में चारों की सिफ़ात हैं - इरशाद किया
बयान कर - बोला कि जिस वक़्त यिह अपनी सु
सराल में रहती है मारे शरम के अच्छी तरह
गला खोलकर बोलती भी नहीं और जिस बिरयां
कहीं शादी में गालियां गाती है तो बाप भाई

शौहर ससुर और सब बिरादरी के लोग बैठे सुना करते हैं पर यिह किसी की शरम नहीं करती और जब अपने शौहर के पास बैठती है तो रात को अकेली घर के कोठे में भी नहीं जाती और कहती है मुझे जाते डर लगता है - फिर जिस वक़ किसी से इस की आंख लगती है तो आधी रात की अंधेरी में अकेला बे हथियार यार के पास निधड़क चली जाती है और चोर अकार भूत पलीद से नहीं डरती ॰ यिह बात सुन शाहने खुश हो बीरबल को इनआम दिया और फ़रमाया तू सच कहता है

नक़्ल ५७

कोई जोगी किसी जंगल में सरिराह एक पेड़ के नीचे भभूत लगाए धूनी जलाए सेली सिंगी मुद्रा पहने बाघंबर बिछाए नंगधड़ंगा आसन मारे अपने भगवान की याद में मगन बैठा भजन कर ता था कि चार मुसाफ़िर बिस राह से आए और

उसी दरख़्त के नीचे जा बैठे ः उन में से पहले एक ने उस जोगी से कहा कि आज क्या है जो तुम जूआ खेलने नहीं गये - कुछ हार आये हो जो इस बन में यिह संयोग बना कर आन बैठे हो - बोला हां बाबा सच कहता है - फिर दूसरे ने कहा तू तो कल शराब पिये शहर की गलियों में गिर ता पड़ता फिरता था - आज किस लिये यहां मकर कर आन बैठा है - जवाब दिया हां बाबा सच कहता है ः तीसरे ने कहा - तुम ने इस राह में बहुत क़ाफ़िले ग़ारत किये हैं कहो अब किस की ताक पर बैठे हो - बोला हां बाबा सच कहता है - बअद चौथे ने कहा - नाथ जी आप भगवान के ख़ास बंदों से हो कुछ मेरे हाल पर रहम करो - उसे भी यही जवाब दिया - हां बाबा सच कहता है ः ग़रज़ यिह कह सुनकर वे चारों चले गये तब एक और मुसाफ़िर जो अलग वहीं बैठा सुन ता था - उस के पास आया और आदेस कर बोला

कि नाथ जी - आपने चार आदमियों के चार सुवालों का एकही जवाब दिया - इस का क्या सबब ॰ उसने इस से भी कहा कि हां बाबा सच्च कहता है ॰ यिह बोला कि महाराज मैं विन जैसा नहीं हूं कि मुझे भी बहका दोगे - बिदून समझाऐ आप का पीछा न छोडूंगा ॰ इस बात के सुनतेही उस जोगीने कहा कि बाबा जो कोई जैसा होता है वुह दूसरे को भी वैसा समझता है - उनके कहे से मेरा क्या बिगड़ा - फ़क़ीर तो जैसे का तैसा बैठा है

नक़्ल ६०

एक रोज़ राजा बीर विक्रमाजीत के यहां चार शख़्स एक साथ चोरी के मुआमले में पकड़े गऐ राजा ने उन में से एक को पास बुला इतना कह छोड़ दिया कि तुम्हारे लाइक़ यिह काम न था और दूसरे को पांच चार गालियां दे निकाल दिया - तीसरे को दस बीस धौल जूतियां लगवा धक्के दिल वा निकलवा दिया और चौथे की नाक और कान

कटवा काला मुंह करवा गधे पर चढ़वा शहर

बदर करवाया ॥ यिह अदालत देख हर एक

दरबारी एक एक का मुंह देखने लगा ॥ उस

वक़ राजा ने उन से पूछा कि तुम्हारे दिल में क्या

है सो कहो - उन्हों ने हाथ जोड़ कर कहा कि

धर्मावतार आप ने न्याव तो समझ ही के किया हो

गा पर इस का भेद कुछ हम पर न खुला - राजा ने

हंस के कहा कि तुम इन यारों के पीछे हरकारे

लगा दो कि ये जाके क्या करते हैं इस की ख़बर

लावें - उन्हों ने सोई किया ॥ तीसरे दिन जब

हरकारे ख़बर ले हुज़ूर में आ हाज़िर हूए तब

राजा ने देखकर फ़रमाया कि उन के समाचार

लाए - जवाब दिया हां प्रथीनाथ लाए - इरशाद

किया कहो - वे दंडवत कर हाथ जोड़ बोले कि

धर्मावतार जिसे आप ने यिह कह छोड़ दिया था

कि तुम्हारे लाइक़ यिह काम नहीं था - वुह तो जा

ते ही ज़हर खा मर गया और जिसे गालियां दे

छुड़वाया था वुह शहर छोड़ कर चलागया और जो मार खाके छूटा है सो विस दिन से घर के बाहर नहीं निकला और महाराज जिस की नाक और कान काटे गये तिस का अहवाल सुनिये कि राह में गधे पर सवार चला जाता था और तमाश गीर भी दो चार सौ चारों तरफ़ से लअनत मलामत करते जाते थे और सौहीं से उस की जो रू आई - उसने उसे पास बुलाकर सब के देखते कहा कि तू घर जा कर न्हाने का पानी जल्द गरम कररख थोड़ा शहर फिरना बाक़ी है अभी फिर कर इन मूज़ियों के हाथ से छूट चला आता हूं ॥ इतनी बात के सुनते ही राजा ने उन लोगों से कहा जिन्हों ने कहा था कि धर्मावतार हम ने इस न्याव का भेद न जाना - कहो अब तो समझे- उन्हों ने अर्ज़ की कि पृथ्वीनाथ- आप का न्याव आप ही से बने दूसरे की क्या सामर्थ जो इस में दम मारे- यिह वही है जो किसी ने कहा है ॥

आगी बागी पारखी नारी और न्याव ॥
इन पांचों के गुरु है पर उपजे अंग सुभाव ॥

नक़्ल ६१

एक तालिबुल इल्म बड़ा बख़ील था - उस ने किसी दिन एक आश्ना की दअ़्वत की - खाना तो जो उस के यहां नित पकता था सोई पका पर दो अंडे खाने के वक़्त बड़े तकल्लुफ़ से उस ने दस्तर ख़्वान पै ला रख्खे और कहा कि सुनो साहिब इन अंडों से एक जोड़ा मुर्ग का होता और जोड़े से हज़ारों बच्चे पैदा होते - यिह आप की ख़ातिर है जो मैं ने अपना इतना नुक़सान किया ॥ उस का आश्ना भी एकही शख़्स था बोला कि यिह तो आप ने किया पर भला घी बिन मैं क़िस तरह खाऊंगा ॥ कहा मैं अभी ले आता हूं ज़रा सबर करो ॥ इतना कह दो पैसे और प्याला ले वुह मोदी की दूकान पर गया और उसे प्याला और दो पैसे उस के आगे रख्ख के कहा कि अच्छे से अच्छा

घी मुझे दे - वुह बोला ऐसा घी दूं कि जैसा सफ़ेद पत्थ्र ॥ इस बात के सुनते ही यिह प्याला और पैसे ले पत्थरवाले की दूकान पर गया और इस ने प्याला और पैसे दे उसे कहा कि भले से भला पत्थर मुझे दे - वुह बोला कि ऐसा साफ़ दूं कि जैसा बरफ़ ॥ यिह सुन वुह वहां से प्याला और पैसे ले बरफ़ वाले के पास गया और बोला कि बिहतर से बिहतर बरफ़ मेरे तईं दे - उस ने कहा कि ऐसा दूं कि जैसा आबि ज़ुलाल ॥ यिह वहां से भी प्याला और पैसे ही ले अपने घर आया और एक प्याला मीठे पानी का भर कर आश्ना के आगे लेगया - वुह देख कर बोला कि तुम तो घी लेने गये थे यिह क्या ले आए - जवाब दिया कि तीन निचोड़ में यिह ठहरा है - उस से यही बिहतर है - क्यों कि घी इन लोग भी मुश्बह से मुश्बह बिहि को अव्वला जानते हैं

नक़्ल ६२

ऐक बनियां अपने बेटे को ब्याहने बरात लिये श
हर से पर शहर को जाता था - राह में ऐक जं
गल मिला उस में कहीं दाएं बाएं उस का भाई
झाड़े फिरने गया-इ त्तिफ़ाक़न उसे वहां शेर खा
गया - इस में देरी जो हूई तो बनियां अपने
मन में यिह समझा कि किसी देन लेनवाले ने छा
यद मेरे भाई को बैठा रक्खा है - लगा रोज़ नामः
खाते की बही देखने - जब देखते देखते उस में
किसी का देना पाना नठहरा तब घबराके जंगल
में ढूंढने चला ॰ कितनी ऐक दूर जाय देखे
तो ऐक शेर लेटा हूआ है और इस के भाई का
हाड़ चाम आगे पड़ा है ॰ यिह देखते ही बोला
सुन तो ऊत के ऊत न तेरा म्हारे खाते में नाम न
रोज़नामः में - तू ने मेरे भाई को किस हिसाब से
मार खाया - वुह हूंकर के घुरका तब बनियां
यिह कह रोता पीटता फिर आया कि हां इस

हिसाब से खाया तो ठीक है

नक़ल ६३

चार शख़्स अपने गांव से निकले ब्राह्मन राजपूत बनियां और नाई और किसी किसान के खेत पर जा लगे गन्ने उखाड़ उखाड़ फांदिया बांधने और चूसने ॥ उस खेतवाले ने देखा और अपने जी में बिचारा कि ये चार और मैं अकेला जो कुछ कह ताहूं तो ये मुझे बिन ठोंके न रहेंगे - इस से कुछ हिकमत किया चाहिये ॥ यिह बात दिल में ठान वुह उन के पास जा राम राम कर बोला कि सुनो साहिब ब्राह्मन हमारा गुरू - राजपूत भाई बनियां महाजन - तीन आदमी के गांडे खानेका तो कुछ मुज़ायक़ः नहीं - भला इस नाई ने क्या समझके मेरे खेत में हाथ डाला इस का तुम्हीं न्याव करो ॥ यिह बात सुनकर वे चुप हो रहे तब इस ने नाई से गन्ने छीन लिये और उसे जुतिया कर निकाल दिया - फिर किसान कहने लगा कि सुनो भाई

ब्राह्मन गुरू तुम भाई हमारा तुम्हारा माल ऐक है - इस बनिये ने क्या बूझके मेरा खेत उजाड़ा- भला इस का तुम्हीं इनसाफ़ करो जो तुम हम इस के यहां से रुपये लेंगे तो क्या यिह अपना सूद छोड़ देगा ः इस बात को भी सुन वे कुछ न बोले तद तो इस ने उसे भी धोलिया के गांडे छीन निकाल दिया ः ग़रज़ इसी तरह से उस ने हर ऐक को निकाला और अपना माल बचाया ः इस बात को सुन तअ़ज्जुब कर ऐक शख़्स ने अपने दोस्त से कहा यिह क्या ग़ज़ब है कि यार चार भी पर ऐक शख़्स ग़ालिब रहे- उस ने पूछा यिह क्या बात है मुझे समझाके कहो उसने उन का माजरा कह सुनाया तब उस का आशना बोला क्या तुम ने यिह मसल नहीं सुनी जो इतना तअ़ज्जुब करते हो कि जुग फूटा और नर्द मारी गई

नक़्ल ६४

किसी राजा के यहां बिकट ख़ां नाम कलावंत

व सबब गाने बजाने के बहुत पेश हूआ - आठ पहर उस की मुसाहबत में रहे ❁ एक दिन उस राजा पर कोई ग़नीम चढ़ आया तो उसने भी लड़ने की तैयारी की और अपने रफ़ीक़ों को हथियार घोड़े बांटे - उस वक़्त बिकटय्यां से राजा ने कहा कि तुम भी सिलह ख़ाने से हथियार और इस्तबल से घोड़ा अपनी पसन्द मुवाफ़िक़ ले लो कल तुम्हें भी हमारे साथ लड़ने को चलना होगा ❁ इस बात के सुनतेही उस की जान तो सूख गई पर मारे शरम के बहुत ख़ूब कह घोड़ा और हथियार पसन्द कर किसी बहाने से वुह अपने घर आया और जोरू से कहने लगा कि इस शहर से अभी भाग चलो नहीं तो राजा के साथ कल मरने को जाना होगा ❁ उस की जोरू अक़्लमन्द थी बोली जो लड़ाई में जाता है सो बेअजल नहीं मरता - यिह कह उस ने चक्की में चने दल कर दिखाए और कहा कि देख जिस तरह इस

में दाने साबित न रह गये ऐसे लड़ाई में भी लोग बच रहे हैं - बोला जो पिस गया सो मैं हूं ॐ इस कम हिम्मती को देख उस की औरत हंहला कर बोली कि सुन जो तू ऐसे ख़ावन्द से नमक हरामी कर उस का साथ छोड़ेगा तो मैं भी तेरा साथ न दूंगी ॐ यिह सुन शरमा लो जवाब हो राजा के पास भी रही जा हाज़िर हूआ और हथियार लगा घोड़े पर सवार हो उन के साथ हो लिया - जिस वक़ मैदान में दोनों दल तुलकर लड़ने को तैयार हूए और लगा मारू बजने और गोली गोला बान दोनों ओर से चलने और इस का घोड़ा भड़कने जिस वक़ विकट ख़ां ने तो मारे डर के राजा से अर्ज़ की कि महाराज हो गिरतु हों - पर राजा समझा कि यिह कहता है मैं हरीफ़ की फ़ौज पै गिरूं - बोले ऐसा काम भी न कीजो तुम मेरे हाथी के साथ अपना घोड़ा रक्खो - दो तीन दफ़ा राजा से उस ने कहा और राजा ने

यही जवाब दिया - निदान घोड़ा उसे हनीफ़ के गोल में ले ही गया ॥ तब बिकट ख़ां ने कमर से दुपट्टा खोल फिराया - इस से उस राजा के लोग लड़ने से बाज़ रहे और इस के पास आए - कहा तू क्या पैग़ाम लाया है - बोला मुझे घोड़े से उतारो तो कुछ अर्ज़ करूं ॥ उन्हों ने इसे घोड़े से उतारा तब यिह बोला कि तुम किस लिये लड़ते हो जिस तरह की मुआमलत चाहोगे सो हमारा राजा क़बूल करेगा ॥ उस ने कहा कि दस लाख रुपये दे और अपनी बेटी हमारे बेटे को ब्याह दे यही हम चाहते हैं - वुह बोला यिह बात हमारे राजा को क़बूल है मैं इस का जवाब कल दे जाऊंगा तुम ख़ातिर जमअ रक्खो ॥ इस बात के सुनते ही ख़ुश हो उस राजा ने इसे एक भारी ख़िलअत और बहुत से रुपये दे रुख़सत किया और लड़ाई मौक़ूफ़ की ॥ दूसरे दिन भोरही यिह राजा जब सऊ खड़ा हूआ तब उस राजा

ने कहला भेजा कि कलतो तुम्हारा वकील तुम्हारी तरफ़ से दस लाख रुपये और बेटी देनी क़बूल कर गया है अब क्यों लड़ने को तैयार हूए हो - सुनते ही राजा ने फ़रमाया कि देखो कौन आदमी हमारी तरफ़ से वहां जाकर यिह बात कह आया है - उसे मेरे पास लाओ ॰ ग़रज़ तह़क़ीक़ करने के लोग बिकट्यां को हाथों हाथ राजा के सांहीं लेगए तब किसी मुसाहिब ने उससे पूछा कि तू किस के हुक्म से दस लाख रुपये और लड़की देने का इक़रार कर आया - बोला इसे हुक्म क्या चाहिये जो इस घोड़े पर चढ़ेगा सो इक़रारही कर आवेगा ॰ इस बात के सुनतेही राजा ने ख़फ़ा हो उसे निकाल दिया और बड़ा अफ़सोस किया ॰ इस में कोई मुसाहिब बोल उठा कि महाराज आप ने जो इतना अफ़सोस किया सो क्या यिह मसल नहीं सुनी

कि जिस का काम तिसी को छाजै

चोर करे तो ठंगा बाजै

नक़्ल ६५

एक शख़्स की भैंस मर गई वुह लगा रोने ॥ इस में उस के एक पड़ोसी ने आकर पूछा कि भाई तुम क्यों रोते हो - बोला मेरी भैंस मर गई जो सारे कुनबे को परवरिश करती थी - यिह बोला भाई सबर करो हमें तुम्हें काले धन से लहना नहीं उस ने पूछा तुम्हारा क्या नुक़सान हूआ - जवाब दिया मेरे भी पकाने की हांडी फूट गई ॥ इस बात के सुनते ही वुह ग़रीब हंसकर बोला कि हां भाई सच्च कहते हो

नक़्ल ६६

एक रोज़ तुलसी दास गुशाई बनारस में किसी मकान पर बैठे थे कि एक नूच्चड़ फ़क़ीर ने आके सुवाल किया - अलच्च - इस के जवाब में तुलसी दास ने यिह दोहा कह सुनाया

हमैं लच्च हमार लच्च हम हमार के बाच्च

तुलसी अलखै कहा लखै राम नाम भज नीच

इस दोहे को सुन वुह मारे शरम के लाजवाब हो चुपचाप चला गया

नक़ल ६७

किसी शहर के आमिल का बाप मरगया - वुह उस के ग़म में बहुत दिलगीर बैठाथा - शहर के सब आदमी क्या दुनियादार क्या फ़क़ीर हिंदू मुसलमान मिलकर उस के यहां मातमपुरसी को गए और बैठ कर चले आए पर चार शख़्स उस की बेक़रारी देख उन में से बैठे रहे - बेनवा बैरागी - सन्यासी और जोगी और हर एक अप ने अपने तौर की मसल कह चला आया ॥ बेनवा ने यिह मसल कही दोस्त

दौर दुनिया का दम बदम को जे

किसकी शादी ओ किस का ग़म की जे

बैरागी ने यिह

साधो या संसार में सभी बटाऊ लोग

का कौ करैं मनावनो का कौ कीजै सोग

सन्यासी ने यिह

आए हैं सो जांयगे राजा रंक फ़क़ीर

एक सिंहासन चढ़ चले दूजे बांधे जात ज़ंजीर

जोगी ने यिह - जोगी था सो उठगया आसन

रही भभूत

नक़्ल ६८

शाहजहां बादशाह के यहां कई एक पोस्तियों ने मिलकर किसी के कहे सुने से अर्ज़ी दी कि पीर मुरशिद आप के अमल में हम भूखे मरते हैं और सब चैन करते हैं - हुजूर से खाने रहने की जगह हो जाय तो हमारी जान बचे ॰ अर्ज़ी के पढ़तेही शाह ने वज़ीर से कहा कि पोस्तियों के खाने रहने का बन्दोबस्त अभी कर दो ताकि ये बिचारे किसी बात का दुख न पावें ॰ हुक्म होतेही पोस्तीख़ानः बनवा वज़ीर ने तमाम शहर के पोस्ति यों को वहां रहने को जगह दे उन का दरमाहः

कर दिया ॐ यिह ख़बर सुन सारे शहर के सुस्त कमयोर काहिल बे मिहनत के रुपये लेने के लालच से वहां आय आय पोस्तियों में नाम लिखाय लिखाय रहने लगे ॐ ग़रज़ एक साल के अरसे में कई हज़ार पोस्ती शुमार किये गये - तब पोस्ती ख़ाने के दारोग़ः ने वज़ीर से जा कहा कि ख़ुदावन्द जो इसी तरह से दरमाहा मिले जायगा तो मअ़लूम होता है कि कई बरस में सारा शहर पोस्ती होजायगा एक ही बरस में कई हज़ार जमअ़ हूए हैं ॐ वज़ीर ने जा बादशाह को ख़बर पहुंचाई - शाह ने फ़रमाया कि इसे तजवीज़ कर के देखो जो असल पोस्ती है विसे रहने दो और जो नक़ली दी है विसे निकाल दो ॐ यिह हुक्म होतेही वज़ीर ने घर आय सब की दअ़वत की और बहुतसा पोस्त पिलाया जब ख़ूब नशे में हूए तब उन्हें ख़ाने को मिठाई दी और यिह कहा कि जो कोई ख़ाने के वक़्त बदन में हाथ नलगावेगा सो हज़ार रुपये पावेगा और

अपना बदन खुजलावे सो नहीं ॰ गरज़ मिठाई खाते खाते उन के बदन में खुजलाहट हुई तब तब् तीरियों ने तो मारे लोभ के न खुजलाया पर असल पोस्ती यिह कह खुजलाने लगे कि इस एक एक घिस्से पर हज़ार हज़ार रुपये सद्के हैं ॰ वज़ीर ने उसी दिन न खुजलानेवालों को ज़याबदिया और खुजलानेवालों का दरमाहा दून किया

नक़् ६९

एक कड़ोड़पती बड़ा बख़ील था - उस के घर में कुछ शादी आई तो उस ने अपने बावरची और बकावलों को बुलाकर कहा कि एक सेर की सोलह रोटी पकाओ और दो के आगे एक रखो - इस में खावे सो खावे बचे सो बांध लेजावे हरगाह किसी को मयस्सर न करो ॰ वे बोले बहुत ख़ूब ॰ यिह बात सुन कर कोई उन का आशना बोला कि भाई साहिब यिह शादी या लूटा लूट - जवाब दिय

बंद ऐ दरगाह जब करते हैं तब लूटा लूट ही करते हैं - तुमने यिह मसल नहीं सुनी - क्या ले गये शेरशाह क्या लेगये सलीम शाह दुनिया में सख़ी और सूम का नाम ही रहजाता है

नक़्ल ७०

मुल्क बिराने साल के खानेवाले दिल्ली के बांके मशहूर हैं ॐ ऐक दिन कोई बांका किसी हलवाई की दुकान के सांहीं जा खड़ा हूआ और लगा उस की मिठाई की तरफ़ आंख फाड़ फाड़ देखने ॐ वुह बोला देखते क्या हो साहिब - इस ने ऐक मिठाई की तरफ़ इशारः करके पूछा यिह क्या है ॐ उस ने कहा खाजा - इतनी बात के सुनते ही यिह हट थाल उठा उस की सब मिठाई खागया और लगा कुछ नक़द मांगने और कहने कि मैंने तेरा हुक्म बजा दिया - इस का मिहनताना मुझे दे ॐ निदान धमका धमका के उस ने ऐक रुपया लेही के छोड़ा तब कई ऐक आदमियों ने आके हलवाई

से पूछा कि मियां यिह क्या मुआमलः था कह तो सही - बोला साहिब कहूं क्या अपना सिर यिह वही मसल है जो कानों सुने थे सो आंखों देखो कि उलटा चोर कुतवाले डांडे

नक़्ल ७१

एक गुसांई अपने चेले को साथ ले किसी शहर से तीरथ करने को निकला और चला चला एक गांव में पहुंचा - तब उस ने चेले के हाथ बाज़ार से कुछ खाने पीने का सरंजाम मंगवाया ॰ चेला जो बाज़ार में जाके देखे तो सब जिन्स एक ही भाव है - वुह मारे खुशी के घी चीनी और मैदा लेआ या और मलीदा बना जल्दी से गुरू के आगे ला रख्या ॰ गुरू ने पूछा बाबा आज क्या है जो तू ने चूरमा बनाया - बोला महाराज यहां सब चीज़ एक ही भाव है - इस लिये मैं ने मलीदाही किया - यिह सुन गुसांई ने चेले से पूछा इस गांव का नाम क्या है - बोला हरिभूम पुर - कहा यहां से

अभी चलोनहीं तो क्याजानिये किस बला में पड़ें -
चेले ने जवाब दिया मैं तो इस शहर से
नजाऊंगा आप का जी चाहे तो तीरथ यात्रा
कर आइये ॰ निदान गुसांई अकेला गया और
चेला वहां रहा ॰ बरस एक में वुह थापीकर
ऐसा मोटा हुआ कि पहचाना नजाता था ॰ एक
रोज़ कोई चोर चोरी करते पकड़ा गया - राजा
के यहां से उसे सूलीदेनेका हुक्म हुआ ॰ कुतवाल
उस चोर को सूली के पास लेजा कर क्या देखता
है कि चोर दुबला और सूली मोटी है - यिह
खबर राजा से जा कही - राजा ने फरमाया कि
किसी मोटे को पकड़ कर सूली दो और चोर को
छोड़ दो ॰ राजा का हुक्म होतेही कुतवाल उस गु
सांई के चेले को सब से मोटा देख पकड़ कर सूली
के पास लेगया और चाहे कि उसे सूली पर च
ढ़ावे कि इस में ख़ुदा का चाहा वुह गुसांई भी
वहां आ पहुंचा और अपने चेले को सूली देते

देख बोला ओ बाबा कुतवाल तू इसे सूली न दे - इसके बदले मुझे दे ॥ कुतवाल ने पूछा क्यों - गुसांई ने कहा इस सूली पर जो चढ़ेगा सो स्वर्ग का राजा होगा - इसी दिन के लिये मैं बारह बरस की उमर से जोग कमाता था सो दिन भगवान ने आज दिखाया और मेरा मनोरथ पूरा किया ॥ कुतवाल बोला तुझे क्या सूली दूंगा मैं हीं इस सूली पर चढूंगा - कुतवाल के सूली चढ़ने की खबर पाकर सूबः ने कहा तू न चढ़ मैं चढूंगा - सूबः की खबर पाकर दीवान ने कहा मैं चढूंगा ॥ आख़िर इसी तरह बहसा बहसी करते वहां का राजा ही सूली पर चढ़ मरा तब उस गुसांईं ने चेले से कहा क्यों मैं तुझे न कहता था कि यहां न रह अबभी रहेगा - बोला महाराज मेरी वही मसल है कि भूले बनिये भेड़ खाईं फेर खाय तो राम दुहाई ॥ यिह कह वुह उसी वक़्त गुरू के साथ वहां से निकल खड़ा हूआ

नक़ल ७२

ऐक सिपाही लिख्या पढ़ा दुनियादारी के कारोबा
र से ख़फ़ा होकर फ़क़ीर हो गया और लगा
मुल्क बमुल्क फिरने ॰ किसी शहर के दरवाज़े की
ऊपरली चौखट में कुछ लिख्या था सो लगा बांचने
इस में उस ने ऐक कोने में लिख्या देख्या कि हिम्मति
मरदां मददि ख़ुदा - इस इबारत को पड़तेही
ख़फ़ा हो बोला कि जिस शहर के दरवाज़े पर
यिह झूठ लिख्या है उस के अन्दर न जानिये क्या
कुछ होगा ॰ यिह कह शहर में न जा उलटा
फिरा और कितनी ऐक दूर जा आपही आप
सोचा कि मैं ने बिना आज़माऐ किसी के लिखे को
झूठ कहा यिह बड़ी बेइनसाफ़ी की ॰ इतना
समझ फिर फिरा और यिह इरादः कर बोरि
या बिछा उसी दरवाज़े में जा बैठा कि इस शहर
के बादशाह की बेटी को मैं ब्याहूंगा - इस में उसे
वहां तीन दिन बिन दाना पानी के गुज़रे - दरमि

खान इस के उस ने न किसू से बात कही न कुछ खाया बल्कि शहर के लोगों ने खिलाने पिलानेका बहुत क़सद किया पर इस ने उन्हें कुछ जवाबही न दिया ॥ यिह ख़बर वहां के बादशाह को पहंची - शाह ने वज़ीर को बुलाकर फ़रमाया कि इस वक़्त तू जाके फ़कीर को जो मांगे सो देकर खिला पिला रुख़्सत कर आ ॥ शाह के फ़रमाते ही वज़ीर ने फ़कीर से जाके कहा कि शाह साहिब हुज़ूर का हुक्म मुझे यों है कि जो फ़कीर का सुवाल हो सो पूरा कर आ - जो आप को मतलब है सो फ़रमाइये बन्दः ला हाज़िर करे ॥ फ़कीर ने कहा मैं बादशाह की बेटी से शादी करूंगा तू मुझे ला दे सिवाय इस के मुझे और कुछ नहीं चाहिये ॥ इस बात के सुनतेही वज़ीर लाजवाब हो फिरकर बादशाह के पास पहुंचा - शाह ने कहा क्यों फ़कीर को रुख़्सत कर आया - अर्ज़ की जहां पनाह जो फ़कीर ने बात कही है तकसीर मुआफ़

मुताम ज़बानपर नहीं ला सकता - हज़रत ने फ़रमाया कि लिख कर दे - इस ने उन के फ़रमाने से उस का सुवाल लिख कर गुज़राना - शाह ने सोच समझके कहा कि कुछ मुज़ायक़ः नहीं उस से कहो सवा सेर अन बींधे मोती लेआ तेरी शादी शाहज़ादी से होगी - बादशाहों के यहां यिह रस्म है कि सवासेर अनबींधे मोतियों से शाहर दुलहन की गोद भरे ःः वज़ीर ने फिर जा फ़क़ीर से बादशाह की कही बात कही - वुह बहुत ख़ूब कह बोरिया बधना बांध मोती लेनें समंदर की तरफ़ गया और वज़ीर शाह के पास आया - उस वक़्त शाह ने फ़रमाया कि जो वुह फ़क़ीर साहिबि कमाल होगा तो मोती लावेगा नहीं आप ही चला जावेगा और जो साहिबि करामात है तो उसे बेटी देने में हमें कुछ नंग नहीं क्यों कि जिस का मतलब: हम से अटला है - वुह जिसे चाहे बात की बात में बादशाहत बख़्श दे ःः अलकिस्सः

वुह फ़क़ीर समन्दर के किनारे पहुंच कमर बांध बधना हाथ में ले लगा पानी उलीचने - जब दिन रात उलीचते उलीचते उसे चौबीस पहर गुज़रे तब समंदर ने आदमी की सूरत बन आन के पूछा कि फ़क़ीर तू क्यों दरया का पानी निकाल निकाल फेंकता है - बोला पानी उलीच के सवासेर मोती लूंगा - जवाब दिया तुझे सवा सेर मोती मिलें तब तो पानी न उलीचेगा - कहा नहीं - बोला आंख मूंद मैं तुझे मोती देता हूं इस ने आंख बंद की उस ने बहुत ही बड़े बड़े सवा सेर कोरे मोती ला इसके हाथ दिये - यिह ले दुआ दे फिर उसी दरवाज़े में आ बैठा - बादशाह को ख़बर हुई - शाह ने वज़ीर को भेज उसे हुज़ूर में बुलवाया और तअज़ीम तवाज़ुअ कर मसनद पर बिठाया॥ ग़रज़ जब शाहज़ादी को ला उस के साम्हने खड़ा किया तब फ़क़ीर ने मोती की पोटली झोली से निकाल इतना कह उस के हाथ दी कि मैना के

इस बात के सुनतेही बादशाह ने दांतों में उंगली दे कहा - शाह साहिब तुम ने क्या कहा - बोला बाबा सच कहा - फिर बादशाह ने पूछा कि तुम्हारा सुवाल क्या था - जवाब दिया बाबा सुवाल जवाब कुछ न था फ़क़ीर को एक बात का इम्तिहान करना मनज़ूर था सो किया - तेरे शहर के दरवाज़े पर लिख्खा है कि हिम्मति मरदां मददि ख़ुदा सो फ़क़ीर के गुमान में झूठ आया था सो नहीं किसी ने सच लिख्खा है ॰ इतना कह फ़क़ीर वहां से रवानः हुआ

नक़्ल ७३

एक कायथ ने गाने बजाने की सुहबत में किसी गवैये से यिह शिअ़र सुना - इ़श्क़ क्या शै है किसी कामिल से पूछा चाहिये - तभी से वुह साहिबि कमाल की तलाश में था कि एक गुसांईं इसे मिला इसने दंडवत कर उस से पूछा कि महाराज इ़श्क़ क्या शै है मुझे दया कर बताइये ॰ इस की बात

सुन उस ने कहा बाबा मैं ने तो अपने गुरु देव के मुख से यें सुना है

इश्क़ उसी की झलक है जों सूरज की धूप
जहां इश्क़ तहां आप है क़ादिर नादिर रूप

नक़्ल ७४

एक दिन आलमगीर बादशाह को किसी ने अरज़ी दी कि जहांपनाह आप की बादशाहत में दल्लाल दिन धौले बीच बाज़ार के रऐयत को लूटते हैं - माल किसी का ले कोई वे दरमियान दो आने रुपया लेते हैं ः अरज़ी के पढ़ते ही बादशाह ने सारे शहर के दल्लालें को पकड़वा मंगवाया और पूछा कि तुम किस बात की कौड़ी खातेहो - अर्ज़ की कि जहांपनाह बाज़ार में कोई चीज़ आवे पहले हम उस का मोल तोल कर देतेहैं तब ख़रीदार लेते हैं - इसी बात की कमाई खाते हैं ः शाह ने फ़रमाया हमारा मोल तोल कर दो तो तो ख़ैर नहीं तो सब के शहर से निकाल दूंगा ः इतनी

बात के सुनतेही उन में जो सौधनी था सो बांट कांटा ले आगे बढ़ बैठा और लगा इधर उधर निकती में बांट डाल तोल ने - इस में कुछ देर जो हुई तो बादशाह ने कहा कहता क्यों नहीं घड़ी घड़ी तोलता क्या है - उस ने हाथ बांध खड़े हो जवाब दिया कि पीर मुरशिद आप तोल में तो जितने सब आदमी हैं तितनेही हो पर मोल मैं नहीं कहसकता क्यों कि एक रती मुझे नहीं मिलती जो रती हाथ लगती तो वुह भी कहदेता ॥ इस लतीफ़े के सुनते ही बादशाह ने उन सब को पान दे यिह कह छोड़ दिया कि दल्लाली खाना तुम्हा रा हक़ है शौक़ से खाओ और अर्ज़ी देनेवाले को निकाल दिया

नक़्ल ७५

एक मथुरा का चौबे कहीं बैल पर सवार पूरियां खाता चला जाता था - किसी कान्हकुब्ज पंडित ने देखकर तंज़न की राह से पूछा कि चौबे जी तुम

जो चौक में नबैठ बैल पर बैठे पूरियां खाते जाते हो सो इस का प्रमान क्या है - जवाब दिया कि प्रसिद्ध कों प्रमान कछु नाहीं चाहियतु - बोला सो क्या - उस ने कहा कि चौका याही के मार्ग सों निकसो है ॰ इस बात के सुनते ही वुह पंडित हंस कर रहगया

नक़्ल ७९

एक सिपाही बड़ा जुवारी था जब जीतता तब मारे खुशी के ऐसा ग़ाफ़िल हो जाता कि कोई उस के पहनने के कपड़े भी उतार लेता तौभी उसे मअ़्लूम नहोता - इसी उम्मेद से दस पांच शुहदे हरवक़्त उसके साथ लगे रहते और जब क़ाबू पाते तब उस का माल उड़ाते ॰ एक रोज़ वुह किसी ग़ैर महफ़िल में जुवा खेलने को गया और लगा जीत जीत रुपये अपने आगे से पीछे खिसकाने और उसके साथ के लुकंदरे लगे उड़ाने - इस में किसी ने देखकर एक से कहा कि देखो किसी की कौड़ी

कोई उड़ावे- दूसरे ने जवाब दिया क्या तुम ने यिह मसल नहीं सुनी जो तअ़ज्जुब करते हो कि

ः अंधी पीसे कुत्ता खाय ः

ः पापी का माल अकारथ जाय ः

शाह जहां बादशाह ने दीवान ख़ास से ले क़िल़े के सदर दरवाज़े तक एक रस्सा बंधवा दिया था और उस में घंटालिआं गुंधवा छोर उस का बीच बाज़ार में डलवा दिया था -इस वास्ते कि जो कोई फ़रयादी आवे सो उस रस्से को खैंचे - घंटालियां बाजें और फ़रयादी की फ़रयाद हुज़ूर में बे वसीले पहुंचे ः एक रोज़ किसी सक़्क़े का बैल मरी भरी पखाल उस रस्से के पास आन कर खड़ा हूआ - सक़्क़ा किसी के यहां मशक डाल ने गया था बैल ने रस्से से सिर खुजलाया उस के सींग का झटका जो लगा एक बारगी सब घंटालियां बाज उठीं - सुन्ते ही शाह ने फ़रमाया देखो कौन है लोगों ने झट ख़बर दी कि पीरमुर्शिद और तो

कोई नहीं एक बिहिश्ती का बैल है - हुक्म किया कि उसे उसके मालिक समेत लेआओ - लोग फ़ौरन लेगए - शाह ने फ़रमाया कि इस की पखाल का पानी तोलो कि कितना है - तोल कर अर्ज़ की कि जहां पनाह साढ़े पांच मन है - सुनते ही बादशाह ने हुक्म किया कि आज से साढ़े तीन मन पानी से ज़ियादः शहर में कोई पखाल न बनावे ः उसी वक़्त मनादी फिरगई - तभी से साढ़े तीन मन पानी से ज़ियादः पखाल नहीं बनती

नक़्ल ७८

दो दिल्ली के बांके बिराने माल के उड़ाने खाने वाले किसी मकान से यिह मनसूबः करके उठे कि आज बाज़ार में चलकर बिन कौड़ी पैसे मुफ़्त की मिठाई खाया चाहिये और आगे पीछे हो बाज़ार में पहुंचे ः एक तो जाते ही रुपये की मिठाई तुलवा लगा हलवाई की दूकान पर बैठ खाने

और दूसरे ने उसी हलवाई से आठ आने की मिठाई और अधेली के टके ले अपनी राह ली। हलवाई ने दौड़कर उस का दामन पकड़ा और कहा मेरा रुपया दो - वुह बोला मैं दे चुका हूं - इस में दोनों से रद्द बदल होने लगी और बहुत से लोग जमअ होगए तब उस बांके ने कहा कि मैं ने एक भले आदमी के देखते इसे रुपया दिया है न माने यलनक पुछवादूं - लोगों ने कहा अच्छा तो कहता है तू दूकान पर क्यों नहीं ले जाता ॥ लोगों के कहे सुने से हलवाई ने दूकान पर जा उस मिठाई खानेवाले से पूछा कि मियां साहिब आप सच कहिये इसने मुझे रुपया कब दिया है - वुह बोला अबे इन्हों ने तो रुपया मेरे देखते दिया है पर कहीं मेरा रुपया न भूल जैयो ॥ यिह कह वे दोनों उसे अहमक़ बना मिठाई खा चले गये और वुह बियारा तो हौंसकर बैठरहा

नक़्ल ७९

किसी दिन तुलसीदास गुसांई कितने ऐक आद मियों के बीच कहीं बैठे ज्ञान चरचा करतेथे - इस में उस राह से किसी की बरात आनिकली - उस के बाजे की आवाज़ सुन सबके मन दुखित हुये तब तुलसी दास हंसे - उन को हंसता देख विन में से किसी ने पूछा - महाराज आप क्या देख कर हंसे - जबाबदिया दुनया की भूल देखके - बोला सो क्या - उत्तरदिया

फूले फूले फिरत हैं आज हमारौ ब्याह
तुलसी गाय बजाय के देत काठ में पाय

नक़्ल ८०

ऐक बड़ा सौदागर किसी साहिब कमाल फ़क़ीरके यहां जाकर मुरीद हूआ और पीर की ख़िदमत में आठों पहर हाज़िर रहने लगा ॐ ख़ुदा का याहा छ महीने के अरसे में उस का ऐसा काम बिगड़ा कि खाने पीने को भी कुछ पास नरहा ॐ

ऐक रोज़ पीर ने इसे उदास देख कहा कि बाबा क्या तूने यिह मसल भी नहीं सुनी जो इतना फ़िक्र करता है -

अलहदाद करता की बातें क्या नकरंता क्या नकरे हाथी मार गर्द में डारे अदना के सिर छत्र धरे रीते भरे भरे दुलकावे मिहर करे तो फेर भरे

नक़्ल ८१

ऐक रोज़ अकबर बादशाह के रूबरू किसी मुग़ल ने अज़ राहि ज़राफ़त राजा टोडर मल से पूछा कि राजा साहिब तुम्हारे यहां मल लफ़ज़ के क्या मअ़ने हैं - वोंहीं समझ कर राजा ने जवाब दिया कि मिरज़ा साहिब जो लफ़ज़ बेग के मअ़ने हैं - सोई मल के हैं ॰ इतनी बातके सुनते ही वुह मुग़ल बहुत शरमिन्दः हूआ ॰ ख़ुलासः इस का यिह है कि संस्कृत में ये दोनों नाम गूही के हैं

नक़्ल ८२

किसी मकान पर कोई मुल्ला बैठा लड़के पढ़ाता था

कि एक लड़के के बाप ने आकर उसे उलहना दिया - मियां साहिब मेरे बेटे को आप न कुछ न तरबियत किया देखो अबतक छोकरों के साथ वुह खेलता फिरता है और मेरा कहा नहीं मानता ॐ इतनी बात के सुन्ते ही मियांजी ख़फ़ा होकर बोला कि हां साहिब नेकी बरबाद गुनह लाज़िम मैं ने एक बरस मिहनत मशक़्क़त कर लिखा पढ़ा गधे से आदमी बनाया और तुम ने यिह बात कही अब मुझे तुम से कुछ लेने पाने की उमेद बाक़ी न रही ॐ यिह यास का कलिमः सुनकर लड़के का बाप तो मियांजी को बहुतसी तसल्ली देके चला गया पर एक धोबी और धोबिन बड़े दौलत मंद जिन्हों ने मियांजी की ज़बानी यिह बात रस्ते में खड़े हो के सुनी थी कि मैं ने तुम्हारे लड़के को बरस दिन में लिखा पढ़ा गधे से आदमी किया - वे दोनों जोरू ख़सम आ मौजूद हुए और हाथ जोड़ कर बोले कि मियांजी साहिब जितने रुपये

आहिये लीजे और मेरे भी गधे को आदमी बना दीजे ॰ मुल्ला ने उन दोनों की बात सुन के दिल में बिचारा कि ये हिये के अंधे मत के हीने गांठ के पूरे मेरी क़िसमत से आन मिले हैं - इन से रुपये क्यों नहीं लेता - यिह समझ इस्ने उन से कहा हज़ार रुपये दो और गधे को बांध जाओ - एक बरस बअ़द आकर लेजाइयो ॰ इस बात के सुनते ही वे झट तोड़ा दे गधा बांध गये और एक बरस बअ़द फिर आन मौजूद हुए - उन को देखते ही मियांजी ने कहा कि दो दिन पहले आते तो उसे पाते अब तो वुह जाके जौनपुर का क़ाज़ी हुआ ॰ उन्हों ने पूछा कि अब हम उसे क्योंकर पावें मियांजी ने कहा कि तुम उस के बांधने की रस्सी और दाना खाने का तंदेला ले जाके सौंहीं खड़े हो दिखलाओ जब वुह पहचान के तुम्हें पास बुलावे तब तुम निराले लेजाके सब अहवाल कहियो - अपना अहवाल सुनकर वुह

तुम्हें बहुतेरा डरावेगा पर तुम न डरियो और कहियो कि जो तुम हमारी बात न मानों तो यस कर मियांजी से पूछलो ꙰ ग़रज़ वे दोनों जाम पर गये और उसी तरह करने लगे तब क़ाज़ी ने इन दोनों को पास बुलाकर पूछा कि तुम यिह क्या करते हो - बोले निराले चलो तो इस का अहवाल कहें ꙰ क़ाज़ी उन्हें निराले लेगया फिर इन्हों ने सब अहवाल कह सुनाया - क़ाज़ी ने दरयाफ़्त किया कि किसी शख़्स ने इन्हें बहकायाहै इस से इन की बात बिन क़बूल किये किसी तरह मेरा पीछा नछोड़ेंगे - यों समझ क़ाज़ी ने कहा जो तुम ने कहा सो सब सच पर अब तुम हम से क्या चाहते हो - ये बोले हम बे औलाद हैं हमारे माल असबाब के वारिस होके मरने से मिट्टी दीजो यही हम चाहते हैं ꙰ आख़िर माने शरमके क़ाज़ी ने उन की बात क़बूल की इस लिये कि कोई और नसुने

नक़्ल ८३

ऐक क्षत्री दुनिया से बेज़ार होके किसी नानक पंथी फ़कीर का जाके चेला हूआ ॰ फिर उसने ऐक दिन पीछे ऐक रोज़ उस ने गुरू से कहा कि महाराज मेरा जी चाहता है जो आप की आज्ञा पाऊं तो पृथ्वी प्रदक्षिना कर आऊं - गुरू ने कहा बहुत अच्छा ॰ इतनी बातके सुन्ते ही वुह दंडवत कर बिदा हूआ और लगा मुल्क ब मुल्क फिरने - जिस मुल्क में गया वहां उस ने हर मुल्क का आदमी देखा तो हैरान हूआ - निदान कितने महीने में फिरकर गुरू के पास आया और तअ़ज्जुब कर पूछा कि महाराज यिह क्या आश्चर्य है जो ऐक मुल्क में आदमी पैदा होय और दूसरे में जा कर बसे - गुरू बोला कि बाबा तू जो इतना अचंभा करता है सो क्या तू ने यिह दोहा नहीं सुना

कित काशी कित काशमीर कित खुरासान गुजरात

परस्तराम या जीव की परा लवध से जात

नक़ल ८४

किसी मकानके बीच पांच सात सिपाही बैठे आपस में डींग मार रहे थे - कोई कहता था मैं ने चार घाव खाये और कोई कहता था पांच ॥ ग़रज़ हर एक ने अपने अपने लड़ने और ज़ख्म खाने का अह़वाल बयान किया ॥ एक बूढ़ा ठठोल उनके पास बैठा था बोला कि मियां जवानी में हम भी सैकड़ों लड़ाइयां लड़े और हम ने भी हज़ारों ज़ख्म खाये ऐसे कि कहीं बदन पर तिल धरने की जगह बाक़ी नहींरही - हमारे आगे अब कोई क्या लड़ेगा और क्या ज़ख्म खायगा ॥ इतनी बात के सुनते ही उन में से एक जवान ख़फ़ा हो कर बोला - बड़े मियां कपड़े तो उतारो देखें तुम ने कहां कहां घाव खाये हैं ॥ वुह हंसके बोला मियां गबरू न वुह ज़माना रहा न वे दिन रहे न वुह जवानी रही न वुह तैयारी रही न वुह जिस्मही

गहा अब क्या देखोगे - इतना कह अपना हूआ

नक़्ल ८५

किसी मुनशी के पास एक बाहर का सैयद नौकर हूआ - एक रोज़ उस का ख़िदमतगार हाज़िर नथा - उस ने इस से कहा कि आज मेरा आदमी हाज़िर नहीं है तुम मेरे साथ दरबार चलो - कहा बहुत ख़ूब - इस ने उसे चार पैसे देके कहा कि सारे दिन दरबार में रहना होगा तुम इनके पान लेके चार गिलौरी लगवा लाओ जब मैं इशारः करूं तब दो ख़ीली दीजो - मैं आगे जा ता हूं तुम लेकर जल्द आओ ॥ यिह कह वुह तो दरबार में जा बैठा और इस ने अपने दिल में बिचारा कि चार पैसे के पान से तो मियां का पेट न भरेगा इससे बिहतर है कि चार पैसे की चार रोटी लेचलूं जो मियां पेट भर खायगा ॥ यिह मन में ठान चार पैसे की चार रोटी ले रूमाल में बांध बगल में दबा मियांके सोंहीं जा

खड़ा हुआ ॰ मुनशी ने इसे देखते ही जों इशा
रः कर हाथबढ़ाया तों उस ने रूमाल से दो नोटी
खोल उसके हाथ दीं - वुह देखते ही हकाबका
हो लगा इस की तरफ़ देखने - उसके तौर बिगड़े
देख यिह बोला भौंडी तरह दीदे फाड़ फाड़ देखै
से के मैं नहीं खाई - दो और धरी हैं ॰ यिह सुन
वुह शरमिंदः हो अपने दिल में कहने लगा कि
किसी ने सच कहा है कि अनाड़ी का सौदा बारह
बाट ।

नक़्ल ८६

एक ज़मींदार के दो बेटे - पर उन दोनों में
हमेशः अनबनाव रहता एक एक को न देख सकता
जब उन का बाप मरगया तब वे दोनों आपस में
लड़ने लगे - निदान बड़े भाई ने छोटे को ज़मीं
दारी से बेदख़ल कर मारके निकाल दिया तब
वुह किसी और बड़े ज़मींदार को अपने बड़े भाई
पर चढ़ा लाया - उस ने आते ही खड़ी सवारी

उसे मार लिया और सारी ज़मींदारी को अपने कब्ज़े में किया - जो मज़ा लाया था बिसे कुछ खाने को कर दिया ❋ यिह माजरा देख किसी ने तुल सी दास गुसांईं के आगे जाके कहा कि महाराज दुनया के आराम के लिये और चंद रोज़ की ज़िंद गी के वास्ते उस ने भाई को मरवाया और दीन को दुनया को गंवाया - इस में उस के हाथ क्या आया जब भाई भाई से यिह सुलूक करे तब दूसरे से कोई क्या तवक्कुअ़ रखे ❋ तुलसीदास जी बोले कि इस बात का अचरज मत करो इसे और भी ठौर कहा है -

बधिक बध्यौ मृग बानतें रुधरा दियौ बताय
अति हित अन हित होतु है तुलसी दुरदिन पाय

नक़ल ८७

एक रोज़ किसी हबशी ने राह में दरपन पड़ा पाया हाथ में ले जो इस ने उस में देखा तो इसे अपने सिहरे का अकस नज़र आया तब लो हौल

घिज़ा तुब्रत इह्लाबिल्लाह पढ़ आरसी पर थूक यिह कह फेंक दिया कि जब ऐसा बुरा मुंह है तभी कोई रस्ते में डाल गया है

नक़्ल ८८

अकबर बादशाह के रूबरू एक रोज़ मियां तान सेन ने सूरदास का यिह बिसनपद गाया - जसुदा बार बार यिह भाखै - है कोई ब्रज में हितू हमारो चलत गुपालहि राखै ॥ शाह ने इस के मअने पूछे - मियां ने कहा जसुदा घड़ी घड़ी यिह कहे है - है कोई ब्रज में दोस्त हमारा जो चलते हूए गुपाल को रक्खे ॥ मियां तो गाय समझाय चले गए - इस में आए बीरबल - हज़रत ने उन से भी उस का अर्थ पूछा - बीरबल बोले पीर ओ मुरशिद बार कहते हैं दरवाज़े को सो जसुदा दरवाज़ः दरवाज़ः यिह कहती है कि है कोई ब्रज में दोस्त हमारा जो गोपाल को नजाने दे ॥ इतने में राजा टोडरमल आए हज़रत ने उन

से भी मअ़्ने पूछे - कहा हज़रत सलामत जसुदा

कृष्ण की मा - बारि कहते हैं पानी को और दरवाज़े

को सो पानी का दरवाज़ः हूआ घाट - इस से

मअ़्ने ये हूए कि जसुदा घाट घाट यिह कहती

है कि है कोई ब्रज में दोस्त हमारा जो गोपाल

को चलने से बारि रक्खे ॐ इस दरमियान आए

मुल्ला फ़ैज़ी- बादशाह ने उनसे भी उस के मअ़्ने

पूछे - जवाब दिया जहांपनाह सलामत बार व

मअ़्नीए आब औ दर - यहां आब से मुराद है

आंसू और दर से मुराद है आंख - इस से

मअ़्ने ये निकले कि जसुदा रोकर यिह कहती है

कि है कोई ब्रज में दोस्त हमारा जो गोपाल को

नजाने दे ॐ इस अरसः में आए नव्वाब ख़ान ख़ा

नान - शाह ने उन से भी उस के मअ़्ने पूछे

तब नव्वाब ने अ़र्ज़ की कि क़िबलए आलम इस

बिसनपद के मअ़्ने किसी और ने भी कहे हैं ॐ

इस बात के सुनते ही जिस जिस ने जो जो मअ़्ने

कहे थे हज़रत ने कह सुनाए तब नव्वाब ने कहा जहां पनाह ये तो उस बिसनपद के मअ़ने नहीं पर हां हर एक ने अपने दिल का ख़ियाल बयान किया ॰ शाह ने फ़रमाया सो क्या - बोला वुह बियाना कलावंत जैसे एक नोम तोम लफ़ज़ को घड़ी घड़ी कहता है उस के दिल में यही ख़ियाल बंधा कि जसुदा भी घड़ी घड़ी कहती है और बीरबल ज़ात का ब्राह्मन दर दर का फिरनेवाला उस के भी दिल में यही ख़ियाल बंधा कि जसुदा दर दर कहती है और टोडरमल मुतसुद्दी उस के ख़ियाल ने यही बन्दिश बांधी कि जसुदा घाट घाट कहती है और फ़ैज़ी शाइर उसे सिवाय रोने के और मज़मून न सूझा - इस से उस के ख़ियाल में आया कि जसुदा रोरो कहती है ॰ यिह बात सुनकर शाह ने फ़रमाया कि भला अब तुम कहो उस के क्या मअ़ने हैं - अ़र्ज़ की कि जहांपनाह बार कहते हैं बाल को सो जसुदा का

बोल बोल यिह कहता है कि है कोई ब्रज में दोस्त हमारा जो गोपाल का चलना मौकूफ़ करे ॥ मजनः के सुन्तेही शाह ने खुश हो सबकी दाद दी और बसबाति ज़बान ब्रजकी निहायत तारीफ़ की

नक़ल ६७

किसी राजा की सभा में एक कवि जाके चुप चाप बैठरहा - इस में कोई राजसभा में से बोला कि राज क्या है जो कविजी तुम मौनगहे बैठे हो ॥ इसने उस की बात का उत्तर तो न दिया पर यिह दोहा पढ़ा

अतिका भला न बरसना अतिकी भली न धुप्प
अतिका भला न बोलना अतिकी भली न चुप्प

इस के सुन्ते ही उस ने भी इस दोहे को पढ़ सुनाया

कौन चहै है बरसना कौन चहै है धुप्प
कौन चहै है बोलना कौन चहै है चुप्प

फिर कवि ने यिह दोहा कह सुनाया

माखी आहे बनसना धोबी आहे धुप
साहजो आहे बेलनना योन जो आहे सुप

नक़्ल ९०

कोई कायथ हमेशः अपने बेटे को समझाता और यिह कहता कि बाबा जान दुनिया बुरी जगह है - करू तो डर न करू तोभी डर - उस का बेटा सुन कर यिह जवाब देता लालाजी बुरी बुरेके वास्ते है - कर तो डर नकर तो न डर ॥ गरज़ जब तब उन दोनों में यही गुफ़्तगू होती ॥ एक रोज़ उस ने अपना दुह घोड़ा सवारी को मंगवाया कि जिस पर कभी सवार न हूआ था और खिला पिला के खूब तयार किया था - घोड़े के आते ही बाप ने बेटे से कहा - बाबाजान इस पर तुम सवार हो हम देखें - बेटे ने भी यही कहा - - निदान बहुत सी कहा सुनी के बअ़द उस का बाप ही सवार हूआ और बेटा पीछे पीछे देखता चला - इस में कई एक शख़्सों ने देख कर कहा - देखो

यिह क्या कमबख़्त है कि क़बर में पांव लटका चुका और तो भी इस की हवस नहीं गई - जवान बेटा पीछे जूती चटकाता आता है और आप घोड़े पर चढ़ा जाता है ॰ यिह सुन वुह उतर पड़ा और बेटे को चढ़ा आप पीछे पीछे देखता चला फिर कई आदमी देख के बोले कि देखो यिह क्या नालाइक़ और नाख़लफ़ है जो आप सवार हो बाप को जलेब में दौड़ाता है ॰ यिह सुन आगे बढ़ वे दोनों चढ़ लिए तब कोई बोल उठा कि ये क्या समझते हैं जो एक घोड़े पर दो लद लिये हैं ॰ यों सुन वे दोनों उतर पड़े और साईस ने घोड़ा डुनिया लिया ये पीछे पीछे देखते चले तब इन्हें देख एक ने एक से कहा कि भाई देखो हराम का माल मुफ़्त जाता है और किसी के काम नहीं आता ॰ इस बात के सुनते ही कायथ ने बेटे से कहा क्यों बाबा जान दुनिया की ज़बान से बचने की कोई और तदबीर हो तो करो मुंह से तो अब

कुछ नहीं बन आती - ला जवाब हो बेटा बोला-

लालाजी तुम सच फरमाते थे दुनिया बुरी जगह

है - करे तो डर न करे तो भी डर इस का कुछ

इलाज नहीं

नक़ल ७१

ऐक शख़्स अपने शहर से तबाह होकर पर शहर

में गया जाते ही वहां उस ने थोड़े से रुपयों से

आढ़त की दूकान की और बहुत सा क़रज़ वाम

करके उस ने अपनी दूकान चमकाई और तिजा

रत बढ़ाई ऐसी कि उस की टक्कर का उस नगर

में कोई दूकानदार न रहा जो किसी बात में उस

का साम्हना करे - क़ज़ाकार पांच चार मुआमलों

के बिलटने में उस का दिवाला निकला और क़ैद

पड़ा - निदान वहां हीं मर रहा दैन से छूट निकल

न सका तब किसी ने इस के बनने और बिगड़ कर

मरने का सब अहवाल जा कर ऐक महाजन की

महफ़िल में कहा - सुन कर महफ़िल के लोग

उस के हाल पर बहुत अफ़सोस करनेलगे - साहिबि महफ़िल बोला तुम जो इतना अफ़सोस करते हो सो क्या तुमने कभी यिह मसल भी नहीं सुनी कि

संपत थोड़ी खरच घना बैरी में का बास
नदी किनारे रूखड़ा जब तब होय बिनास

इस के सुनते ही एक उन में से बोल उठा हां साहजी सच कहते हो यिह वही कहावत हुई कि ओछी पूंजी ख़समें खाय

नक़्ल ६२

एक सौदागर बच्चा अपने बाप दादे की सब दौलत उड़ा पुड़ा मुफ़लिस हो लगा पछताने - तब उस के दिल में आया कि बुज़ुर्गों ने सौदागरी करके पैसे जमऋ किए थे - बिहतर है कि मैं भी सौदा गरी करूं ख़ुदा मुझे भी देगा ः यिह समझ हवेली बेच चार हज़ार रुपए ले सौदागरी को निकला तो एक उसके बाप का ग़ुलाम था सो भी साथ हो

लिया और चला चला किसी शहर में पहुंचा ॐ वहां बाज़ार में देखे तो सब तरफ़ सब जिन्स बिकती है और एक और एक शख़्स मसनद बिछाये हुक़ा लगाये बैठा रह रह यिह कहता है कि मैं बात बेचता हूं - जिसे दरकार हो मुह से मोल ले इस ने उस के पास जा हज़ार रुपये दे कहा कि इन की बात हमें दो ॐ उस ने तोड़ा ले कहा - कि जो छोटे से बड़ा हो विसे छोटा कभी न जानिये इस ने कहा और - बोला और रुपये दो और लो ॐ फिर इस ने एक तोड़ा दिया - उस ने कहा - किसी का ऐब देखिये तो उस की परदः पोशी कीजे ॐ फिर इस ने पूछा और वुह बोला और रुपये दो और लो ॐ फिर इस ने हज़ार दिये तब उस ने कहा - भूख लगी हुई होय और कोई खाने की तवाज़ुअ करे तो हज़ार काम छोड़ खाना चाहिये ॐ फिर इस ने पूछा और फिर विस ने रुपये ले कहा - बेक़दर खावन्द की

नौकरी कभी न करिये ॰ ग़रज़ यिह चार हज़ार
रुपये दे चार बात से तबाह हो वहां से और
क़ज़ाकार वुह ग़ुलाम उस शहर का बादशाह
हुआ ॰ एक रोज़ बादशाह तख़्तरवां पर सवार
चला जाता था और वुह सौदागर वहां सामने
शिकस्तःहाल नंगे पाओं तीन दिन के फ़ाक़े से
नज़र आया ॰ देखते ही शाह ने फ़रमाया कि
इस शख़्स को मेरे पहुंचते पहुंचते जल्द मकान
पर लाओ ॰ लोगों ने हाथों हाथ लेजा हाज़िर
किया ॰ इस ने आदाब बजाया - तब शाह ने
फ़रमाया - तू मुझे जानता है सच कह ॰ बोला
जहां पनाह आप नीम ख़ुदा हैं और मुल्क के
मालिक ॰ फिर शाह ने दो दफ़ः पूछा और इस
ने यही जवाब दिया - तब ख़ुश हो उस ने इसे
अपना वज़ीर किया और सब सल्तनत का मुख़्
तार ॰ एक रोज़ महल सरा में बादशाह के पीछे
पीछे चला जाता था कि इस ने देखा - जो एक

पास ख़वास ग़रज़ के कोतवाल को लिये शराब पिये नींद में ग़ाफ़िल पड़ी है ॰ इस ने देखते ही कमर से दोशालः खोल उन दोनों पर डाल दिया ॰ शाह फिर कर महल में दाख़िल हूए और यिह रुख़सत हो अपने घर आया ॰ इस में उन की आंख खुली तो उन्हों ने शाह का आना और वज़ीर का दोशाला उढ़ाना मअ़लूम किया कोतवाल तो वहां से निकल वज़ीर की ड्योढ़ी पर जा हाज़िर हूआ और उस बदज़ात ने कपड़े फाड़ - बाल खसोट - ज़मीन में लोट - बादशाह को बुलाके कहा कि वज़ीर की यिह जान जो तुम्हारे रहते मुझ पर हाथ डाले और बेहुरमत करे - अफ़सोस दोशाला मेरे हाथ रहगया और वुह भाग कर निकल गया ॰ ख़ुदा की क़सम पकड़ पाती तो बोटियां काट काट खाती ॰ यिह कह हाथ काट पछाड़ खा ज़मीन पर गिरी - उस की हालत देख और बात सुन शाह ने ख़फ़ा हो

वज़ीर को बुलाभेजा ॐ जितने वुह आवे तितने एक रुक़अः फ़ौजदार को लिखा कि जोशख़्स रुक़अः लेकर आता है तिस का सिर फ़िलफ़ौर काट के भेज दोगे और इस में कुछ देरी हुई तो तुम्हारा सिर नहीं ॐ वज़ीर के आते ही शाह ने रुक़अः दे के फ़रमाया कितुम्हारा यिह दरजः नहीं जो रुक़अः ले फ़ौजदार के यहां जाओ पर मुझे दूसरे का इअ़्तिबार नहीं - इस लिये तुम्हें भेजता हूं - इस रुक़ऐ का जवाब जल्द लाओ ॐ वुह जों रुक़अः लेके चला तों रास्ते में किसी उम रा ने खाने की तवाज़ुअ़ की - यिह बोला काम ज़रूर का है और खाना तैयार - मैं क्या करूं ॐ कज़ाकार कोतवाल भी इन के साथ था - अल्ग़रज़ ख़ुशाम द बोला कि पीर ओ मुरशिद आप खाना नोशिजां फ़रमाइये - तबतक बन्दा रुक़ऐका जवाब लादेता है ॐ वज़ीर ने रुक़अः उसके हाथ दिया और आप खाना खाया - तों खाना खाकर उठा

में ध्यान में कसा उस का सिर आन मौजूद हूआ यिह ले हुजूर में गया ❁ शाह ने इतना कह महल सरा में भेज दिया - कि जिस ने तुझे बेहुरमत किया यिह उस का सिर है ले ❁ वुह देख डर कर चुप हो रही ❁ फिर बादशाह ने सब भेद कहकर वज़ीर से पूछा कि मैं ने तो तेरा सिर काटने को लिखा था - यिह क्या सबब जो कोतवाल का सिर कटा ❁ वज़ीर ने जों का तों सब अहवाल कह सुनाया और रुख़सत मांगी ❁ शाह ने फ़रमाया यिह कभी नहोगा कि अब तुम्हें रुख़सत मिले - बोला जहां पनाह आप को याद है - जो मैं ने चार बात ख़रीदी थीं ❁ फ़रमाया मुझे अच्छी तरह याद है ❁ कहा तीन तो आज़माईं और चौथी यिह है कि बेक़दर ख़ाविन्द की नौकरी कभी नकरिये - इस से अब आप कुछ नफ़रमाइये बंदः हरगाह नरहेगा ❁ इतना कह वज़ीर रुख़सत हूआ और बादशाह शरमिन्दः हो दम

था नक़्ल

नक़्ल ९३

नामगिनाम साहिब को घोड़ों का बहुत शौक़ था- एक रोज़ एक अर्बी मोल लिया- इस में मुनशी सदरुद्दीन ने अज़राहि ख़ैरख़्वाही कहा कि इस घोड़े पर पंजाबी साईस रहे तो इस की ख़िदमत बख़ूबी हो ॥ यिह बात सुन साहिब ने इस्तबल से साईसों के जमअ़दार को बुलाकर फ़रमाया कि हमें एक पंजाबी साईस लादे और भूल गए ॥ बीस पच्चीस दिन बअ़द एक रोज़ साहिब को वुह बात याद आई - उसे बुलवाके पूछा कि साईस मिला या नहीं - वुह बोला ख़ुदावन्द ग़ुलाम ढूंढता है अभी नहीं पाया ॥ यिह बात सुन के मुनशी ने कहा - क्या बदज़ाद है एक महीने से टालमटाल करता है और साईस नहीं लादेता - बोला पीर ओ मुरशिद बदज़ात के कहे का मैं बुरा नहीं मानता - आप ख़ाविन्द हैं जो

मिज़ाज में आवे सो कहिये - परु ख़ाविंदों के रूबरू हक़ बात कहने में कुछ ऐब नहीं - तक़सीर मुआ़फ़ ये मौलवी मुनशी नहोंय जो एक के बुलाने से सौ आन हाज़िर होंय - ये तो साईस हैं मही नों की तलाश में एक आद मिलजाय तो मिल जाय नहीं तो मिलना महाल ॰ यिह सुन साहिब हंसे और उम्मेदवार जो मौलवी मुनशी उस वक़ हाज़िर थे शरमिन्दः हूए और मुनशी सद रुद्दीन पशेमान हो दमख़ा रहा

नक़ल ९४

एक रोज़ दिल्ली के दो कंगाल बांके शाम के वक़ बाज़ार में गये तो उन्हों ने देखा कि एक हलवाई मिठाई का ख़ुनचा मुंहा मुंह भरा आगे धरे बैठा है - ये उस के साम्हने जा खड़े हूए और एक ने एक से कहा कि इसे नज़र नहीं आता - दूसरे ने दो उंगलियां उस की आंख के साम्हने कीं वुह बोला यिह क्या करते हो - इस ने कहा

हम ने जाना था कि तुझे दीसता नहीं और जो दीसता है तो आगे धरी मिठाई किस लिये नहीं खाता - बोला इस के खाने से घर जाता है ॥ इतनी बात के सुनते ही वे उस की सब मिठाई खा यिह कह चले गये कितना घर रहे भला हमाराही घर जायगा और वुह बिचारा अपने कहने से आप शरमिन्दः हो रोकर बैठ रहा

नक़्ल ९५

एक दिन राजा सवाई जैसिंह पंडितों की सभा किये बैठे थे और शास्त्र चर्चा हो रही थी - इस में कुछ ज़िक्र जो आया तो राजा ने सब की तरफ़ मुख़ातिब हो पूछा कि पृथ्वी का मध्य भाग कहां है सो हमें बताओ ॥ इस बात के सुनते ही सब दम खा रहे और किसी से कुछ जवाब न बनिआया तब एक भावे बोल उठा कि धर्मावतार जो आप मेरे साथ चलो तो हैं बताऊं ॥ यिह सुन राजा उठ खड़ा हुआ और बोला कि चलो दिखादो -

वुह भी सभा समेत राजा को लिये किसी मैदान बियाबान में जा कुछ इधर उधर नाप एक जगह बरछीगाड़ बोला कि जहां यिह सेज गड़ा है सोई धरती की बीच है - राजा ने कहा हम कैसे मानें - जवाब दिया - यकीं कहा चाहिये न मानों तो माप लेउ - इस बात को सुन राजा और उसके साथके लोग लाजवाब हो घर आये

नक़्ल ९६

एक रोज़ कोई अफ़ीमी दो घड़ी दिन रहे अफ़ीम का घोला चढ़ा बाज़ार की सैर को निकला तो देखता क्या है कि सोंहीं से भुस और कड़वी से भरे छकड़ों का ताने का तांता चला आता है - उसे देख इतना कह वुह किसी भले आदमी के बंदि किवाड़ से भिड़ कर खड़ा हो रहा कि बचा इन्हें बचाइयो खबरदार धका न लगे ॥ इस में पीनक जो आई तो उसे वहीं खड़े खड़े पहर भर गुज़र गया ॥ निदान जब घरवाले ने दरवाज़ः

खोला तब वुह पछाड़ खाके गिरा और बोला कि इतना कहा बचाइयो बचाइयो पर गिराये बिन न रहा ॐ किसी ने सच कहा है कि सारवान गाड़ीवान मानिन्द हैवान हैं

नक़्ल ९७

कोई भलामानुस साहिबि शऊर ज़माने की गर्दिश से अपने घर में बैठा फ़ाक़ेकशी कर रहाथा कि यिह ख़बर सुन उसके किसी दोस्त ने आकर कहा यिह क्या ग़ज़ब है कि हाथ पाय के काहिली मुंह में मूंछें जांय- वुह बोला मैं क्या करूं -इन ने कहा दाना लोगों का क़ौल है कि इनसान पर जब तबाही पड़े तब सफ़र करे -इसी बात को अमल में लाओ ॐ ग़रज़ उस ने आशना की बात मान सफ़रि दूरदराज़ किया और चंद बरस में कई हज़ार रुपये ले अपने घर आया ॐ इसे आसूदः हाल देख एक ने एक से कहा कि इस शहर में तो यिह भूखा मरता था बाहर जा कहांसे

इतनी दौलत ले आया जो मालदार होगया - वुह बोला क्या तुम ने यिह कहावत नहीं सुनी जो इतना तअज्जुब करते हो - पूछा क्या - कहा

पान पदारथ सुघड़ नर अनतोले हि बिकांय ॥
जों जों खड़ें दिसावरों मोल महंगे जांय ॥

नक़ल ९८

दिल्ली में किसी अफ़ीमी के छः लड़केथे - ऐक दिन वुह तीन लड़कों को साथ ले हज़रत क़ुतब के मेले में गया - वहां भीड़ भड़का देख यिह डरकर ऐक लड़के को कांधे पर चढ़ाय - दूसरे को गोदी में ले - तीसरे का हाथ पकड़ अलग हो जो ऐक तरफ़ खड़ा हुआ तो पीनक में आया ॥ पहर ऐक बअ़्द मेले में कुछ हुल्लड़ जो हुआ तो वुह पीनक से चौंक कांधे के लड़के को न देख बहुत घबराया ॥ निदान यों कहता कहता कोतवाल के पास आया कि हाय मेरा लड़का खोया गया - कोतवाल ने पूछा - तुम्हारे के लड़के हैं - बोला छः उन में से

ऐक खोयाहै ჻ कोतवाल ने सुनके ढंढोरिये को उसके साथ करदिया - वुह तमाम दिन उसे सारे शहर में लिये फिरा ჻ आख़िर तो हौंग्य शाम के वक़्त जो घर में घसा तो दरवाज़े की चौखट लड़के के सिर में लगी वुह रोया तब यिह बोला ऐ कमबख़्त ना शुदनी - तमाम शहर में ख़राब कर मुझे रुला के जो तू अब रोया पहलेही क्यों न बोला जो मैं इतना ख़राब नहोता ჻ इस बात को सुन किसी उस के आशना ने कहा कि भाई जो मसल हम सुनते थे सो तुम ने सच कर दिखाई कि बग़ल में लड़का और शहर में ढंढोरा

नक़्ल ९९

शहर कलकत्ते के बीच कोई मौलवी साठ सत्तर बरस के सिन में ख़िज़ाब कर रात के वक़्त कुटनियां लगाय ऐक हिंदूस्तानी बीबी का निकाह कर ला या - वुह रात भर तो जवान के धोखे ख़ुश रही पर भोर होतेही इसके चिहरे की हर्नियां और

बालों की सपेदी हाथ पावों की सख़्ती बातों की कम़्ती देख सुन लगी कुटनियों को गालियां दे दे सिर पीट पीट बेइख़्तियार पुकार पुकार रोने श्रार ज़ार ज़ार: निकलने का भी किया पर हया श्रौर शर्म ने न निकलने दिया - यार नायार दुनिया से बेज़ार मनमार रहने लगी ॥ एक रोज़ मौलवी साहिब कलप लगाने की तैयारी कर रहे थे कि इस ने दूर से देख असील को पुकार के कहा ऐ मामा ऐ मामा इस बूढ़े ख़बीस से पूछ कि एक दफ़ः काला मुंह करके तो मुझे दाम में लाया - अब किसे बरबाद करने को रू सियाह करता है - इतनी बात सुन शरमिन्दः हो मौलवी ने उस दिन से फिर ख़िज़ाब न किया

नक़ल १००

शाह जहां बादशाह के शहज़ादे दाराशिकोह को इल्मि नजूम से बड़ा शौक़ था - नजूमी श्रौर जोतषी हमेशः नौकर रहते एक एक से अदावत रखता

पर शहज़ादे के ख़ौफ़ से कोई किसी का कुछ कर
नसकता ✽ एक रोज़ काबूपा नजूमियों ने शहज़ादे
को सिखाया कि ख़ुदावंद इन जोतषियों से पूछिये
कि भैंयाल कब आवेगा - शहज़ादे ने सब को
बुला कर पूछा और कहा कि यातो तुम भैंयाल
का आना बताओ - नहीं मेरे शहर से निकल जा
ओ ✽ यिह बात सुन जोतिषियों ने अर्ज़ की कि
धर्मावतार आठ दिन में इस का उत्तर देंगे तो
भला - नहीं आप का नगर छोड़ देंगे ✽ इतना
कह बाहर आ एक मकान पर बैठ ये फ़िक्र करते
थे कि किसी चौबे ने इन्हें फ़िक्रमन्द देख पूछा -
बाबाजू आज कहा है जो तुम भावित हो रहे हो
विन्हों ने सब माजिरा कह सुनाया तब चौबे बोला
तुम मोकों लैचलौ याकौ उत्तर हौं दैउंगौ ✽ इतनी
बात इसके मुंह से निकलतेही वे हाथों हाथ चौबे
को हुज़ूर में लेगये और कहा कि भैंयाल का
अहवाल ये कहेंगे ✽ शहज़ादे ने फ़रमाया अच्छा

कहै ॐ यौवे बोला धर्म मूर्त्ति जा समैं भगवान ने सृष्ट रचवे की इच्छा की ता समैं द्वै मनुष बनाये और ऊपर सैं नीचे नर्क में डार दये - तिन में एक मुंह के बल गिरौ और दूसरौ चूतड़ के - मुंह के बल गिरनवारौ मुसलमान भयौ और दूसरौ हिंदू - एक की दृष्ट नीचे कौं रही और दूसर की ऊपर कौं ॐ याही तैं जोतषी आकाश की सब बात जानतु हैं - ग्रहन कौ होनौ ये बताय देंगे और भौंचाल की बात विनतैं पूछौ वे बतावेंगे यौवे की यिह जुगत सुन शहज़ादे ने हंसकर कहा इस की दलील क्या है - बोला याही लिये भोर उठ मुसलमान मुंह धोवतु हैं और हिंदू जंगल जातु हैं - या कौ यही प्रमान है ॐ इस हाज़िर जवाबी और बेबाकी से खुश हो शहज़ादे ने यौवे को इनआम दिया और जोतषियों को बहाल किया

तमाम शुद

गलतनामः

गलत	सहीह	सफहः	सतर
जाता हे	जाता है	७	१७
शामस	शामसे	१८	५
कहक	कहके	१९	१२
शामवे	शामको	२२	३
बाजुओ	बाजुओं	२२	१७
बदतीनता	बदनीयती	२३	४
ऐकनाज़	ऐकनोज़	२४	५
कासेज	कीसेज	२९	१६
हागी	होगी	३१	६
वस	वस्फ़	३२	११
तू	तूल	३५	१६
इसतमें	इसमेंमें	३७	१७
गय	गये	४१	१
बलन्दी	बुलन्दी	४१	१६
रलामत	सलामत	५०	१

ग़लत	सहीह	सफ़हः	सतर
वा	का	५०	१०
मुनद्दमः	मुक़द्दमः	५३	१३
प्याडा	प्यड़ा	५४	१०
नकेल	नकेली	५५	७
जागी	जोगी	-	१३
बाघंबन	बाघंबर	-	-
मुद्रा	मुंद्रा	-	१४
हुंहना	हुंहला	६६	३
नाजान	नाजाने	६८	१
दिय	दिया	७३	१७
उसनन	उसने	७९	१
वायथ	कायथ	८२	१२
गुनूदेवकमुख्से	गुनूदेवकेमुख्से	८३	१
वालेवा	वालेको	८४	१२
योवमें	यौवेमें	८५	१
मेन	मेने	८८	१४

ग़लत्	स़ही़ह्	स़फ़्हं:	सत़्र
आपन	आपने	९१	२
को ई	कोई	९९	१५
काई	कोई	१०४	१७
त्रक़्स़	नुक़्स़	१५०	१५
आर	और	११९	३
क	के	”	१५

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۱۲۵	۱۳	آ	آیا
۱۳۳	۴	دینھو	دیکھو
۱۳۴	۷	آرت	آرهت
۱۴۸	۶	شعو	شعور
۱۵۲	۸	اسیل	اصیل

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۵۱	۱۱	بھندسال	بھندسال
۵۵	۶	بُچھ	کُچھ
۶۶	۴	قطع	قطعہ
۷۸	۱۲	چھارل	چھارے
۱۰۱	۳	تو	تو
"	۹	ے	سے
۱۰۵	۳	شی	شی ہی
"	۹	ہی	ہی
۱۱۸	۱۱	انھولے	اُنھوں نے
۱۱۸	۱۳	میرا	لیئے میرا
۱۲۱	۳	مہنے	مہینے
۱۲۳	۱۱	دیکھے	دیکھے

غلط نامہ

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
٤	٨	دکھے	دُکھے
١١	١٣	تھ	تھے
١٣	١	یہ	پئے
١٣	٣	یہ	ئی
١٤	٣	ھم	غم
٢١	٨	ایک	اِیک
٢٥	١٢	ا	ئے
٢٦	١	لفو	کو
٢٦	١١	اسلے	اُسکے
٢٨	٤	دارا شلوہ	دارا شکوہ
٣٨	١٣	بادشا	بادشاہ

منہ کے بل گرن وارو مسلمان ہیو اور دوسرو
ہندو - ایک کی درشٹ نیچے کون رہی اور
دوسرے کی اوپر کون :: یا ہی تیں جوتشی آکاش
کی سب بات جانت ہیں - گرہن کو ہونوں
تے بتائے دیکھنے اور رہوں چال کی بات
بونتیں پوچھو وے بتاوینگے :: چوبے کی یہ
جگت سن شہزادے نے ہنس کر کہا اِس کی
دلیل کہا ہی - بولا یا ہی لئے بہور اُٹھ مسلمان
منہ دھووت ہیں اور ہندو جنگل جات ہیں -
یا کوئی ہی پرمان ہی :: اِس حاضر جوابی
اور پنیا کی سے خوش ہو شہزادے نے چوبے
کو انعام دیا اور جوتشیوں کو بحال کیا

:: تمام شد ::

چھوڑ دینگے ٭ اِتنا کہہ باہر آ ایک مکان پر بیٹھہ
یہ فکر کرتے تھے کہ کسی چوہے نے اُنھیں فکرمند
دیکھہ پوچھا - بابا جو آج کہا ہے جو تم بہاوت
ہو رہے ہو - اُنھوں نے سب ماجرا کہہ سنایا
تب چوہے بولا تم مو کوں لی چلو یا کو اوتر
ہوں دیوں گو ٭ اِتنی بات اُس کے مُنہ سے
نکلتے ہی وے ہاتھوں ہاتھ چوہے کو حضور میں
لیگئے اور کہا کہ بہوں چال کا احوال یہ کہینگے ٭
شہزادے نے فرمایا اچھا کہے - چوہے بولا دھرم
مورت جا سمئیں بھگوان نے سرشٹ رچوے
کی اِچھا کی تا سمیں دوہی مُنکھ بنائے اور
اوپر سوبل نیچے نرک میں ڈار دئے - تن میں
ایک مُنہ کے بل گر یو اور دوسرو چوتر کے -

نقل ۱۱

شاہ جہاں بادشاہ کے شہزادے دارا شکوہ کو علمِ نجوم سے بڑا شوق تھا - نجومی اور جوتشی ہمیشہ نوکر رہتے - ایک ایک سے عداوت رکھتا پر شہزادے کے خوف سے کوئی کِسی کا کچھ نہ کر سکتا ؛ ایک روز قابو پا نجومیوں نے شہزادے کو سکھایا کہ خداوندا اِن جوتشیوں سے پوچھئے کہ بھوں چال کب آویگا - شہزادے نے سب کو بلا کر پوچھا اور کہا کہ یا تو تم بھوں چال کا آنا بتاؤ - نہیں میرے شہر سے نکل جاؤ ؛ یہہ بات سُن جوتشیوں نے عرض کی کہ دھرماوتار آٹھ دِن میں اس کا اُتر دینگے تو بولا - نہیں آپ کا نگر

چہرے کی جھرّیاں اور بالوں کی سپیدی
ہاتھ پانو کی سختی باتوں کی کرختی دیکھ مُسن
لگی گتنیوں کو گالیاں دے دے سر پیٹ پیٹ
بے اختیار پکار پکار رونے اور اِراده نکلنے کا
بھی کیا پر حیا اور شرم نے نہ نکلنے دیا - چار
ناچار دُنیا سے بیزار من مار رہنے لگی ٭ ایک
روز مولوی صاحب کلپ لگانے کی تیاّری کر
رہے تھے کہ اِس نے دور سے دیکھ اسپل
کو پکار کے کہا - اری ماما اری ماما اِس بوڑھے
خبیس سے پوچھ کہ ایک دفع کالا مُنہ کر کے
تو مجھے دام میں لایا - اب کسے برباد کرنے کو
رو سیاه کرتا ہے ٭ اِتنی بات سُن شرمنده
ہو مولوی نے اُس دن سے پھر خضاب نہ کیا

لگی وہ رویا تب یہہ بولا ای کمبخت ناشدنی تمام شہر میں خراب کر مجھے رلا کے جو تو اب رویا پہلے ہی کیوں نہ بولا جو میں اِتنا خراب نہ ہوتا ۞ اِس بات کو سن کسی اُس کے آشنا نے کہا بھائی جو مثل ہم سنتے تھے سو تم نے سچ کر دکھائی کہ بغل میں لڑکا شہر میں ڈھنڈورا

نقل ۹۹

شہر کلکتے کے بیچ کوئی مولوی ساٹھ ستر برس کے سِن میں خضاب کر رات کے وقت کتنیاں لگاے ایک ہندوستانی جی جی کو نکاح کر لایا - وہ رات بھر تو جوان کے دھوکھے خوش رہی پر بھور ہوتے ہی اِس کے

ایک لڑکے کو کاندھے پر چڑھائے دوسرے کو
گودی میں لے تیسرے کا ہاتھ پکڑ الگ ہو جوں
ایک طرف کھڑا ہوا توں پینک میں آیا ؛ پھر
ایک بعد میلے میں کچھ ہلڑ جو ہوا تو وہ پینک
سے چونک کاندھے کے لڑکے کو نہ دیکھ بہت
گھبرایا ؛ ندان یوں کہتا کہتا کوتوال کے
پاس آیا کہ ہائے میرا لڑکا کھویا گیا - کوتوال
نے پوچھا تمھارے کی لڑکے ہیں - بولا چھ - اُن
میں سے ایک کھویا ہی ؛ کوتوال نے سنکے
ڈھنڈورے کو اُس کے ساتھ کر دیا - وہ
تمام دن اُسے سارے شہر میں لئے پھرا -
آخر روز جہینکا شام کے وقت جوں گھر میں
دھسا توں دروازہ کی چوکھٹ لڑکے کے سر میں

اُس نے آشنا کی بات مان سفر دور
دراز کیا اور چند برس میں کئی ہزار روپے
لے اپنے گھر آیا اِسے آسودہ حال دیکھ ایک
نے اُس سے کہا کہ اِس شہر میں تو بھوکھا
مرتا تھا باہر جا کہاں سے اِتنی دولت لے آیا
جو مالدار ہو گیا - وہ بولا کیا تمنے یہ کہاوت
نہیں سُنی جو اِتنا تعجب کرتے ہو پوچھا کیا - کہا
پان پدارتھ سگھڑ نر ان تولے ہی بکائیں
جوں جوں چڑھیں دساوراں موُل مہنگے جائیں

نقل - ۹۸

دلّی میں کِسی افیمی کے چھ لڑکے تھے - ایک دِن
وہ تین لڑکوں کو ساتھ لے حضرت قطب کے
میلے میں گیا - وہاں بھیڑ بھڑکا دیکھ یہ ڈر کر

دروازہ کھولا تب وہ پچھاڑ کھا کے گرا اور بولا کہ اِتنا کہا بچائیو بچائیو پر گرا ے بن نرہا ❊ کسی نے سچ کہا ہی کہ سارواں گاڑی وان مانند حیوان ہیں

نقل ۱۹۷

کوئی بھلا مانس صاحبِ شعور زمانے کی گردش سے اپنے گھر میں بیٹھا فاقے کشی کر رہا تھا کہ یہہ خبر سن اُس کے کسی دوست نے آکر کہا - یہہ کیا غضب ہی کہ ہاتھ پاے کے کاہلی منہہ میں مونچھیں جائیں - وہ بولا میں کیا کروں - اِن نے کہا - دانا لوگوں کا قول ہی کہ اِنسان پر جب تباہی پڑے تب سفر کرے - اِسی بات کو عمل میں لاؤ ❊ غرض

دیا یا گوں کہا چاہئے تھا تو تو ماپ لئوے
اِس بات کو سن راجا اور اُس کے
ساتھ کے لوگ لاجواب ہو گھر آئے

نقل ۹۶

ایک روز کوئی افیمی دو گھڑی دن رہے
افیم کا گھوڑا چڑھا بازار کی سیر کو نکلا
تو دیکھتا کیا ہی کہ سو نہیں سے بھس اور
گھڑ وہی سے بھرے چھکڑوں کا تانتے کا تانتا چلا
آتا ہی - اُسے دیکھ اِتنا کہہ وہ کسی بھلے
آدمی کے بند کیواڑ سے بھڑ کر کھڑا ہو رہا
کہ بچا ئیو بچا ئیو خبردار دھکا نہ لگے - اِس میں
پینک جو آئی تو اُسے وہیں کھڑے کھڑے
پہر بھر گذر گیا ❊ ندان جب گھر والے نے

بھی سبھا میں گئے بیٹھے تھے اور شاستر چرچا ہو

رہی تھی - اِس میں کچھ ذکر جو آیا تو راجا

نے سب کی طرف مخاطب ہو پوچھا کہ پرتھی کا

مدھیہ بھاگ کہاں ہی سو ہمیں بتاؤ ٭ اِس

بات کے سنتے ہی سب دم کھا رہے اور کسی

سے کچھ جواب نہ بن آیا تب ایک چوبے

بول اُٹھا کہ دھرماوتار جو آپ میرے ساتھ

چلو تو ہوں بتاؤں ٭ یہ سن راجا اُٹھ کھڑا

ہوا اور بولا کہ چلو دکھا دو - وہ بھی سبھا

سمیت راجا کو لئے کسی میدان بیابان میں

جا کچھ اِدھر اُدھر ناپ ایک جگہ برچھی گاڑ

بولا کہ جہاں یہ سیل گڑ رہی سوئی دھرتی

کو بیچ ہی - راجا نے کہا ہم کیسے مانیں - جواب

دھرے بیٹھا ہی - وے اُس کے سامنے جا کھڑے
ہوے اور ایک نے ایک سے کہا کہ اِسے
نظر نہیں آتا - دوسرے نے دو اُنگلیاں اُس کی
آنکھ کے سامنے کیں - وہ بولا یہہ کیا کرتے ہو -
اِسنے کہا - ہمنے جانا تھا کہ تجھے دیستا نہیں
اور جو دیستا ہی تو آگے دھری مِتھائی
کس لئے نہیں کھاتا - بولا اِس کے کھانے سے
گھر جاتا ہی ٭ اِتنی بات کے سنتے ہی
وے وےسکی سب مِتھائی کھا یہہ کہہ چلے گئے کہ
تیرا گھر رہہ بھلا ہمارا ہی گھر جائیگا اور وہ بچارا
اپنے کہے سے آپ شرمندہ ہو رو کر بیٹھ رہا

نقل ۹۵

ایک دن راجا سوائی جیسنگھ پندتوں

آوے سو کہئے - پر خاوندوں کے روبرو حق
بات کہنے میں کچھ عیب نہیں - تقصیر معاف
یے مولوی منشی نہوئیں جو ایک کے بلانے سے
سو آن حاضر ہوئیں - یے تو سائیس ہیں مہینوں
کی تلاش میں ایک آدھ ملجاے تو ملجاے
نہیں تو ملنا محال * یہ سن صاحب ہنسے اور
امیدوار جو مولوی منشی اُس وقت حاضر
تھے شرمندہ ہوئے اور منشی صدر الدین
پشیمان ہو دم کھا رہا

نقل ۹۴

ایک روز دلّی کے دو کنگال بانکے شام کے
وقت بازار میں گئے تو اُنہوں نے دیکھا کہ ایک
حلوائی مٹھائی کا خوانچہ سنہا منہہ دھرا آگے

منشی صدر الدّین نے از راہ خیر خواہی کہا کہ
اِس گھوڑے پر پنجابی سائیس رہے تو اِس کی
خدمت بہ خوبی ہو ٭ یہ بات سُن صاحب نے
اِصطبل سے سائیسوں کے جمعدار کو بُلا کر فرمایا
کہ ہمیں ایک پنجابی سائیس لا دے اور
بھول گئے ٭ بیس پچیس دِن بعد ایک روز
صاحِب کو وُہ بات یاد آئی - وِسے بُلوا کے
پُوچھا کہ سائیس مِلا یا نہیں - وُہ بولا خُداوند
غُلام ڈھونڈھتا ہی ابھی نہیں پایا ٭ یہ بات
سُن کے مُنشی نے کہا - کیا بد ذات ہی ایک مہینے
سے ٹال مٹال کرتا ہی اور سائیس نہیں
لا دیتا - بولا پیر و مُرشد بد ذات کہے کا میں
بُرا نہیں مانتا - آپ خاوند ہیں جو مزاج میں

کا توں سب احوال کہہ سُنایا اور رُخصت
مانگی ؛ شاہ نے فرمایا یہہ کبھی ہوگا کہ اب
تمہیں رُخصت ملے - بولا جہاں پناہ آپ کو
یاد ہی جو میں نے چار بات خریدی تھیں ؛
فرمایا مجھے اچھی طرح یاد ہی ؛ کہا تین تو
آزمائیں اور چوتھی یہہ ہی کہ بیقدر خاوند کی
نوکری کبھی نہ کرے - اِس سے اب آپ
کچھ نفرمائے - بندہ ہرگاہ نہ رہیگا ؛ اِتنا کہہ
وزیر رُخصت ہوا اور بادشاہ شرمندہ ہو
دم کہا رہا

نقل ۹۳

نام گرام صاحب کو گھوڑونکا بہت شوق تہا
ایک روز ایک عربی مول لیا - اِس میں

کام ضرور کا ہی اور کھانا تیار۔ میں کیا کروں
قضا کار کوتوال بھی اِن کے ساتھ تھا۔ ازراہِ
خوشامد بولا کہ پیر و مُرشد آپ کھانا نوشِ
جان فرمائیے۔ تب تک بندہ رُقعے کا جواب
لا دیتا ہی وزیر نے رُقعہ اُس کے ہاتھ دیا اور
آپ کھانا کھایا۔ جوں کھانا کھا کر اُٹھا توں خاں
چنیں کھلا اُس کا سر آن موجود ہوا ؛ یہ لے
حضور میں گیا ؛ شاہ نے اِتنا کہہ محل سرا میں
بھیج دیا۔ کہ جس نے مجھے بے حُرمت کیا یہ اُس
کا سر ہی لے ؛ وہ دیکھ ڈر کر چُپ ہو رہی ؛
پھر بادشاہ نے سب بھید کہہ کر وزیر سے پوچھا
کہ میں نے تو تیرا سر کاٹنے کو لکھا تھا۔ یہ کیا
سبب جو کوتوال کا سر کٹا ؛ وزیر نے جوں

اور وہ بھاگ کر نکل گیا ۞ خدا کی قسم پکڑ
پاتی تو جوتیاں کاٹ کاٹ کھاتی ۞ یہہ کہہ ہاتھ
کاٹ پچھاڑ کھا زمین پر گری - اُس کی حالت دیکھہ
اور بات سُن شاہ نے خفا ہو وزیر کو بُلا بھیجا ۞ جتنے وہ
آوے تتنے ایک رُقعہ فوجدار کو لکھا کہ جو شخص
رُقعہ لیکر آتا ہی وس کا سر فی الفور کاٹ کے بھیج
دوگے اور اس میں کچھہ دیری ہوئی تو تمھارا
سر نہیں ۞ وزیر کے آتے ہی شاہ نے رُقعہ دے کے
فرمایا کہ تمھارا یہہ درجہ نہیں جو رُقعہ لے فوجدار
کے یہاں جاؤ پر سمجھو دوسرے کا اعتبار نہیں ۞
اس لئے تمھیں بھیجتا ہوں اِس رُقعہ کا جواب
جلد لاؤ ۞ وہ جوں رُقعہ لیکے چلا توں راستے
میں کسی اُمرا نے کھانے کی تواضع کی - یہہ بولا

ایک خاص خواص شہر کے کوتوال کو لئے
شراب پئے نیند میں غافل پڑی ہی ؛
اس نے دیکھتے ہی گھر سے دشالہ کھول اُن
دونوں پر ڈال دیا ؛ شاہ پھر کر محل میں
داخل ہوے اور یہہ رخصت ہو اپنے گھر آیا ؛
اس میں اُن کی آنکھہ کھلی تو دونوں
نے شاہ کا آنا اور وزیر کا دشالا اُڑھانا
معلوم کیا ؛ کوتوال تو وہاں سے نکل وزیر
کی ڈیوڑی پر جا حاضر ہوا اور اُس بدذات
نے کپڑے پھاڑ - بال کھسوٹ - زمین میں لوٹ -
بادشاہ کو بلا کے کہا کہ وزیر کی یہہ جان جو
تمھارے رہتے مجھہ پر ہاتھہ ڈالے اور بے حرمت
کرے افسوس دشالا میرے ہاتھہ رہ گیا

ہوا ٭ ایک روز بادشاہ تخت رواں پر سوار
چلا جاتا تھا اور وہ سوداگر بچہ سامنے
شکستہ حال ننگے پانو تین دن کے فاقے سے نظر
آیا ٭ دیکھتے ہی شاہ نے فرمایا کہ اِس شخص
کو میرے پہنچتے پہنچتے جلد مکان پر لاؤ ٭ لوگوں
نے ہاتھوں ہاتھ لے جا حاضر کیا ٭ اِس نے آداب
بجایا۔ تب شاہ نے فرمایا۔ تو مجھے جانتا ہی
سچ کہہ ٭ بولا جہاں پناہ آپ نیم خدا ہیں
اور مُلک کے مالک ٭ پھر شاہ نے دو دفع
پوچھا اور اِس نے یہی جواب دیا۔ تو خوش
ہوا اُس نے اِسے اپنا وزیر کیا اور سب سلطنت کا
مختار ٭ ایک روز محل سرا میں بادشاہ
کے پیچھے پیچھے چلا جاتا تھا کہ اِس نے دیکھا جو

اُس نے توڑا لے کہا - کہ جو چھوٹے سے بڑا ہو
وُہ سے چھوٹا کبھی نجانئے ٭ اِس نے کہا اور - بولا
اور رُپئی دو اور لو ٭ اِس نے پھر ایک
توڑا دیا - اُس نے کہا - کِسی کا عیب دیکھئے
تو اُس کی پردہ پوشی کیجئے ٭ پھر اُس نے
پوچھا اور - وُہ بولا اور رُپئی دو اور لو ٭
پھر اِس نے ہزار دیئے تب اُس نے کہا
بھوکھ لگی ہوئی ہووے اور کوئی کھانے کی تواضع
کرے تو ہزار کام چھوڑ کھانا کھائے ٭ پھر اِسنے
پوچھا اور - پھر وُس نے رُپئی لے کہا بے قدر
خاوند کی نوکری کبھی نکرئے ٭ غرض یہ چار
ہزار رُپئی دے چار بات لے تباہ ہو وہاں رہا
اور قضا کار وُہ غلام اُس شہر کا بادشاہ

دولت اُڑا اُڑا مفلس ہو لگا دکھ پانے - تب
اُسکے دل میں آیا کہ بزرگوں نے سوداگری کر کے
پیسے جمع کئے تھے - بہتر ہے کہ میں بھی سوداگری
کروں خدا اُسمیں بھی دیگا ۞ یہ سمجھ حویلی
بیچ چار ہزار روپیے لے سوداگری کو نکلا -
تو ایک اُس کے باپ کا غلام تھا سو بھی
ساتھ ہو لیا اور چلا چلا کسی شہر میں پہنچا ۞
وہاں بازار میں دیکھے تو سب طرف سب
جنس بکتی تھی اور ایک اور ایک شخص
مسند بچھا کے حقہ لگا کے بیٹھا رہ رہ یہی کہتا
ہے کہ میں بات بیچتا ہوں جسے درکار ہو اُس
سے مول لے ۞ اِس نے اُس کے پاس
جا ہزار روپیے دے کہا کہ ایک بات ہمیں دو ۞

دیکھتا چلا ॰ پھر کئی آدمی دیکھ کے بولے کہ
دیکھو یہ کیسا نالایق و ناخلف ہی جو آپ
سوار ہو باپ کو چلو میں دوڑاتا ہی ॰ یہ سن
آگے بڑھے وے دونوں چڑھ لئے تب کوئی بول
اُٹھا کہ یہ کیسا مسخرے ہیں جو ایک گھوڑے
پر دو لدلئے ہیں ॰ یوں سن وے دونوں اُتر
پڑے اور جب تیلی نے گھوڑا آگے دوڑا لیا
سو پیچھے پیچھے دیکھتے چلے تب اُنہیں دیکھ ایک
نے ایک سے کہا کہ بھائی دیکھو حرام کا مال
مفت جاتا ہی اور کسی کے کام نہیں آتا ॰
اس بات کے سنتے ہی کایتھ نے بیٹے سے کہا
کیوں بابا جان دنیا کی زبان سے بچنے کی کوئی
اور تدبیر ہو تو کرو سمجھتے تو اب کچھ نہیں بن

دونوں میں یہی گفتگو ہوتی تھی۔ ایک روز اُس نے
اپنا وہ گھوڑا سواری کو منگوایا کہ جس پر
کبھی سوار نہ ہوا تھا اور کھلا پلا کے خوب تیار
کیا تھا۔ گھوڑے کے آتے ہی باپ نے بیٹے سے کہا۔
بابا جان اِس پر تم سوار ہو ہم دیکھیں۔
بیٹے نے بھی یہی کہا۔ غرض بہت سی کہا سنی
کے بعد اُس کا باپ ہی سوار ہوا اور بیٹا پیچھے
پیچھے دیکھتا چلا۔ اِس میں کئی ایک شخصوں
نے دیکھ کر کہا۔ دیکھیو یہ کیا کم بخت ہے کہ قبر
میں پانو لٹکا چکا ہے تو بھی اِس کی ہوس
نہیں گئی۔ جوان بیٹا پیچھے جوتی چٹکاتا آتا ہے
اور آپ گھوڑے پر چڑھا جاتا ہے۔ یہ سن
وہ اُتر پڑا اور بیٹے کو چڑھا۔ آپ پیچھے پیچھے

اُس کے سُنتے ہی اُہن نے بھی اِس دوہے کو
پڑھ سُنایا

کون چہے ہی برسنا کون چہے ہی دھوپ
کون چہے ہی بولنا کون چہے ہی چُپ

پھر کبِ نے یہہ دوہا کہہ سُنایا

مالی چاہے برسنا دھوبی چاہے دھوپ
ساہ چہے چاہے بولنا چور چہے چاہے چُپ

نقل ۱۹۰

کوئی کائیتھ ہمیشہ اپنے بیٹے کو سمجھاتا اور
یہہ کہتا کہ بابا جان دُنیا بڑی جگہہ ہی - کر توُ
ڈرنگر تو بھی ڈر - اُس کا بیٹا سُن کر یہہ
جواب دیتا لالاجی بڑی بڑے کے واسطے ہی
مگر تو ڈرنگر تو نہ ڈر * غرض جب نہ تب اُن

زبان کو ہو جسکو دا کا بال بال یہہ کہتا ہی کہ
ہی کوئی برج میں نو سہت ہمارا جو گوپال کا چلنا
دانو قوف کرے ۞ معنے کے سنتے ہی شاہ نے خوش
ہو سب کی داد دی اور وسعت زبان براج
کی نہایت تعریف کی

نقل ۸۹

کسی راجا کی سبھا میں ایک کب جا کے چپ
چاپ بیٹھ رہا۔ اس میں کوئی راج سبھا
میں سے بولا کہ آج کیا ہی جو کب جی آتم مون
گہہ بیٹھے ہو۔ اس نے اس کی بات کا اُتر
نہ دیا پر یہہ دوہا پڑھا

اتِ کا بھلا نہ برسنا اتِ کی بھلی نہ دھپ
اتِ کا بھلا نہ بولنا اتِ کی بھلی نہ چپ

کہا ونت جیسے انہوں نے اپنے اپنے لفظ کو گھڑی گھڑی
کہتا ہی اُن کے دِل میں یہی خیال بندھا کہ
جو دوا بھی گھڑی گھڑی کہتی ہی اور بیربل
ذات کا باہمن اور در کا پھرنے والا
اُس کے بھی دِل میں یہی خیال بندھا
کہ جو دوا دردر کہتی ہی اور تورل مل
متصدی تھی۔ اُس کے خیال نے یہی بندش باندھی
کہ جو دوا گھات گھات کہتی ہی اور فیضی
شاعر اُس سے سِوا اِس کے اور مضمون
نہ سوجھا۔ اِس سے اُس کے خیال میں آیا کہ
جو دوا روا روا کہتی ہی ۞ یہ بات سُن کر
شاہ نے فرمایا کہ بھلا اب تم کہو اُس کے کیا
معنی ہیں۔ عرض کی کہ جہاں پناہ بات کہتے ہیں

جہاں پناہ سلامت بار بمعنی آب اور در یہاں
آب سے مراد ہی آنسو اور در سے مراد ہی
آنکھ - اِس سے معنے یہ نکلے کہ جسودا روکر
یہ کہتی ہی کہ ہی کوئی برج میں دوست ہمارا
جو گوپال کو بجانے دے ؛ اِس عرصے میں آئے
نوّاب خانخانان - شاہ نے اُن سے بھی اُس
کے معنے پوچھے تب نوّاب نے عرض کی کہ قبلۂ
عالم اِس بسن پد کے معنے کسی اَور نے بھی کہے
ہیں ؛ اِس بات کے سُنتے ہی جس جس نے جو
جو معنے کہے تھے حضرت نے کہہ سُنائے تب
نوّاب نے کہا جہاں پناہ یہ تو اُس بسن پد کے
معنے نہیں پر ہاں ہر ایک نے اپنے دِل کا خیال
بیان کیا ؛ شاہ نے فرمایا سو کیا - بولا وہ بچارا

اِس میں آئے بیربل - حضرت نے اُن سے بھی

اُس کا ارتھ پوچھا - بیربل بولے پیر و مرشد بار

کہتے ہیں دروازے کو سو جسودا دروازہ یہ کہتی

ہی کہ ہی کوئی برج میں دوست ہمارا جو گوپال

کو نجانے دے ✻ اِتنے میں راجا تو ڑل مل آئے

حضرت نے اُن سے بھی معنے پوچھے - کہا حضرت

سلامت جسودا کرشن کی ما - بار کہتے ہیں پانی

کو اور دروازے کو سو پانی کا دروازہ ہوا

گھات - اِس سے معنے یے ہوے کہ جسودا

گھاٹ گھاٹ یہ کہتی ہی کہ ہی کوئی برج

میں دوست ہمارا جو گوپال کو چلنے سے باز رکھے

✻ اِس درمیان آئے مُلّا فیضی - بادشاہ نے

اُن سے بھی وِس کے معنے پوچھے - جواب دیے

تب لاحول و لا قوت اِلّا باللہ پڑھ آرسی
پر تھوک یہ کہہ پھینک دیا کہ جب ایسا بُرا منہہ
ہی تبھی کوئی رستے میں ڈال گیا ہی

نقل ۸۸

اکبر بادشاہ کے روبرو ایک روز میاں
تان سین نے سورداس کا یہہ بشن پد گایا

جسُدا بار بار یہہ بھاکھی
ہی کوُ وبرج میں ہتو ہمارو
چلت گپُاَل ہرا کھی

شاہ نے اِس کے معنے پوچھے - میاں نے کہا
جسودا گھڑی گھڑی یہہ کہتی ہی - ہی کوئی
برج میں دوست ہمارا جو چلتے ہوئے گوپال
کو رکھے ٭ میاں تو گاے سمجھاے چلے گئے

مہاراج دُنیا کے آرام کے لئے اور چند روز کی
زندگی کے واسطے اُس نے بھائی کو مروایا
اور دین و دُنیا کو گنوایا - اِس میں اُسکے
ہاتھ کیا آیا جب بھائی بھائی سے یہ سلوک
کرے تب دوسرے سے کوئی کیا توقع رکھے ٭
تُلسی داس جی بولے کہ اِس بات کا اچرج
مت کرو ایسے اور بھی ٹھور رکھا ہی

بدھِک بدھیو مِرگ بان تیں رُدھر دیو بتلائے
اِتہت اِن ہت ہوت ہی تُلسی وِردِن پائے

نقل ۸۷

ایک روز کسی حبشی نے راہ میں درپن
پڑا پایا - ہاتھ میں لے جوں اِس نے اُس میں
دیکھا تو اِسے اپنے چہرے کا عکس نظر آ

سچ کہا ہی کہ اناڑی کا سودا بارہ باٹ

نقل ۸۶

ایک زمیندار کے دو بیٹے۔ پر اُن دونوں میں ہمیشہ ان بنا ؤ رہتا ایک ایک کو نہ دیکھ سکتا ٭ جب اُنکا باپ مر گیا تب وے دونوں آپسمیں لڑنے لگے - نِدان بڑے بھائی نے چھوٹے کو زمینداری سے بے دخل کر مار کے نِکال دیا تب وہ کِسی اور بڑے زمیندار کو اپنے بڑے بھائی پر چڑھا لایا - اُس نے آتے ہی کھڑی سواری اُسے مار لیا اور ساری زمینداری کو اپنے قبضے میں کیا - جو چڑھا لایا تھا وِسے کچھ کھانے کو کر دیا ٭ یہ ماجرا دیکھ کِسی نے تُلسی داس گسائیں کے آگے جا کے کہا کہ

بچارا کہ چار پیسے کے پان سے تو میاں کا پیٹ
نہ بھریگا اِس سے بہتر ہی کہ چار پیسے کی چار
روٹی لے چلوں تو میاں پیٹ بھر کھائیگا ٭
یہہ من میں ٹھان چار پیسے کی چار روٹی لے
رومال میں باندھہ بغل میں دبا میاں کے سونہیں
جا کھڑا ہوا ٭ منشی نے اِسے دیکھتے ہی جوں
اِشارہ کر ہاتھہ بڑھایا توں اُس نے رومال
سے دو روٹی کھول اُس کے ہاتھہ دیں - وہ
دیکھتے ہی ہکا بکا ہو لگا اِس کی طرف دیکھنے
اُسکے طور بگڑے دیکھہ یہہ بولا بھوندی
طرح دیدے پھاڑ پھاڑ دیکھے سنی کے میں
نہیں کھائی دو اور دھری ہیں ٭ یہہ سن
وہ شرمندہ ہوا اپنے دِلمیں کہنے لگا کہ کِسی نے

نہ وُہ جسم ہی رہا اپ کہا دبلا ہو گے - اِتنا

کہہ چنپٹ ہوا

نقل ۸۵

کسی مُنشی کے پاس ایک باہرے کا سیّد

نوکر ہوا - ایک روز اُس کا خدمتگار حاضر

نہ تھا - اُس نے اِسّے کہا کہ آج میرا آدمی

حاضر نہیں ہی تم میرے ساتھ دربار چلو ؞

کہا بہت خوب - اِس نے اُسے چار پیسے دیکے

کہا کہ سارے دِن دربار میں رہنا ہوگا

تم اِن کے پان لیکے چار گلوری لگوا لاؤ جب

میں اِشارہ کروں تب دو کھیلی دیجو - میں

آگے جاتا ہوں تم لیکر جلد آؤ ؞ یہ کہہ وُہ تو

دربار میں جا بیٹھا اور اِس نے اپنے دل میں

نے چار گھاؤ کھائے اور کوئی کہتا تھا پانچ ‫:‬
غرض ہر ایک نے اپنے لڑنے اور زخم
کھانے کا احوال بیان کیا ‫:‬ ایک بوڑھا جو
اُن کے پاس بیٹھا تھا بولا کہ میاں جوانی میں
ہم بھی سینکڑوں لڑائیاں لڑے اور ہمنے بھی
ہزاروں زخم کھائے ایسے کہ کہیں بدن پر
تل دھرنے کی جگہہ باقی نہیں رہی - ہمارے آگے
اب کوئی کیا لڑیگا اور کیا زخم کھائیگا ‫:‬ اِتنی
بات کے سُنتے ہی اُن میں سے ایک جوان
خفا ہوکر بولا بڑے میاں کپڑے تو اُتارو
دیکھیں تم نے کہاں کہاں گھاؤ کھائے ہیں ‫:‬
وہ ہنسکے بولا میاں گبرو نہ وہ زمانہ رہا نہ وے
دن رہے نہ وہ جوانی رہی نہ وہ تیاری رہی

اور اُسکا مُلک بہ مُلک پھرنا - جس مُلک
میں گیا وہاں اُس نے ہر مُلک کا آدمی دیکھا
تو حیران ہوا - ندان کِتنے مہنے میں پھر کر
گُرو کے پاس آیا اور تعجب کر پوچھا کہ
مہاراج یہہ کیا آشچرج ہی جو ایک مُلک
میں آدمی پیدا ہوے اور دوسرے میں جا کر
بسے - گُرو بولا کہ بابا تو جو اِتنا اچنبھا کرتا ہی
سو کیا تو نے یہہ دوہا نہیں سُنا ٭

کِت کاشی کِت کاشمیر کِت خُراسان گُجرات
پرسرام یا جیو کی پرالبدھ لیجات

نقل ۸۴

کسی مکان کے بیچ پانچ سات سِپاہی بیٹھے
آپسمیں ڈینگ مارتے تھے - کوئی کہتا تھا میں

یوں سمجھے قاضی نے کہا جو تم نے کہا سو سب
سچ پر اب تم ہم سے کیا چاہتے ہو - یے بولے ہم
بے اولاد ہیں ہمارے مال اموال کے وارث
ہو کے مرنے سے مکتی دیجو - یہی ہم چاہتے ہیں ٭ آخر
مارے شرم کے قاضی نے اُن کی بات قبول کی
اِسلئے کہ کوئی اور نہ سنے

نقل ۱۳۴

ایک کھتری دُنیا سے بیزار ہو کے کِسی نانک
پنتھی فقیر کا جا کے چیلا ہوا ٭ کِتنے ایک دِن پیچھے
ایک روز اُس نے گُرو سے کہا کہ مہاراج میرا
جی چاہتا ہی جو آپ کی آگیا پاؤں تو پرتھوی
پر دچھنا کر آؤں - گُرو نے کہا بہت اچّھا ٭ اِتنی
بات کے سُنتے ہی وہ ڈنڈوت کر بدا ہوا

ننندولالیجاکے سو نہیں کھڑے ہو دکھلاؤ جب
وہ پہچان کے تمہیں پاس بلاوے تب
تم نرالے لیجاکے سب احوال کہیو - اپنا احوال
سن کر وہ تمہیں بہتیرا ڈراویگا پر تم نہ ڈریو
اور کہیو کہ جو تم ہماری بات نہ مانو تو چلکر میانجی سے
پوچھ لو ٭ غرض وے دونوں جون پورگئے
اور اُسی طرح کرنے لگے تب قاضی نے اِن دونوں
کو پاس بُلاکر پوچھا کہ تم یہہ کیا کرتے ہو - بولے
نرالے چلو تو اِس کا احوال کہیں ٭ قاضی
اُنہیں نرالے لیگیا پھر اِنھونے سب احوال کہہ
سنایا - قاضی نے دریافت کیا کہ کسی شخص
نے اِنہیں بہکایا ہی اِس سے اِن کی بات
بن قبول کئے کسی طرح میرا پیچھا نہ چھوڑینگے ۔

ملا نے اُن دونوں کی بات سنکے دِل میں بچارا کہ یہ ہیئے کے اندھے مت کے ہینے گانٹھ کے پورے میری قِسمت سے آن مِلے ہیں۔ اِن سے رُپیے کیوں نہیں لیتا۔ یہ سمجھ اِن نے اُن سے کہا کہ ہزار رُپئے دو اور گدھے کو باند جاؤ۔ ایک برس کے بعد آکر لے جائیو ؛ اِس بات کے سُنتے ہی وے جھٹ تو ڑا دے گدھا باندھ گئے اور ایک برس بعد پھر آن موجود ہوئے۔ اُن کو دیکھتے ہی میانجی نے کہا کہ دو دِن پہلے آتے تو اُسے پاتے اب تو وہ جا کے جون پور کا قاضی ہوا ؛ اُنھوں نے پوچھا کہ اب ہم اُسے کیوں کر پاویں۔ میانجی نے کہا کہ تم اُس کے باندھنے کی رسّی اور دانا کھانے کا

نیکی برباد گنہ لازم - میں نے ایک برس محنت مشقت کر لکھا پڑھا گدھے سے آدمی بنایا اور تم نے یہہ بات کہی - اب مجھے تم سے کچھ لینے پانے کی اُمید باقی نہ رہی * یہہ یاس کا کلمہ سن کر لڑکے کا باپ تو میانجی کو بہت سی تسلی دے کے چلا گیا پر ایک دھوبی اور دھوبن بڑے دولتمند جنھوں نے میانجی کی زبانی یہہ بات رستے میں کھڑے ہو کے سنی تھی کہ میں نے تمھارے لڑکے کو برس دن میں لکھا پڑھا گدھے سے آدمی کیا - وے دونوں جورو خصم آموجود ہوئے اور ہاتھ جوڑ کر بولے کہ میانجی صاحب جتنے رُپیے چاہئے لیجئے اور میرے بھی گدھے کو آدمی بنا دیجئے

کہ راجا صاحب تمھارے یہاں مل لفظ کے کیا معنے ہیں - وو نہیں سمجھ کر راجا نے جواب دیا کہ مرزا صاحب جو لفظ پنگ کے معنے ہیں سوئی مل کے ہیں ۞ اِتنی بات کے سُنتے ہی وُہ مُغل بہت شرمندہ ہوا ۞ خلاصہ اِسکا یہہ ہی کہ سنسکرت میں یہے دونوں نام گوہی کے ہیں

نقل ۸۲

کِسی مکان پر کوئی مُلا بیٹھا لڑکے پڑھاتا تھا کہ ایک لڑکے کے باپ نے آکر اُسے اُلہنا دیا - میاں صاحب میرے بیٹے کو آپ نے کچھہ نہ تربیت کیا - دیکھو ابتک چھوکروں کے ساتھہ وُہ کھیلتا پھرتا ہی اور میرا کہا نہیں مانتا ۞ اِتنی بات کے سُنتے ہی میانجی خفا ہو کر بولا کہ ہاں صاحب

یہاں جا کر مرید ہوا اور پیر کی خدمت میں

آٹھوں پہر حاضر رہنے لگا ٭ خدا کا چاہا چھ مہینے کے

عرصے میں اُس کا ایسا کام بگڑا کہ کھانے

پینے کو بھی کچھ پاس نہ رہا ٭ ایک روز

پیر نے اِسے اُداس دیکھ کہا کہ بابا کیا

تو نے یہ مثل بھی نہیں سُنی جو اِتنا فکر کرتا ہے

الہ داد کرتا ہے - باتیں کیا نکرتا کیا نکرے

ہاتھی مار گرد میں ڈالے ادنا کے سر چھتر دھرے

٭ ریتے بھرے بھرے ڈھلکاوے

پھر کرے تو پھیر بھرے ٭

نقل ۱۸

ایک روز اکبر بادشاہ کے روبرو کسی مغل

نے از راہ ظرافت راجا تورل مل سے پوچھا

نقل ۷۹

کسی دِن تلسی داس گسائیں کِتنے ایک آدمیوں کے بیچ کہیں بیٹھے گیان چرچا کرتے تھے - اِس میں اُس راہ سے کِسیکی برات آ نِکلی - اُس کے باجے کی آواز سُن سب کے من ڈُ چنتے ہوئے تب تلسی داس ہنسے - اُن کو ہنستا دیکھ اِن میں سے کسی نے پوچھا - مہاراج آپ کیا دیکھکر ہنسے - جواب دیا دُنیا کی بھول دیکھ کے - بولا سو کہا - او تر دیا

پھولے پھولے پھرت ہیں آج ہمارو بیاہ
تلسی گائے بجائے کے دیت کاتھ میں پاے

نقل ۸۰

ایک بڑا سوداگر کسی صاحب کمال فقیر کے

وہ بولا میں دے چکا ہوں۔ اِس میں دونوں
مے رد بدل ہونے لگی اور بہت سے لوگ جمع
ہو گئے تب اُس بانکے نے کہا کہ میں نے ایک
بھلے آدمی کے دیکھتے اِسے رُپیا دیا ہی نہ مانے
چلکر پچھوا دوں۔ لوگوں نے کہا اچھا تو کہتا ہی
تو دوکان پر کیوں نہیں لیجاتا ❊ لوگوں کے کہے
سُننے سے حلوائی نے دوکان پر جا اُس مِٹھائی
کھانے والے سے پوچھا کہ میاں صاحب آپ سچ
کہئے اِسنے مجھے رُپیا کب دیا ہی۔ وہ بولا
ابے اِنھوں نے تو رُپیا میرے دیکھتے دیا ہی
پر کہیں میرا رُپیا نہ بھول جائیو ❊ یہ کہہ وے
دونوں اُسے احمق بنا مِٹھائی کھا چلے گئے اور
وہ بیچارا رو جھیکھ کر بیٹھ رہا

پانی سے زیادہ شہر میں کوئی پکھال نہ بناوے ٭
اُسی وقت منادی پھر گئی - تبھی سے بارے
تین من پانی سے زیادہ پکھال نہیں بنتی

نقل ۷۸

دو دِلّی کے بانکے بر اپنے مال کے اُڑانے کھانے والے
کسی مکان سے یہ منصوبہ کرکے اُٹھے کہ آج
بازار میں چلکر بن کوڑی پیسے مُفت کی
مٹھائی کھایا چاہئے - اور آگے پیچھے ہو بازار میں
پہنچے ٭ ایک تو جاتے ہی رُپے کی مِٹھائی تُلوا
لگا حلوائی کی دوکان پر بیٹھہ کھانے اور دوسرے
نے اُسی حلوائی سے آٹھہ آنے کی مِٹھائی اور
ادھیلی کے ٹکے لے اپنی راہ لی - حلوائی نے دوڑ
کر اُس کا دامن پکڑا اور کہا میرا رُپیا دو

پہونسیلے پہنچے ۞ ایک روز کسی سقّے کا بیل
معہ بھری پکھال اُس رسّے کے پاس آن کر
کھڑا ہوا - سقا کسی کے یہاں مشک ڈالنے
گیا تھا - بیل نے رسّے سے سر کھجلایا اُس کے
سینگ کا جھٹکا جو لگا ایک بارگی سب گھنٹا لیاں
باج اُٹھیں - سُنتے ہی شاہ نے فرمایا دیکھو کون
ہے - لوگوں نے جھٹ خبر دی کہ پیر مُرشد اور
تو کوئی نہیں ایک بہشتی کا بیل ہے - حکم کیا
کہ اُسے اُس کے مالک سمیت لے آو - لوگ
فی الفور لے گئے ۞ شاہ نے فرمایا کہ اِسکی پکھال
کا پانی تو لو کہ کتنا ہے - تو لکر عرض کی
کہ جہاں پناہ ساڑھے پانچ من ہے - سُنتے ہی
بادشاہ نے حکم کیا کہ آج سے ساڑھے تین من

کھسکانے اور اُسکے ساتھکے لقندرے لگے اُڑانے
اسمیں کسی نے ڈینگھکر اینگ سے کہا کہ
دیکھو کسی کی کوڑی کوئی اُڑا وے -
دوسرے نے جواب دیا کہا تم نے یہہ مثل نہیں
سُنی جو تعجب کرتے ہو کہ اندھی پیسے کتا کھاۓ
پاپی کا مال اکارتھہ جاۓ

نقل ٧٧

شاہ جہاں بادشاہ نے دیوان خاص سے لے قلعے
کے صدر دروازے تک ایک رسّا بندھوا دیا تھا
اور اُس میں گھنتا لیاں گنتھوا چھور اُس کا پیچ
بازار میں ڈلوا دیا تھا - اِس واسطے کہ جو
کوئی فریادی آوے سو اُس رسّے کو کھینچے -
گھنتا لیاں باجیں اور فریادی کی فریاد حضور میں

کا پرمان کیا ہی - جواب دیا کہ پرسدھ کو
پرمان کچھو ناہیں چاہیت - بولا سو کہا - اُس
نے کہا کہ چوکا یاہی کے مارگ سوں نکسیو ہی ؛؛
اس بات کے سنتے ہی وہ پنڈت ہنسکر رہ گیا

نقل ۷۶

ایک سپاہی بڑا جواری تھا جب جیتتا تب
مارے خوشی کے ایسا غافل ہو جاتا کہ کوئی
اُس کے پہرنے کے کپڑے بھی اُتار لیتا تو بھی اُسے
معلوم نہ ہوتا اِسی اُمید سے دس پانچ
ٹھگ ہر وقت اُسکے ساتھ لگے رہتے اور
جد قا ہو جاتے تد اُس کا مال اُڑا لیتے ایک
روز وہ کسی غیر محفل میں جوا کھیلنے کو گیا
اور لگا جیت رپئے اپنے آگے سے پیچھے

کہا ہی - اُس نے ہاتھ باندھہ کھرے ہو جواب
دیا کہ پیر مُرشد آپ تول میں تو جتنے سب آدمی
ہیں وُتنے ہی ہو پر مول میں نہیں کہہ سکتا
کیوں کہ ایک رتی سمجھ نہیں مِلتی جو رتی ہاتھہ
لگتی تو وُہ بھی کہہ دیتا ❊ اِس لطیفے کے سُنتے
ہی بادشاہ نے اُن سب کو پان دے یہہ کہہ چھوڑ
دیا کہ والی کھانا تمھارا حق ہی شوق سے کھاؤ
اور عرضی دینے والے کو نِکال دیا

نقل ۷۵

ایک متھرا کا چوبے کہیں بیل پر سوار پوریاں
کھاتا چلا جاتا تھا کسی کانیہ کبج پنڈت نے دیکھکر
طعن کی راہ سے پوچھا کہ چوبے جی تم چوبے
میں نہ بیٹھہ بیل پر بیٹھے پوریاں کھاتے جاتے ہو سو اِس

کسی کا لے کوئی وے درمیان دو آنے روپیہ لیتے ہیں ٭
عرضی کے پڑھتے ہی بادشاہ نے سارے شہر کے
دلالوں کو پکڑوا منگوایا اور پوچھا کہ تم کس
بات کی کوڑی کھاتے ہو - عرض کی جہاں پناہ
بازار میں کوئی چیز آوے پہلے ہم اُس کا مول
تول کر دیتے ہیں تب خریدار لیتے ہیں - اِسی
بات کی کمائی کھاتے ہیں ٭ شاہ نے فرمایا
ہمارا مول تول کر دو تو تو خیر نہیں تو سب
کو شہر سے نکال دونگا ٭ اِتنی بات کے سنتے
ہی اُن میں جو چودھری تھا سو بانٹ کا نتا لے
آگے بڑھ بیٹھا اور لگا اِدر اُدھر تکٹی میں بانٹ
ڈال تولنے - اِس میں کچھ دیر ہوئی تو
بادشاہ نے کہا کہتا کیوں نہیں گھڑی گھڑی تولتا

عشق کیا شی ہی کسی کامل سے پوچھا چاہئے ؀
تبھی سے وہ صاحب کمال کی تلاش میں تھا
کہ ایک گسائیں اسے ملا - اِن نے ڈنڈوت
کر اُس سے پوچھا کہ مہاراج عشق کیا شی سمجھ
دیا کرتا ہے ؀ اس کی بات سن اُسنے کہا
بابا میں نے تو اپنے گرودیو کے منہ سے یوں
سنا ہی

عشق اُسی کی جھلک ہی جوں سورج کی دھوپ
جہاں عشق تہاں آپ ہی قادر نادر روپ

نقل ۷۸

ایک دن عالمگیر بادشاہ کو کسی نے عرضی دی
کہ جہاں پناہ آپ کی بادشاہت میں دلّال دن
دوپہر بیچ بازار کے رعیت کو لوٹتے ہیں - مال

کی پوٹلی جھولی سے نکال اِتنا کہہ اُسکے ہاتھہ دی
کہ بھنا لے - اِس بات کے سُنتے ہی بادشاہ
نے دانتوں میں اُنگلی دے کہا - شاہ صاحب تم
نے کیا کہا - بولا بابا سچ کہا - پھر بادشاہ نے پوچھا
کہ تمھارا سوال کیا تھا - جواب دیا بابا سوال
جواب کچھہ نہ تھا فقیر کو ایک بات کا اِمتحان
کرنا منظور تھا سو کیا - تیرے شہر کے دروازے
پر لِکھا ہی کہ ہمتِ مردان مددِ خدا سو فقیر
کے گمان میں جھوٹھہ آیا تھا سو نہیں کِسی نے سچ
لکھا ہی ؛ اِتنا کہہ فقیر وہاں سے روانہ ہوا

نقل ۷۳

ایک کایتھہ نے گانے بجانے کی صحبت میں کِسی
گوّیے سے یہہ شعر سُنا ؛

رات اُلیچتے اُلیچتے اُسے چوبیس پہر گزرے
تب سمندر نے آدمی کی صورت بن آن کے
پوچھا کہ فقیر تو کبہوں دریا کا پانی نکال پھینکتا
ہی - بولا پانی اُلیچکے سوا سیر موتی لونگا -
جواب دیا تجھے سوا سیر موتی ملے تب تو پانی نہ
اُلیچیگا - کہا نہیں - بولا آنکھ موند میں تجھ موتی
دیتا ہوں - اِس نے آنکھ بند کی اُس نے بہت
ہی بڑے بڑے سوا سیر کوڑے موتی لا اِسکے
ہاتھ دے پہلے دُعا دے پھر اُسی دروازے
میں آبیٹھا - بادشاہ کو خبر ہوئی - شاہ نے وزیر
کو بھیج اُسے حضور میں بلوایا اور تعظیم تواضع
کر مسند پر بٹھایا ٭ غرض جب شاہزادی
کو اُس کے سو نہیں کہا کیا تب فقیر نے موتی

رسم ہی کہ سوا ان بیندھے موتیوں سے
شوہر دُلہن کی گود بھرے ⁂ وزیر نے پھر جا فقیر
سے بادشاہ کی کہی بات کہی - وُہ بہت خوب
کہہ بوریا بدھنا باندھ موتی لینے سمندر کی
طرف گیا اور وزیر شاہ کے پاس آیا - اُس
وقت شاہ نے فرمایا کہ جو وُہ فقیر صاحب کمال
ہوگا تو موتی لاویگا نہیں آپ ہی چلا جاویگا اور
جو صاحب کرامات ہی تو اُسے بیٹی دینے
میں ہمیں کچھ ننگ نہیں کیونکہ وِسکا مرتبہ
ہم سے اعلیٰ ہی - وہ جسے چاہے بات کی
بات میں بادشاہت بخش دے ⁂ القصہ
وُہ فقیر سمندر کے کنارے پہنچ کمر باندھ
بدھنا ہاتھ میں لے لگا پانی اُلیچنے جب دن

مطلوب ہی سو فرمائیے بندہ لا حاضر کرے ❊
فقیر نے کہا میں بادشاہ کی بیٹی سے شادی کرونگا
تو مجھے لا دے یہ دوا دے اِس کے مجھے اور
کچھ نہیں چاہئے ❊ اِس بات کے سنتے ہی وزیر
لاجواب ہو پھر کر بادشاہ کے پاس پہنچا - شاہ
نے کہا کیوں فقیر کو رخصت کر آیا - عرض کی
جہاں پناہ جو فقیر نے بات کہی ہی تقصیر معاف
غلام زبان پر نہیں لا سکتا - حضرت نے فرمایا
کہ لکھ کر دے - اِس نے اُن کے فرمانے سے
اُس کا سوال لکھ کر گذرانا - شاہ نے سوچ سمجھ
کے کہا کہ کچھ مضایقہ نہیں اُس سے کہو سوا
سیر ان بیندھے موتی لے آ تیری شادی
شاہزادی سے ہوگی - بادشاہوں کے یہاں پھر

رکھی ٭ اِتنا سمجھ پھر پھرا اور یہہ اِرادہ کر
بوریا بچھا اُسی دروازے میں جا بیٹھا کہ اِس
شہر کے بادشاہ کی بیٹی کو میں بیاہونگا - اِس
میں اُسے وہاں تین دِن بِن دانا پانی کے
گذرے - درمیان اِس کے اُس نے نہ کِسو سے
بات کہی نہ کچھ کھایا بلکہ شہر کے لوگوں نے کھلانے
پلانے کا بہت قصد کیا پر اُس نے اُنھیں کچھ جواب
ہی ندیا ٭ یہہ خبر وہاں کے بادشاہ کو پہنچی -
شاہ نے وزیر کو بلا کر فرمایا کہ اِسی وقت تو
جا کے فقیر کو جو مانگے سو دے کر کِھلا پلا رُخصت
کرآ ٭ شاہ کے فرماتے ہی وزیر نے فقیر سے جا کے
کہا کہ شاہ صاحب حضور کا حکم مجھے یوں ہی ہے
کہ جو فقیر کا سوال ہو سو پورا کرآ - جو آپ کو

وہاں سے نکل کھڑا ہوا

نقل ۷۲

ایک سپاہی لکھا پڑھا دُنیاداری کے کاروبار سے خفا ہو کر فقیر ہو گیا اور لگا ملک بملک پھرنے ٭ کسی شہر کے دروازے کی اوپرلی چوکھٹ میں کچھ لکھا تھا سو لگا بانچنے - اِس میں اُس نے ایک کونے میں لکھا دیکھا کہ ہمت مرداں مددِ خدا - اِس عبارت کے پڑھتے ہی خفا ہو بولا کہ جس شہر کے دروازے پر یہہ جھوٹھ لکھا ہی اُس کے اندر نہ جانئے کیا کچھ ہوگا ٭ یہہ کہہ شہر میں نجا اُلٹا پھرا اور کتنی ایک دور جا کر آپ ہی آپ سوچا کہ میں نے بنا آزمائے کسی کے لکھے کو جھوٹھ کہا یہہ بڑی بے انصافی

پھر رہیگا سو سورگ کا راجا ہوگا - اِسی دِن
کے لئے میں بارہ برس کی عمر سے جوگ
کماتا تھا سو دِن بھگوان نے آج دِکھایا اور میرا
منورتھ پورا کیا ٭ کوتوال بولا تجھے کیوں سولی دونگا
میں ہیں اِس سولی پر چڑھونگا کوتوال کے سولی
چڑھنے کی خبر پاکر صوبے نے کہا تو نچڑھ میں
چڑھونگا - صوبے کی خبر پاکر دیوان نے کہا میں
چڑھونگا ٭ آخر اِسی طرح بحثا بحثی کرتے وہاں
کا راجا ہی سولی پر چڑھ مرا تب اُس گسائیں نے
چیلے سے کہا کیوں میں تجھے کہتا تھا کہ یہاں نہ رہ
اب بھی رہیگا - بولا مہاراج میری وہی مثل
ہے کہ بھولے بنئے بھیڑ کھائی پھیر کھائے تو رام
دُہائی ٭ یہ کہہ وہ اُسی وقت گرو کے ساتھ

کرتے پکڑا گیا - راجا کے یہاں سے اُسے سولی
دینے کا حکم ہوا ۞ کوتوال اُس چور کو سولی
کے پاس لیجا کر کیا دیکھتا ہی کہ چور دبلا اور
سولی موٹی ہی - یہہ خبر راجا سے جا کہی -
راجا نے فرمایا کہ کِسی موٹے کو پکڑ کر سولی دو اور
چور کو چھوڑ دو ۞ راجا کا حکم ہوتے ہی کوتوال
اُس گُسائیں کے چیلے کو سب سے موٹا دیکھ
پکڑ کر سولی کے پاس لے گیا اور چاہے کہ اُسے
سولی پر چڑھاوے کہ اِس میں خُدا کا چاہا
وہ گُسائیں بھی وہاں آپہُنچا اور اپنے چیلے کو
سولی دیتے دیکھ بولا اوبابا کوتوال تو اِسے
سولی نہ دے - اِس کے بدل مجھے دے ۞ کوتوال
نے پوچھا کیوں - گُسائیں نے کہا اِس سولی پر جو

میں جا کے دیکھے تو سب جنس ایک ہی بھاؤ بِکی
وہ مارے خوشی کے گھی چینی اور میدا لے آیا اور
ملیدا بنا جلدی سے گرو کے آگے لا رکھا ٭ گرو نے
پوچھا بابا آج کیا ہی جو تو نے چورما بنایا۔ بولا
مہاراج یہاں سب چیز ایک ہی بھاو ہی۔ اِس لئے
میں نے ملیدا ہی کیا۔ یہہ سن گسائیں نے چیلے سے
پوچھا اس گانو کا نام کیا ہی۔ بولا بہر بھوم
پور۔ کہا یہاں سے ابھی چلو نہیں تو کیا جانئے
کس بلا میں پڑیں۔ چیلے نے جواب دیا میں تو
اِس شہر سے نجاؤنگا آپ کا جی چاہے تو تیرتھ جاترا
کر آئیے ٭ نِدان گسائیں اکیلا گیا اور چیلا وہاں
رہا ٭ برس ایک میں وہ کھا پی کر ایسا موٹا
ہوا کہ پہچانا نجاتا تھا ٭ ایک روز کوئی چور چوری

اُٹھا اُس کی سب مٹھائی کھا گیا اور لگا کچھ
نقد مانگنے اور کہنے کہ میں نے تیرا حکم بجا دیا
اِس کا محنتانہ مجھ دے ❁ نِدان دھکا دھکو کے
اُس نے ایک روپیا لے ہی کے چھوڑا تب کئی ایک
آدمیوں نے آکے حلوائی سے پوچھا کہ میاں یہ
کیا معاملہ تھا کہو تو سہی - بولا صاحب کہوں
کیا اپنا سر یہ وہی مثل ہی جو کانوں سنتے تھے
سو آنکھوں دیکھی کہ اُلٹا چور کتوالے ڈانڈے

نقل ۷۱

ایک گُسائیں اپنے چیلے کو ساتھ لے کسی شہر سے
تیرتھ کرنے کو نِکلا اور چلا چلا ایک گانو میں
پہنچا ❁ تب اُسنے چیلے کے ہاتھ بازار سے کچھ
کھانے پینے کا سرانجام منگوایا ❁ چیلا جو بازار

کوئی اُنکا آشنا بولا کہ بھائی صاحب یہہ شادی
یا لوتالوت - جواب دیا بندۂ درگاہ جب کرتے ہیں
تب لوتالوت ہی کرتے ہیں - تمنے یہہ مثل نہیں
سُنی - کیا لیگئے شیرشاہ کیا لیگئے سلیم شاہ دُنیا
میں سخی اور شوم کا نام ہی رہجاتا ہی

نقل ۷۱

مُفت برانے مال کے کہانے والے دلّی کے بانکے
مشہور ہیں ※ ایکدِن کوئی بانکا کسی حلوائی
کی دوکان کے سونہیں جاکھڑا ہوا اور لگا اُسکی
مٹھائی کی طرف آنکھہ پھاڑ-پھاڑ-دیکھنے ※ وہ بولا
دیکھتے کیا ہو صاحب - اسنے ایک مِٹھائی کی طرف
اِشارہ کرکے پوچھا یہہ کیا ہی ※ اُسنے کہا
کہاجا - اِتنی بات کے سُنتے ہی یہہ جھٹ تہال

نہیں ٭ غرض مٹھائی کھاتے کھاتے اُن کے بدن میں کُھجلاہٹ ہوئی تب تقلیدیوں نے تو مارے ڈر کے نہ کُھجلایا پر اصل پوستی یہہ کہہ کھجلانے لگے کہ اِس ایک ایک گھسّے پر ہزار ہزار روپے صدقے ہیں ٭ وزیر نے اُسی دن نہ کھجلانے والوں کو جواب دیا اور کھجلانیوالوں کا درماہا دونا کیا

نقل ۶۹

ایک کروڑپتی بڑا بخیل تھا - اُسکے گھر میں کچھ شادی آئی تو اُس نے اپنے باورچی وبکاولوں کو بُلاکر کہا کہ ایک سیر کی سولہ روٹی پکاؤ اور دوکے آگے ایک رکھّو - اِسمیں کھاوے سو کھاوے بچے سو باندھہ لے جاوے ہرگاہ کِسیکو منع نہ کرو ٭ وے بولے بہت خوب ٭ یہہ بات سُنکر

شمار کیئے گئے تب پوستی خانے کے داروغہ نے وزیر
سے جا کہا کہ خداوند جو اِسیطرح سے درماہا ملے جائیگا
تو معلوم ہوتا ہی کہ کئی برس میں سارا شہر
پوستی ہو جائیگا - ایک ہی برس میں کئی
ہزار جمع ہوئے ہیں ؛ وزیر نے جا بادشاہ کو
خبر پہنچائی - شاہ نے فرمایا کہ اِسے تجویز کر کے
دیکھو جو اصل پوستی ہی وسے رہنے دو اور جو
تقلیدی ہی وسے نکال دو ؛ یہہ حکم ہوتے ہی
وزیر نے گھر آئے سب کی دعوت کی اور بہت سا
پوست پلایا جب خوب نشے میں ہوئے تب اُنہیں
کھانے کو مٹھائی دی اور یہہ کہا کہ جو کوئی
کھانے کے وقت بدن میں ہاتھ نہ لگاویگا سو
ہزار روپئی پاویگا اور اپنا بدن کھجلاوے سو

نے مِلکر کسی کے کہے مُنہ سے عرضی دی کہ پیر مرشد
آپ کے عمل میں ہم بھوکھے مرتے ہیں اور سب
چھین کرتے ہیں - حضور سے کھانے رہنے کی جگہہ ہو
جاے تو ہماری جان بچے ٭ عرضی کے پڑھتے ہی
شاہ نے وزیر سے کہا کہ پوستیوں کے کھانے
رہنے کا بندوبست ابھی کردو تاکہ یہ بچارے
کسی بات کا دُکھ نپاویں ٭ حکم ہوتے ہی پوستی
خانہ بنوا وزیر نے تمام شہر کے پوستیوں کو
وہاں رہنے کو جگہہ دے اُن کا درماہہ کر دیا ٭ یہ
خبر سُن سارے شہر کے سُست کم چور کاہل بے
محنت کے روٹی لینے کے لالچ سے وہاں آے آے
پوستیوں میں نام لکھاے رہنے لگے ٭
غرض ایک سال کے عرصے میں کئی ہزار پوستی

گھر چلا آیا ❊ بینوانے یہہ مثل کہی دوست ❊

ویدؔ دنیا کا ہمدم کیجیے

کسکی شادی و کس کا غم کیجیے

بیراگی نے یہہ

سادھو یا سنسار میں سبھی بتاؤ لوگ

کاکو کریں مناونو کاکو کیجیے سوگ

سنّیاسی نے یہہ

آئے ہیں سو جائینگے راجا رنک فقیر

ایک سنگھاسن بیٹھکر باندھے جات زنجیر

جوگی نے یہہ

جوگی تھا سو اُٹھ گیا آسن رہی بھبوت

نقل ۶۸

شاہ جہاں بادشاہ کے یہاں کئی ایک پوستیوں

دوہہ

ہمیں لکھو ہمار لکھہ ہم ہمار کے بیچ

تلسی الکھے کہا لکھے رام نام بیچ بیچ

اِس دوہے کو سن وہ مارے شرم کے لاجواب ہو چپ چاپ چلا گیا

نقل ۶۷

کسی شہر کے عامِل کا باپ مر گیا - وہ اُس کے غم میں بہت دِلگیر بیٹھا تھا - شہر کے سب آدمی کیا دُنیادار کیا فقیر ہندو مسلمان ملکر اُس کے یہاں ماتم پرسی کو گئے اور بیٹھہ کر چلے آئے پر چار شخص اُس کی بیقراری دیکھہ اُن میں سے بیٹھے رہے - بینوا - بیراگی - سنّیاسی - اور جوگی اور ہر ایک اپنے اپنے طور کی مثل

مرگئی جو ہمارے کُنبے کو پرورش کرتی
تھی - یہہ بولا بھائی صبر کرو ہمیں تمھیں
کالے ہون سے لینا نہیں - اُسنے پوچھا
تمھارا کیا نقصان ہوا - جواب دیا میرے
بھی پکانے کی ہانڈی پھوٹ گئی ؛ اِس بات کے
سنتے ہی وہ غریب ہنس کر بولا کہ ہاں بھائی
سچ کہتے ہو

نقل ۶۶

ایک روز تُلسی داس گسائیں بنارس میں
کسی مکان پر بیٹھے تھے کہ ایک رُوکھا فقیر نے آکے
سوال کیا الکھہ - اِسکے جواب میں تُلسی داس
نے یہہ دوہا کہہ سُنایا

جس کے حکم سے دس لاکھ رپئی اور لڑکی دینے

کا اقرار کر آیا - بولا اسے حکم کیا چاہئے جو اس گھوڑے

پر چڑھیگا سو اقرار ہی کر آویگا ۞ اِس بات کے

سنتے ہی راجا نے خفا ہو اُسے نکال دیا اور بڑا

افسوس کیا ۞ اِسمیں کوئی مصاحب بول اُٹھا

کہ مہاراج آپ نے جو اِتنا افسوس کیا سو کیا

یہہ مثل نہیں سنی

کہ جس کا کام تسی کو چھاجے

اور کرے تو ٹھینگا باجے

نقل ۶۵

ایک شخص کی بھینس مر گئی - وہ لگا رونے ۞

اِسمیں اُسکے ایک پڑوسی نے آکر پوچھا

کہ بھائی تم کیوں روتے ہو - بولا میری بھینس

کل دے جاؤنگا تم خاطر جمع رکھو ⁘ اِس بات
کے سُنتے ہی خوش ہو اُس راجا نے اِسے ایک
بھاری خِلعت اور بہت سے رُپیے دے رُخصت
کیا اور لڑائی موقوف کی ⁘ دوسرے دِن
بھور ہی یہہ راجا جب چڑھہ کھڑا ہوا تب اُس
راجا نے کہلا بھیجا کہ کل تو تمھارا وکیل تمھاری
طرف سے دس لاکھہ رُپیے اور بیٹی دینی قبول
کر گیا ہی اب کیوں لڑنے کو تیار رہے ہو
سُنتے ہی راجا نے فرمایا کہ دیکھو کون آدمی
ہماری طرف سے وہاں جا کر یہہ بات کہہ آیا ہی
وِسے میرے پاس لاؤ ⁘ غرض تحقیق کر کے
لوگ بکت خاں کو ہاتھوں ہاتھہ راجا کے سونہیں
لیگئے تب کسی مُصاحب نے اُس سے پوچھا کہ تو

دو تین دفع راجا سے اُس نے کہا اور راجا نے
یہی جواب دیا - ندان گھوڑا اُسے حریف کے
غول میں لے ہی گیا تب بہت خان نے کمر سے
دُپٹا کھول پھرایا - اِس سے اُس راجا کے لوگ
لڑنے سے باز رہے اور اِس کے پاس آئے ؛
کہا تو کیا پیغام لایا ہی - بولا مجھے گھوڑے سے
اُتارو تو کچھ عرض کروں ؛ اُنھوں نے اِسے
گھوڑے سے اُتارا تب یہہ بولا کہ تم کس لئے
لڑتے ہو جس طرح کی معاملت چاہو گے سو
ہمارا راجا قبول کریگا ؛ اُس نے کہا کہ دس
لاکھ رُپے دے اور اپنی بیٹی ہمارے بیٹے کو
بیاہ دے یہی ہم چاہتے ہیں - وہ بولا یہہ بات
ہمارے راجا کو قبول ہی میں اِس کا جواب

تبھی عورت جھنجھلا کر بولی کہ حسن جو تو اپنے
خاوند سے نمک حرامی کر اُس کا ساتھ چھوڑیگا
تو میں بھی تیرا ساتھ نہ دونگی ۞ یہ حسن شرما
لاجواب ہو راجا کے پاس بھوڑی جا حاضر ہوا اور
ہتھیار لگا گھوڑے پر سوار اُن کے ساتھ ہو لیا۔
جس وقت میدان میں دونوں دل قتل کر لڑنے
کو تیاّر ہوئے اور لگا مارو بجنے اور گولی گولا بان
دونوں اور سے چلنے اور اس کا گھوڑا بھڑکنے
- تِس وقت بکھت خاں نے تو مارے ڈر کے
راجا سے عرض کی کہ مہاراج ہوں گرتُ ہوں
پر راجا سمجھا کہ یہ کہتا ہی میں حریف کی
فوج پی گروں - بولا ایسا کام بھی نکیجیو
تم میرے ہاتھی کے ساتھ اپنا گھوڑا رکھو۔

گھوڑا اپنی پسند موافِق لے لو کل تمھیں بھی ہمارے
ساتھ لڑنے کو چلنا ہوگا ۞ اِس بات کے سُنتے
ہی اُسکی جان تو سوکھ گئی پر مارے شرم کے
بہت خوب کہہ گھوڑا اور ہتھیار پسند کر کِسی
بہانے سے وہ اپنے گھر آیا اور جورو سے کہنے لگا
کہ اِس شہر سے ابھی بھاگ چلو نہیں تو راجا کے
ساتھ کل مرنے کو جانا ہوگا ۞ اُس کی جورو
عقل مند تھی بولی جو لڑائی میں جاتا ہے سو
بے اجل نہیں مرتا - یہہ کہہ اُسنے چکّی میں چنے
دلکر دِکھائے اور کہا کہ دیکھہ جِس طرح
اِس میں دانے ثابت رہ گئے ایسے لڑائی
میں بھی لوگ بچ رہتے ہیں - بولا جو پِس گیا
سو میں ہوں ۞ اِس کم ہمتی کو دیکھہ اُس

ایک شخص غالب رہے - اُسنے پوچھا یہہ کیا
بات ہی مجھی سمجھا کے کہو - اِسنے اُنکا ماجرا
کہہ سنایا تب اِسکا آشنا بولا کہا "ہم نے یہہ
مثل نہیں سنی جو اِتنا تعجب کرتے ہو کہ
جُگ پھوٹا اور زرد ماری گئی

نقل ۶۴

کِسی راجا کے یہاں بکت خاں نام کلاونت
بہ سبب گانے بجانے کے بُہت پیش ہوا - آٹھ پہر
اُس کی مُصاحبت میں رہے ؛ ایک دِن
اُس راجا پر کوئی غنیم چڑھ آیا تو اُسنے بھی
لڑنے کی تیّاری کی اور اپنے رفیقوں کو ہتھیار
گھوڑے بانٹے - اُس وقت بکت خاں سے راجا
نے کہا کہ تم بھی سلحخانے سے ہتھیار اور اصطبل سے

یہہ بات سُنکر وے چپ ہو رہے تب اُس نے
نائی سے گہنے چھین لئے اور اُسے جتیا کر نکال
دیا۔ پھر کسان کہنے لگا کہ سنو بھائی براہمن
گرو تم بھائی۔ ہمارا تمہارا مال ایک ہی۔
اس بنئے نے کیا بوجھ کے میرا کھیت اُجاڑا۔
بھلا اِسکا تمہیں اِنصاف کرو جو ہم اِسکے
یہاں سے رُپے لینگے تو کیا یہہ اپنا سود چھوڑ
دیگا ✿ اِس بات کو بھی سُن وے کچھہ نہ بولے
تب تو اُسنے اِسے بھی دھو لیا کے گانڈے چھین
نکال دیا ✿ غرض اِسیطرح سے اُسنے ہر ایک
کو نکالا اور اپنا مال بچایا ✿ اِس بات کو
سُن تعجب کر ایک شخص نے اپنے دوست
سے کہا یہہ کیا غضب ہی کہ چار آدمی پر

نقل ۶۳

چار شخص اپنے گانو سے نکلے براہمن راجپوت
بنیاں اور نائی اور کسی کسان کے کھیت پر جا
لگے گنے اکھاڑ اکھاڑ پھاندیاں باندھنے اور چوسنے -
اُس کھیت والے نے دیکھا اور اپنے جی میں بچارا
کہ یے چار اور میں اکیلا جو کچھ کہتا ہوں تو یے
مجھے بن ٹھوکے نہ رہینگے - اِس سے کچھ حکمت
کیا چاہئے ۔ یہ بات دل میں ٹھان وہ اُن کے
پاس جا رام رام کر بولا کہ سنو صاحب براہمن
ہمارے گرو - راجپوت بھائی - بنیاں مہاجن -
تینوں آدمی کے کاندے کھانے کا کچھ مضایقہ
نہیں - بھلا اِس نائی نے کیا سمجھ کے میرے
کھیت میں ہاتھ ڈالا اِسکا تمہیں نیاو کرو ۔

میں دیری جو ہوئی تو بنیاں اپنے من میں یہہ
سمجھا کہ کسی دین لین والے نے شاید میرے
بھائی کو پیٹ مار رکھا ہی - لگا روزنامہ کھاتے کی بہی
دیکھنے - جب دیکھتے دیکھتے اُس میں کسی کا پتہ
پانا نہ ٹھہرا تب گھبرا کے جنگل میں ڈھونڈنے
چلا ۔ کتنی ایک دور جائے دیکھے تو ایک شیر
لیٹتا ہوا ہی اور اُس کے بھائی کا ہاڑ چام آگے
پڑا ہی ۔ یہہ دیکھتے ہی بولا سُجن تو اوٹ کے
اوٹ نہ تیرا ہمارے کھاتے میں نام - نہ روزنامے
میں - تو نے میرے بھائی کو کس حساب سے مار
کھایا - وہ یوں کر کے گھر کا تب بنیاں یہہ کہہ روتا
پیٹتا پھر آیا کہ ہاں اِس حساب سے کھایا
تو ٹھیک ہی

ایسا دون کہ جیسا آبِ زلال ٭ یہہ وہاں سے بھی پیالا اور پنجرے ہی لے اپنے گھر آیا اور ایک پیالا میٹھے پانی کا بھرکر آشنا کے آگے لے گیا۔ وہ دیکھکر بولا کہ تم تو گھی لینے گئے تھے یہہ کیا لے آئے۔ جواب دیا کہ تین نچوڑ میں یہہ ٹھرا ہی۔ اُسّے یہی بہتر ہی کہوں کہ شاعر لوگ بھی مشبہ سے مشبہ بہ کو اعلی جانتے ہیں

نقل ۶۲

ایک بنیاں اپنے بیٹے کو بیاہنے برات لئے شہر سے پر شہر کو جاتا تھا۔ راہ میں ایک جنگل مِلا۔ اُس میں کہیں دائیں بائیں اِس کا بھائی جھاڑا پھرنے گیا۔ اِتفاقاً اُسے وہاں شیر کھا گیا۔ اِس

گیا پر بھلا گھی بن میں کسطرح کھاؤنگا ۞ کہا میں
ابھی لے آتا ہوں ذرا صبر کرو ۞ اِتنا کہہ وہ
پیسے اور پیالا لے وہ مودی کی دوکان پر گیا
اور اُن نے پیالا اور پیسے اُسکے آگے
رکھ کے کہا کہ اچھے سے اچھا گھی مجھے دے
وہ بولا ایسا گھی دوں کہ جیسا سفید چرب
اِس بات کے سنتے ہی یہہ پیالا اور پیسے لے
چرب والے کی دوکان پر گیا اور اِسنے
پیالا اور پیسے دے اُسنے کہا کہ بھلے سے بھلا
چرب مجھے دے ۔ وہ بولا کہ ایسا صاف دوں
کہ جیسا برف ۞ یہہ سن وہ وہاں سے پیالا اور
پیسے لے برف والے کے پاس گیا اور بولا کہ
بہتر سے بہتر برف میرے تئیں دے ۔ اُسنے کہا کہ

وہی ہی جو کسی نے کہا ہی -

راگی باگی پارکھی ناری اور نیاو

اِن پانچوں کے گُروہی پر اُپجے انگ سبھاو

نقل ۶۱

ایک طالب العلم بڑا بخیل تھا - اُسنے کسی
دِن ایک آشنا کی دعوت کی - کھانا تو جو
اُسکے یہاں نِت پکتا تھا سوئی پکا پر دو انڈے
کھانے کے وقت براے تکلّف سے اُسنے دسترخوان
پر لا رکھے اور کہا کہ سُنو صاحب اِن انڈوں
سے ایک جوڑا مُرغ کا ہوتا اور جوڑے
سے ہزاروں بچے پیدا ہوتے - یہہ آپ کی خاطر
ہی جو مَیں نے اپنا اِتنا نقصان کیا ؛ اُسکا
آشنا بھی ایک ہی شخص تھا بولا کہ یہہ تو آپ نے

کا احوال سنئے کہ راہ میں گدھے پر سوار چلا
جاتا تھا اور تماشہ گیر بھی دو چار سو چاروں
طرف سے لعنت ملامت کرتے جاتے تھے اور
سونہوں سے اُس کی جورو آئی - اُن نے اُسے
پاس بُلا کر سب کے دیکھتے کہا کہ تو گھر جا کر نہانے
کا پانی جلد گرم کر رکھ تھوڑا شہر پھرنا باقی
ہی ابھی پھر کر اِن موذیوں کے ہاتھ سے
چھوٹ چلا آتا ہوں ٭ اِتنی بات کے سُنتے ہی
راجا نے اُن لوگوں سے کہا جنھوں نے کہا تھا
کہ وہ ماو تار - ہم نے اِس نیاؤ کا بھید نجانا - کچھ
ابتو سمجھے - اُنھوں نے عرض کی کہ پرتھی
ناتھ - آپ کا نیاؤ آپ ہی سے بنے دوسرے
کی کیا سامرتھ جو اِسمیں دم مارے - یہ

لگے کہا کہ تم اِن چاروں کے پیچھے ہرکارے لگا
دو کہ یے جا کے کیا کرتے ہیں اِسکی خبر لاویں۔
اُنھوں نے سوئی کیا ۞ تیسرے دن جب
ہرکارے خبر لے حضور میں آ حاضر ہوئے تب
راجا نے دیکھکر فرمایا کہ اُنکے سماچار لائے۔
جواب دیا ہاں پرتھی ناتھ لائے۔ اِرشاد
کیا کہو۔ وے ڈنڈوت کر ہات جوڑ بولے کہ
دھرماوتار جسے آپ نے یہہ کہہ چھوڑ دیا تھا
کہ تمھارے لائق یہہ کام نہیں تھا۔ وُہ تو جاتے ہی
زہر کھا مر گیا اور جسے گالیاں دے چھڑوایا تھا
وُہ شہر چھوڑ کر چلا گیا اور جو مار کھا کے چھوٹا
ہی سو اِس دن سے گھر کے باہر نہیں نِکلا اور
مہاراج جس کی ناک اور کان کاٹے گئے تھے

ایک بار تہ چوری کے معاملے میں پکڑے گئے
راجا نے اُن میں سے ایک کو پاس بُلا اِتنا کہہ
چھوڑ دیا کہ تمھارے لائق یہہ کام نہ تھا اور
دوسرے کو پانچ چار گالیاں دے نکال دیا۔
تیسرے کو دس بیس دھول جوتیاں لگوا
دھکّے دلوا نکلوا دیا اور چوتھے کی ناک اور
کان کٹوا کالا مُنہہ کروا گدھے پر چڑھوا شہر بدر
کروا دیا۔ یہہ عدالت دیکھہ ہر ایک درباری
ایک ایک کا مُنہہ دیکھنے لگا۔ اُس وقت
راجا نے اُن سے پوچھا کہ تمھارے دِل میں
کیا ہے سو کہو۔ اُنھوں نے ہاتھہ جوڑ کر کہا کہ
دھرماوتار آپ نے نیاو تو سمجھہ ہی کے کیا
ہوگا پر اِسکا بھید کچھہ ہم پر نہ کُھلا۔ راجا نے ہنس

سُنتا تھا - اُسکے پاس آیا اور آ ہنس
کر بولا کہ ناتھ جی - آپ نے چار آدمیوں
کے چار سوالوں کا ایک ہی جواب دیا - اِسکا
کیا سبب ہے؟ اُسنے اِس سے بھی کہا کہ ہاں
بابا سچ کہتا ہی یہ بولا کہ مہاراج میں وِن
جیسا نہیں ہوں کہ مجھے بھی بہکا دوگے - بِدون
سمجھائے آپ کا پیچھا نہ چھوڑونگا ؛ اِس
بات کے سُنتے ہی اُس جوگی نے کہا کہ بابا جو
کوئی جیسا ہوتا ہی وہ دوسرے کو بھی ویسا
سمجھتا ہی - اُن کے کہنے سے میرا کیا بگڑا -
فقیر تو جیسے کا تیسا بیٹھا ہی

نقل ۹۰

ایک روز راجا بیربکرماجیت کے یہاں چار شخص

کھیلنے نہیں گئے - کچھ ہار آئے ہو جو اِس بن میں
یہہ سوانگ بنا کر آن بیٹھے ہو - بولا ہاں بابا سچ
کہتا ہی پھر دوسرے نے کہا تو تو کل شراب
پیئے شہر کی گلیوں میں گرتا پڑتا پھرتا تھا - آج
کس لئے یہاں فکر کر آن بیٹھا ہی - جواب دیا ہاں بابا
سچ کہتا ہی ؛ تیسرے نے کہا - تم نے اِس راہ میں
بہت قافلے غارت کئے ہیں - کہو اب کسکی
تاک پر بیٹھے ہو - بولا ہاں بابا سچ کہتا ہی
بعد چوتھے نے کہا ناتھ جی آپ بھگوان کے خاص
بندوں سے ہو کچھ میرے حال پر رحم کرو ؛
اُسے بھی یہی جواب دیا - ہاں بابا سچ کہتا
ہی ؛ غرض یہہ کہہ سُنکر وے چاروں چلے گئے
تب ایک اور مسافر جو الگ وہیں بیٹھا

کی آنکھہ لگتی ہی تو آدھی رات کی اندھیری
میں اکیلی بے ہتھیار کے پاس ندھرک چلی
جاتی ہی اور چور چکار بھوت پلیت سے نہیں
ڈرتی ٭ یہہ بات سُن شاہ نے خوش ہو بیربل
کو انعام دیا اور فرمایا تو سچ کہتا ہی

نقل ۹۹

کوئی جوگی کسی جنگل میں سر راہ ایک پیڑ
کے نیچے بھبوت لگائے دھونی جلائے سیلی سینگی
مُدرا پہنے باگھمبر بچھائے ننگ دھڑنگا آسن
مارے اپنے بھگوان کی یاد میں مگن بیٹھا بھجن
کرتا تھا کہ چار مسافر راہ سے آئے اور
اُسی درخت کے نیچے جا بیٹھے اُنمیں سے پہلے ایک نے
اُس جوگی سے کہا کہ آج کیا ہی جو تم جو آ

حضرت نے فرمایا کہ ابے میں نے چار شخص
بلوائے تھے تو ایک کو لایا اور تین کہاں
ہیں - عرض کی جہاں پناہ - اِسمیں چاروں کی
صفات ہیں - اِرشاد کیا بیان کر - بولا کہ جس
وقت یہہ اپنی سسرال میں رہتی ہی مارے
شرم کے اچھی طرح گلا کھول کر بولتی بھی نہیں
اور جس بِریاں کہیں شادی میں گالیاں
گاتی ہی تو باپ بھائی شوہر سسر اور برادری
کے لوگ بیٹھے سنا کرتے ہیں پر یہہ کِسی کی
شرم نہیں کرتی اور جب اپنے شوہر کے
پاس بیٹھتی ہی تو رات کو اکیلی گھر کے
کوتھے میں بھی نہیں جاتی اور کہتی ہی سجھے جاتے
ڈر لگتا ہی پھر جس وقت کِسی سے اِس

وھرم سے کہو تب اِسنے اُنکے جواب میں یہ
سور ٹھا کہہ سُنایا

گن تیں گروؤ ہوت نہیں سنپت - سہائے تیں
پونوں چند اُدوت دُتیا کی سر بر نہیں
یہہ سُن وے تینوں چپکے ہو رہے

نقل ۶۸

ایک روز اکبر بادشاہ نے بیربل سے کہا کہ
تو مجھے چار شخص لادے - سور بیر - کایر -
صاحب شرم - اور بے شرم - بیربل
دوسرے دن بھور ہی ایک رنڈی کو ساتھ
اپنے حضور میں لے گیا ٭ شاہ نے پوچھا لایا -
بولا خداوند حاضر ہے - یہہ کہہ بیربل نے اُس
رنڈی کو بادشاہ کے سونہیں لیجا کھڑا کیا ؛

اِس کا سبب کہو - اُنھوں نے سب ماجرا کہہ
سنایا - سنتے ہی اُن میں سے ایک شخص
بولا کہ بھائی تمھاری وہی مثل ہی کہ سوت
نہ کپاس کولی سے لٹھا لٹھی

نقل ۵۷

کسی مکان میں پنڈت ساہوکار اور سپاہی
یہ تینوں بیٹھے بحث رہے تھے ؛ ایک کہتا تھا کہ
منُش گُن سے بڑا کہلاتا ہی اور دوسرا
کہتا تھا کہ نہیں دھن سے اور تیسرا کہتا تھا کہ نہ -
مددگاروں سے آدمی بڑا کہلاتا ہی ؛ اِس
میں کوئی کبیشور وہاں جو جا نِکلا - اُنھوں نے
اِسے ثالث مان کے کہا کہ مہاراج اِس مقدمے
میں جو تمھارے نزدیک سچ ہو سو اپنے

راہ میں ایک پچاس ساٹھ بیگھے اچّھی زمین
کا قطع دیکھکر اُن میں سے ایک نے کہا کہ بھائی
یہہ جگہہ اگر ہمارے تمھارے ہاتھہ لگے تو کیا کرو۔
بولا میں تو اپنے حصّے کی زمین میں پُھلواری
لگاؤں۔ کہو تم اپنی جگہہ میں کیا کروگے۔ کہا
میں اپنی گائیں بھینسیں چراؤنگا۔ اِس نے کہا
بھلا مانو یا بُرا میں تو اپنے باغیچے کے پاس نہ چرانے
دونگا۔ وُہ بولا تمھارا کچھہ اِجارا نہیں ہی
میں اپنی زمین میں جو چاہونگا سو کرونگا ؛ غرض
اِسی طرح ہُدّا ہُدّی کرکے لگے ہاتھا پائی کرنے ؛
اِس میں کئی ایک راہ گیر جو اِن کو جھگڑتے
دیکھہ جمع ہوگئے تھے۔ اُنھوں نے بیچ بچاو کرکے
اِن سے پوچھا کہ تم کیوں آپس میں لڑتے ہو؛

برابر کر لیوں ہیں اور حضور کے داروغہ نے تو
بگرانے کو فکر معقول ہی کیو ہو۔ اِس لطیفے کے
سُنتے ہی شاہ نے داروغہ کو تنبیہ کی اور
اِنہیں اُس کے عِوض دو گھوڑے دیے

نقل ۵۵

سورج مل کے وقت میں کسی مُسلمان نے
ازراہِ تمسخر ایک جاٹ سے کہا ابے جاٹ
بے جاٹ تیرے سر پر کھاٹ۔ اُسنے کہا بے
میاں بے میاں تیرے سر پر کولھو۔ یہ بولا تُک
نہ مِلی۔ اُس نے جواب دیا کہ تُک نہ مِلی تو کہا
بھیو ارے بوجھن تو مریگو

نقل ۵۶

دو زمیندار اپنے گانو سے کہیں کو چلے جاتے تھے۔

ٹھر کی دیا ایسا کہ بچ کے جائے مانند گھڑے کے
تھے - یے لے ناخوش ہو اپنے گھر آئے ؛ کِتنے دِنوں کے
بعد ایک روز بادشاہ نے اِنسے کہا کہ کمال تم بھی
میرے ساتھ فجر شکار کو چلیو - یے بہت خوب کہکر
رُخصت ہو اپنے مکان پر آئے ؛ اور دوسرے
دن چار گھڑی رات رہے سوار ہو دونوں
بادشاہ کی ڈیوڑھی پر جا حاضِر ہوئے ؛ ایک
بھائی اُسی ٹٹرکی کے گلے میں بالوں کا بھرا گھڑا
باندھ سوار ہو گیا تھا - جوں حضرت برآمد
ہوئے توں ہی اِنہوں نے بڑھ کے سلام کیا - شاہ
نے دیکھتے ہی ہنس دیا اور فرمایا کہ ابے فجر ہی
فجر یہہ کیا سوانگ بنا لائے ہو - بولے بلدیاں
لیوں اُلل پڑنے کے ڈر سوں دوؤ اور بوجھ

نہ دیا- پھر شاہ نے کہا بیربل وے تینوں بلّائیں -
بولا ہاں جہاں پناہ سلامت ؛ اِتنی بات کے
سُنتے ہی شاہ نے لیلی پیلی آنکھیں کر کہا تو
اِسکا بیان کر نہیں تو ابھی مار ڈالتا ہوں -
تو نے کہا سمجھ کے میری بات کا جواب دیا- بولا ؛

ایک سمندر رنج کرے اور نت اُٹھ چوری جائیں
بالک ہی سے نیہہ لگا وے وے تینوں بلّائیں

اِس بات کے سُنتے ہی خوش ہو بادشاہ نے بیربل کو
نہال کر دیا

نقل ۹۴

کسی دن اکبر بادشاہ نے لاڑکپور کا گانا سُن
ریجھ کے ایک گھوڑا دلوایا- اِسطبل کے داروغہ نے
بہت کھٹی کر کے بھلا گھوڑا نہ دے ایک بہت بوڑھا

روتی ہوں ۞ اتنا سن روتی کی دعا دے آگے
بڑھے تو دیکھا کہ کوئی رنڈی رو رو چکی پیس
رہی ہی - اُسیطرح اُس سے بھی پوچھا -
اُن نے کہا میرا خصم چھوڑ کر گیا ہی اُسے تین
دن ہوئے نجانوں جیتا ہی یا مارا گیا - اِس
دُکھ سے روتی ہوں ۞ یہ سن وہاں سے بھی
چل نکلے پھر دیکھا کہ ایک عورت نوجوان
گھر کی میں بیٹھی ڈاڑھیں مار مار روتی ہی -
اُس سے پوچھا تو کیوں روتی ہی - اُن نے کہا
میرا شوہر کمسن ہی ۞ اِسبات کے سنتے ہی
بادشاہ اُداس ہو گھر آئے اور دوسرے دن
دیوان خاص میں بیٹھ بیربل کی طرف مخاطب
ہو بولے وے تینوں بلائیں ۞ بیربل نے کچھ جواب

آؤ پتنگ نسنگ جل جلت نہ موڑ وانگ
پہلے تو دیپک جلے پاچھے جلے پتنگ

نقل ۸۳

اکبر بادشاہ کا یہ معمول تھا کہ ہمیشہ فقیر کا بھیکھ لے
رات کو شہر کی گلی گلی کوچے کوچے میں پھرتے
اور جس غریب کنگال دکھی کو دیکھتے اُسکا
دُکھ دور کرتے * ایکدن جوں نکلے توں دیکھتے
کیا ہیں کہ کوئی سوداگر بچی دروازے کے اوپر
گوکھ میں کھڑی رو رو بسور رہی ہی - ییے بولے
مائی تکرا بھیجیو - وہ روتی دینے آئی - اِنھوں نے
اُس سے بوچھا تو کیوں روتی ہی جواب دیا
میرا خاوند بارہ برس سے جہازلے سوداگری کو
نکلا ہی اُسکی کچھ خبر نہیں پائی اِس دُکھ سے

نہ دینا چاہیے

نقل ٤٢

کوئی شخص کسی پر عاشق تھا پر مارے حجاب کے اپنا عشق اُس کے آگے اظہار نہ کرتا اور جس پہ عاشق تھا وُہ بھی جان بوجھ کر شرم سے کچھ نہ کہتا ٭ ایک روز وے دونوں کسی مکان پر رات کو بیٹھے تھے کہ ایک پروانہ شمع پر آ جلا - اُس کو جلتا دیکھ عاشق نے کنائے سے یہہ دوہا پڑھا

آہ دئی کیسی بنی انچاہت کو سنگ
دیپک کے بھانوین نہیں جل جل مرے پتنگ

اِس کے جواب میں معشوق نے بھی یہہ دوہا کہہ سُنایا

پڑھنے نت آتا اور یہہ بات کہتا کہ پیر مُرشد - جو
غُلام کو آپ کے تصدُّق سے اِس فن میں کچھ
تمنا سبب ہو جائیگی تو یہہ بن مول کا غُلام آپ
کے قدم مبارک چھوڑ کر کہیں نجائیگا اور ہمیشہ
خدمت میں رہیگا ؛ غرض اِسی دم بازی سے
کئی ایک برس کے عرصے میں تمام کتاب
پڑھ سُن کے وہاں سے ایسا گیا کہ جیسے گدھے کے
سر سے سینگ گئے پھر نظر بھی نہ آیا ؛ ایک روز
حکیم جی نے اُس کے کسی دوست سے کہا کہ
تمہارے آشنا نے ہم سے کیا قول کیا تھا اور
اب دکھائی بھی نہیں دیتا - وہ بولا حکیم صاحب
کیا آپ نے یہہ مثل نہیں سُنی جو ایسی بات
زبان پر لاتے ہو - کام سرا دُکھ بیسرا اچھا چھہ

حق بات کہنے میں کچھ عیب نہیں - آپ کی وہی
مثل ہی کہ واتا دے بھنڈاری کا پیٹ پھولے :۰:
اِس مثل کے سُنتے ہی شرمندہ ہو اُس نے
اِسے اُسی وقت رُپے گِن دے

نقل ۱۵

کِسی مکان پر کئی ایک تِجارت پیشہ بیٹھے آپس
میں اپنی اپنی کمائی کا احوال بیان کر رہے تھے
کہ ایک عاشق تن بھولا بھٹکا وہاں جا نکلا اور
اُن کی باتیں سُن آہ کر یہہ شعر پڑھا

جو آئے اِس جہاں میں سو کچھ کما چلے
ایک بے سلیقہ ہم ہیں کہ دِل بھی گنوا چلے

نقل ۱۶

ایک گونگیرہ کسی حکیم کے یہاں حِکمت کی کتاب

اُسکے منیب نے راہ کا احوال سُن خوش ہو
اُسے ایک دوشالا اِنعام دے کر کہا کہ شاباش
تم نے خوب دانائی کی ॥ اُسوقت وہی مناسب تھا
یہہ مثل ہم بھی ہمیشہ بزرگوں کی زبانی سنتے
آئے ہیں کہ جو دھن جاتا جانئے تو آدھا دیجے بانت

نقل ۶۹

کسی اُمرا کے یہاں کوئی بھلا آدمی کبھی ایک
مہینے سے آمد و رفت کرتا تھا۔ ایک روز اُس
نے اِس کے حال پر مہربان ہوکر پانچ سو رُپے
اپنے دیوان سے دلوائے۔ اُس نے نت کبھی
اور اپنی بدذاتی سے ٹال مٹال کر کے کئی ایک
دن لگائے تب دُکھ پا اِس بچارے نے سرِ
مجلس کہا کہ دیوان جی صاحب۔ بھلا مانئے یا بُرا۔

یہ دوہا جس اُس کی سہیلی نے گلہرے کی طرف
سے جواب دیا

لات سہی مونگی سہی اُلٹے سہے گدار
اِن ہوتھن کے کارنے سر پر دھرے انگار

نقل ۴۸

ایک سوداگر کا گماشتہ کہیں سے روپیہ
لوائے چلا آتا تھا - راہ میں کسی سرائے
کے بیچ اُترا کہ وہاں ڈاکا آیا - تب اِسنے وہاں
کے رہنے والوں سے کہا کہ بھائیو جو تم لڑ بھڑ کے
اِن روپیوں کو ڈکیتوں کے ہاتھ سے بچاؤ تو
آدھے پاؤ ؛ غرض اُن لوگوں نے جوں توں
کر روپے بچائے اور آدھے پائے باقی رہے سو
لے وہ اپنے خاوند کے پاس پہنچا - اُس وقت

کہ یہہ راہ بُری نکلی - آج چوہا گیا ہی کل کو سانپ
جائیگا تو میں کاہے کو جیتا رہونگا

نقل ۴۷

ایک کہترانی نوجوان خوبصورت چُست وچالاک
بسنت رُت میں اپنی بہنیلی کے یہاں گئی اور
کچھہ اِدہر اُدھر کی من لگن باتیں کر رہی تھی کہ
پیاسی ہوئی اور پانی مانگا - اُسکی اُس
مُنھہ بولی بہن نے کورے گھڑے میں بھر کر لادیا -
جوں اُسنے مُنھہ لگا کر پیا توں گھڑا ہونٹھوں سے
لگ رہا ٭ یہہ کھل کھلا کہ ہنسی اور اِس دوہے کو
پڑھنے لگی

رے ماٹی کے کولھرا توہ دار وں پتھکائے
ہونٹھہ رکھے ہیں پئو کوں تو کبھوں چوسے چاہے

نقل ۴۶

ایک بنیان اپنے گھر میں رات کو نیند میں غافل
پڑا سوتا تھا کہ ایک چوہا اُسکے پیٹ پر ہوکر اِدھر سے
اُدھر چلا گیا - وہ نیند سے چونک پڑا اور لگا چیخ مار
مار رونے اور یہ کہنے کہ ہاے جان گئی ہاے جان گئی اُسکے
رونے کی آواز سنکے سب گھر کے لوگ گھبراے اور
لگے پوچھنے کہ تجھے کیا دُکھ ہی - جو اِتنا روتا ہی بولا
اِس گھر میں رہ نہیں سکتا - کیا کہوں - جواب دیا -
ایک چوہا میری چھاتی پر ہوکر اِسطرف سے اُسطرف
چلا گیا ٭ لوگوں نے کہا چلا گیا چلا گیا - اِسکے واسطے
اِتنا رونا کیا تھا - بولا کسی نے سچ کہا ہی کہ جاتن
لگے سوئی تن جانے دو جا کیا جانے رے بھائی ٭
میں اُسکے جانے پر نہیں روتا - روتا اِس واسطے ہوں

اِس پر سے کوئی کو دے تو ہزار رُپیے دوں ❊
یہہ سُن ایک چوبے نے پوچھا کہ مہاراج - جو
یاپی تیں کو دے گو واہ ہزار رُپیا دیوگے -
کہا ہاں ❊ اِتنی بات کے سُنتے ہی وہ چوبے اپنے
گھر جا ایک برھیا سو برس کی جاں بلب ہو
رہی تھی اُسے لے آیا - اُسے دیکھکر راجا نے کہا
اِسے کیوں لائے ہو - بولا یہی گھٹی پر سوں
کو دیگی ہزار رُپیا دیو ❊ راجا نے کہا برھیا
کی شرط نہیں - جواب دیا - مہاراج آپ کوں
بوڑھی باری تیں کہا کام - تمہیں ایک ہتیا لینی
ہی سو لیو اور موکوں ہزار رُپیا دیو ❊ اِس
ظرافت و حاضر جوابی سے خوش ہو راجا نے اُسے
رُپے دِلوا دیئے وہ لے اپنے گھر گیا

کو آن کھڑے ہوئے اور اُن میں سے ایک
ٹھٹھول نے نتھو سے کہا کہ میاں تو اِس سے
ڈرتا نہیں اُس کے ہاتھ میں تلوار ہی ؛ بولا
کہ حضرت سلامت یُہ اپنے جی میں کچھ اور نہ
سمجھے میرے گھر بٹوے میں دو رُپے دھرے
ہیں - گھر سے رُپے لے چوک میں جا ڈیرھ
رُپے کی تلوار خرید آتا آنے بارئے کو دے
سوڑی بار چڑوا لا ابھی سر کاٹ ڈالتا ہوں ؛
اِس بات کو سن سب تماش بین ہنس پڑے
اور اُن دونوں کو ملا چلے گئے

نقل ۴۵

راجا سوائی جیسنگھ نے متھرا میں عبدالنبی
خاں کی مسجد کے مینار کی بلندی دیکھکر کہا کہ

بولا بھائی صاحب - اِس میں بھی آم کے آم
گُٹھلی کے دام ہوتے ہیں اور کِتنا نفع ہوگا -
اُس کے بھائی نے کہا میں کچھ نہیں سمجھا سمجھا
کے کہو - جواب دیا مع نفع دام اُٹھاتا ہوں اور
بچتا ہی سو برس بھر اچّھی طرح کھاتا ہوں ؀
یہہ سُن وہ چپ کا ہی چلا گیا

نقل ۴۴

عید کے دِن دو دھاڑی بچے ایک ہتھیار بند اور
دوسرا نِہتّھا - مِلکر کسی اُمرا کے یہاں ڈھولک
تنبورا ساتھ لوا کے مجرے کو گئے اور جب
وہاں سے گائے بجائے رِجھائے اِنعام لے پھر
آئے تب آپس میں بخرا بانٹا کرنے کے وقت
جھگڑنے لگے ؀ کئی ایک راہ گیر تماشا دیکھنے

اُسنے سبب پوچھا - اُنھوں نے جو راجا کا حکم تھا
سو کہہ سُنایا ٭ تب اِسنے اِتنا راجا کو لکھہ
بھیجا ٭

دردمند دروازے تہارے بھیتر ہیں بیٹھ وا
رسکی بتیاں ہم جانت ہیں وے باندھت ہیں ہوا
اِس بات کے پڑھتے ہی ہنسکر راجا نے سو
رُپیے دِلوا بھیجے - وُہ لے اسیس دے خوشی
سے اپنے گھر گیا

نقل ۴۳

ایک بنیاں ہمیشہ بھنڈسال بھرا کرتا - کسی
دن اُسکے بڑے بھائی نے آکے اُس سے کہا
کہ بھیا تجھے اِس میں کیا نفع ہوتا ہوگا - کچھہ
اَور روزگار کیوں نہیں کرتا جو زیادہ فائدہ ہو ٭

بدیارتھیوں کو ہل ہل کر پڑھتے دیکھ کسو پنڈت
سے سوال کیا ؛

جھکت جھکت بدیارتھی کہا بورے کرا بار
میں تجھ پوچھوں ہے سکھے یا کو کون بچار

جواب دیا ؛

آگے سمد اگمیہ ہی اپنے بیٹھ کرار
رتن لین کوں جھکت ہیں جھجھکت دیکھ اپار

نقل ۴۲

کسی دِن سوائی جیسنگھ ایک مکان میں بیٹھے
براہمن کِھلاتے تھے اور دربانوں کو یہ حکم تھا کہ
سوائے براہمن کے اندر اور کوئی نہ آنے پاوے
اِسمیں ایک بھاٹ دروازے پر گیا اور اُسنے
چاہا کہ بھیتر جاؤں پر ڈیوڑھی داروں نے نجانے دیا

اور اسنے دوسرا موتی لا دیا ؛ پھر جوہری بیمار دوسرے
موتی کو چھوٹا دیکھہ بولا کہ یہہ میں نہ لونگا - اسی
کے برابر کا لادے - اسنے کہا یوں تو نہیں پر جو
تو یہہ موتی مجھے دے تو میں اسکے برابر کا وہیں سے
دیکھہ لاؤں ؛ مارے لالچ کے اسنے موتی دیا -
وہ لے غوطہ مار بیٹھہ رہا - ایک پہر کے پیچھے اسنے -
گھبرا کے اِسے پکارا تب اُسنے آکر خفا ہو کہا کہ
تو بڑا بیوقوف ہی جو مجھے پکارتا ہی - کیا تیں
نے یہہ کہاوت نہیں سنی ؛ جو کچھہ خدا کرے
سو ہو - لینا ایک نہ دینا دو ؛ یہہ سن جوہری بیمار
نراس ہوا اپنے گھر گیا

نقل ۴۱

بنارس میں ایک چوہے نے کسی مکان پر کتنے ایک

تھی - کام پڑنے سے ایک ایک کی مدد کرتا ۞
ایک روز کسی چڑیمار نے کوّے کو پکڑا تب
کچھوے نے چڑیمار سے کہا کہ تجھے اِسکے لیجانے
سے بازار میں کیا ملیگا - بولا دو پیسے - کہا جو تو
اِسے چھوڑ دے تو میں تجھے ایک موتی دوں - کہا
اچّھا ۞ اُس نے غوطہ مار کے موتی لا دیا پر اسنے
کوّے کو نہ چھوڑا - تب کچھوے نے کہا کہ میں نے
موتی تو تجھے لا دیا - اب اِسے کیوں نہیں چھوڑتا ۞
بولا ایک موتی اور لا دے تو چھوڑ دوں نہیں تو
نہیں چھوڑونگا - اِسنے کہا اچھا تو اِسے چھوڑ دے
میں لا دیتا ہوں ۞ وہ بولا میں تیری بات کا کیسے
اعتبار کروں - کہا اِسنے میں جھوٹھ نہیں بولتا -
اِس بات کے سنتے ہی اُسنے کوّے کو چھوڑ دیا

بخیل - سخی تو اچّھے اچّھے جوانوں کو بڑے بڑے

درمابے کر کے نوکر رکھتا اور بخیل چھوٹے چھوٹے

لوگوں کو کم مہینے پر چاکر رکھتا ٭ ایک روز اُنکے

باپ نے ون دونوں کو کسی غنیم سے لڑنے کو

بھیجا - جنگ میں سخی کی جیت ہوئی اور بخیل

کی ہار ٭ اِس بات کے سُنتے ہی اُنکے باپ نے

کسی اپنے مصاحب سے پوچھا کہ اِسکا کیا سبب

جو ایک ہارا اور ایک جیتا - اُسنے جواب دیا

کہ پیر مرشد - آپ نے یہہ مثل نہیں سُنی

جو مارے تو سنگرام

تو کیوں خرچیں تازی کو دام

نقل ۴۰

ایک کچھوے اور کوّے سے بڑی دوستی

خدا کی راہ پر دونگا ؛ اِتنا کہتے ہی بھیڑ مِلی - تو
وہ لنگڑی بھیڑ کا کان پکڑ کسی کو دینے لے چلا -
اِس میں سو نہیں سے ایک اور بہرا آیا - اِس
نے وِس سے کہا کہ یِہ بھیڑ تو لے ؛ وہ بولا خدا
کی قسم میں نے اِسکی تانگ نہیں توڑی - غرض
یِہی کہتے کہتے دونوں قاضی کے یہاں گئے - قاضی
بھی بہرا تھا اور اپنے گھر میں کِسی سے خفا ہو بیٹھا
تھا - اِنہیں دور سے آتے دیکھ اُن نے اپنے جی میں
جانا کہ شاید یے اُسی کا پیغام لئے آتے ہیں ؛
یِہ سمجھ اِتنا کہہ اپنے گھر بھیتر بھاگ گیا کہ اُس
بدذات کی بات میں کبھی نہ سنونگا

نقل ۳۹

کسی اُمرا کے دو بیٹے تھے - ایک سخی دوسرا

مجھ سے پوچھتا ہی ٭ کہا آپ کا خادم ہوں - بولا
جا تجھے اِسکے سمجھنے کی لیاقت نہیں - اِس
نے کہا بس معلوم ہوا کہ آپ عِلمِ غیب کی
کتاب دیکھتے ہیں کہ جِس سے بے مُلاقات آپ
نے میری لیاقت دریافت کی ٭ اِس بات کو
سُن وہ شرمندہ ہو بولا - اخلاق کی کتاب
ہی - تب اِس نے ہنسکر یہہ کہا کہ آپ اِسی
سے ایسے صاحب اخلاق ہیں اور اپنی راہ لی

نقل ۳۸

ایک بہرا گدریا جنگل میں اپنی بھیڑیں چراتا
تھا - قضاکار اُسکی ایک بھلی بھیڑ کھوئی گئی -
تب اُس نے ایک لنگڑی بھیڑ کی طرف دیکھہ
کر کہا کہ جو وہ بھیڑ مِلے تو اُسے میں کِسی کو

جہاں نہ جا کو گن لہی تہاں نہ تا کو ٹہاؤں
دھوبی بیٹھہ کہا کرے دیگمنبر کے گاؤں

اِس کے جواب میں اُستاد نے بھی یہہ دوہا کہہ سُنایا

جہاں نہ جا کو گن لہی تہاں نہ دُکھہ سُکھہ بات
بن میں تج مُکتان کوں بہت گُنج بِکرات

نقل ۳۷

کوئی سرفرے آدمی کسی طالب العلم کی زبانی ایک عالم کے علم کی تعریف سُنکر مشتاق ہو اُس کے گھر مُلاقات کو گیا ؛ وہ اپنے دروازے پر بیٹھا کتاب مُطالعہ کرتا تھا - یہہ سلام کر اُن کے روبرو بےاُدب بیٹھہ بولا حضرت سلامت - یہہ کونسی کتاب ہی - جواب دیا - تو کون ہی

ظرافت بیربل کو کہا ⁂ بیربل دیکھ تو ر مین
مو ر جات ہی - سمجھ کے وو نہیں وسی بولی
مین بیربل نے بھی جواب دیا - جہاں پناہ تو ر
تھاتت جات ہی مور پیتھت جات ہی ⁂
سنکر بادشاہ چپ ہی ہو رہے

نقل ۳۶

ایک گیبشور اپنے شاگرد کو ساتھ لے کسی
شہر مین روزگار کے لئے گیا اور وہاں کے عمدہ
لوگوں سے ملاقات کر کے کئی برس وِس جگھ
رہا - پر کچھ اُسے فائدہ نہ ہوا کیونکہ وہاں کے
لوگ اپنی جہالت سے اِس کے گن کو نہ سمجھے
تب اِس کے شاگرد نے یہ دوہا اِس کے سونہہ
پڑھا ⁂

شہزادے نے اُسّے پوچھا کہ میاں اِن سب
کے جانوروں کا تو وصف دیکھا اور سُنا اب تم
اپنے جانور کا بیان کرو کہ یہہ کیا وصف رکھتا ہی ❊
ہاتھ باندھ کھڑا ہو بولا پیر مرشد کسی کا
اُڑنا لیا ہی کسیکا لڑنا کسیکا بولنا کسیکا دوڑنا۔
پر اِسکا غرّا ہی لیا ہی اِس حاضر جوابی
سے خوش ہو داراشکوہ نے اِنعام سب کے
ساتھ اُسکو بھی دیا

نقل ۳۵

کسی روز اکبر بادشاہ اور بیربل ایک باغ
کے برج پر بیٹھے کھیتوں کا سبزا دیکھ رہے تھے
اِس میں بادشاہ نے ایک مور کو ادھر کے
کھیت میں جاتے دیکھ پوربی زبان میں از راہ

جانور بِھکاری اُڑنے لڑنے بولنے والا ہی لیکر
کل فجر حضور میں حاضر ہوئے - اِس خوش
خبری کے سُنتے ہی جتنے شہر میں شوقین تھے
اپنے اپنے پرندوں کو اُڑانے لڑانے بُلانے دوڑانے
تیّار کر بڑے تکلّف سے لے گئے اور کوئی تماش
بین تماشا دیکھنے کے لالچ سے ایک کوّے کو
پنجرے میں بند کر کئی ایک عمدہ غِلاف اُسپر
ڈال اُنکے پیچھے لئے چلا گیا - وہاں سب کے جانور
کُھلے اور دِکھلائے گئے - ہر کِسی نے اپنے جانور
کی تعریف کی اور اِنعام پایا - جب اِسکی
نوبت آئی تو یِہ اپنے دلمیں گھبرایا ؛ غرض
لوگوں نے اُسکے ہاتھ سے پِنجرا لے غِلاف اُتار
کوّا شہزادے کو دکھایا - دیکھتے ہی ہنسکر

کھانے سے آدمی روتا ہی - تو جو ہنسی اور
روئی اِس کا کیا سبب - عرض کی جہاں پناہ
پھولوں کی سیج پر پہر بھر سونے کی سزا خدا کے
یہاں نہو یہاں ہیں ہوئی - اِس بات کو تو سوچ
کے میں ہنسی اور آپ کو خدا کے یہاں اِس
سیج پر نت سونے کی نہ جانوں کیا سزا ہوگی -
یہہ اندیشہ کر کے روئی ٭ کہتے ہیں کہ ابراہیم
ادہم اِس بات کے سنتے ہی بادشاہت چھوڑ
فقیری لے جنگل کو چلا گیا

نقل ۳۴

شاہ جہاں بادشاہ کے شہزادہ دارا شکوہ کو
چڑیاؤں سے بہت شوق تھا - ایک روز فرمایا
شہر میں منادی پھیردو کہ جس کے یہاں جو

ایک جوگی دِکھائی دیا - اُسنے اِسے ڈنڈوت
کرکے پوچھا - ناتھ جی آتے ہو کہانسے اور جاؤگے
کہاں ✽ جواب دیا - بابا ہنگلاج جوالامکھی ہردوار
کُرچھیتر کرکے تو آتا ہوں اور کاشی ہو گنگا
گوداوری کا میلا کر سیتبندھ رامیشور
ہو جاؤنگا ✽ بنئے نے کہا مہاراج ایک بات پوچھوں
جو خفا نہو - بولا بابا ایک نہیں دو - کہا مہاراج
ہم گِرھستی ہیں جو دیس دیس پھریں تو کچھ
دوش نہیں آپ فقیر ہو بھٹک بھٹک کیوں بھرم
گنواتے ہو - ایک ٹھور بیٹھکر کس لئے اپنے بھگوان
کا دھیان نہیں کرتے - کہا بابا تونے یہہ کہاوت
نہیں سُنی ✽

بہتا پانی نرملا بندھا گندھیلا ہوئے

سادھو جن رہنا بھلا داگ نہ لاگے کوئے

نقل ۳۲

کسی تاجر کا لڑکا بڑا خانہ جنگ ہوا جب وہ
خانہ جنگی کرکے پکڑا جاے تب اُسکا باپ
رُپی دیکر چھڑا لاے ایک روز وسکے باپ
سے کسی اُسکے بھائی نے سمجھا کر کہا کہ جو
تم اِسی طرح بیٹے کی مامی پی کے نِت ڈانڈ
بھروگے تو ایک دِن سب دولت کھو بھوکے
مروگے ؛ اُسنے پوچھا میں کیا کروں جواب
دیا اب خانہ جنگی کرکے قید پڑے تو نہ چھڑاؤ
پھر آپ ہی سیدھا ہو جائیگا - کہا بہت اچھا ؛
غرض وہ خانہ جنگی کر قید میں پڑا اور اِس
نے نہ چھڑایا - پانچ چار برس وہیں رہنے

دیا - اِسمیں کِسی بھلے آدمی نے آکر اُنسے
کہا کہ اب تمھارے بیٹے نے خانہ جنگی سے ہاتھ
اُٹھایا اور توبہ کی * اِنھوں نے اِسکی بات
مان آسے چھڑا منگایا - ایکدِن وہ باتوں ہیں
باتوں نہیں کِسی پر خفا ہوا تب اُسکے باپ نے
کہا میاں یہہ وہی مثل ہی رسّی جلگئی پر بل
نہ گیا

نقل ۳۴

سُنتے ہیں ابراہیم ادہم کی سیج سو امن
پھولوں سے سنواری جاتی تھی - ایک روز باندی
نے سیج تیار کر کے اپنے جی میں بِچارا کہ اِس
بچھونے پر سونے سے کیسا آرام جی کو ہوتا ہوگا
یہہ سوچ اِدھر اُدھر دیکھ وہ جوں اُس پر لیٹتی

توں آرام پاکے بیہوش سوگئی اور پھولوں کے
اندر پیٹھنے بے معلوم ہوگئی - پھر ایک پیچھے
بادشاہ نے بھی آ اُسی پر آرام فرمایا - گھڑی
دو ایک بعد اُس نے جو کروٹ لی شاہ گھبرا
کر اُٹھ کھڑے ہوئے اور بولے کہ دیکھو اِس
پلنگ میں کیا بلا ہی ٭ ایک کے کہتے دس دوڑ
آئے اور اُنھوں نے باندی کو نکال باہر کیا -
دیکھکر حضرت نے فرمایا کہ اِس مُردار کے
میرے روبرو سو تازیانے مارو - بات کے
کہتے ہی لوگوں نے سو کوڑے گِنکر بید رنج
لگائے - اُس نے پچاس ہنسکر اور
پچاس رو رو کر کھائے ٭ یہہ تماشا دیکھہ
بادشاہ نے اُسے پاس بُلاکے پوچھا کہ مَن تو مار

گے ساتھ ہی وے آن حاضر ہوئے - دیکھتے ہی
خفا ہو حضرت نے کہا کیوں بے تم نے ہاتھی کیوں
چھوڑ دیا - اُنہوں نے ہاتھ باندھ عرض کی قبلۂ
عالم - غلام کو جو ہنر آتا تھا سو برس روز میں
سب سِکھلا دہو لک تھوڑا اُسکے ہاتھ دیا ٭
اِسلئے کہ شہر بادشاہی ہی اِسمیں جاکر
کماوے اور کچھ وِسمیں سے آپ کھاہمیں
کھلاوے ٭ اِس لطیفے کے سُنتے ہی خوش ہو
بادشاہ نے اُنکا قصور مُعاف کیا اور ہاتھی کے
عوض ایک گانو دیا

نقل ۳۱

کوئی بنیاں بتو ہی بات بھول کے ایک بن میں
جا نِکلا - وسے وہاں اور تو کوئی نہ نظر آیا پر

گھُسنا گھاتا ہی اور کِس طرح کھاتا ہی ؛ غرض رات کے وقت ہو رہا بچھا بچھا ہاتھی کے پاس جا بیٹھے اور اُس کا کھانا دیکھ، نہایت حیران و فکرمند ہو آپس میں کہنے لگے - کہ بھائی صاحب بادشاہ نے یہہ ہمارے پیچھے کوئی بڑی بلا لگادی - نہ اِسے بیچ سکیں نہ کِسیکو دے سکیں جو یہہ چند روز یہاں رہا تو اِسکے کھانے کے آگے ہمارا اگلا بچھلا سب خاک میں مِل جائیگا ؛ اِتنا کہہ کچھ دلمیں سمجھ ڈھولک تنبورا اُسکے گلے میں ڈال چھوڑ دیا اُن نے شہر میں جا دھوم کی اور شہریوں نے جا بادشاہ کے یہاں فریاد ؛ شاہ نے فرمایا دیکھو یہ کِسکا ہاتھی ہی ، کِسی نے آ عرض کی کہ جہاں پناہ لاڑ کپور کا - حکم کیا کہ اُنھیں بُلواؤ - کہنے

بہت سے لوگ وہاں جمع ہوئے اور ہاتھوں میں

کھنبھا دیکھہ حیران - کسیکی عقل کچھہ کام نکرتی

تھی ※ ندان ایک نے اُن میں سے کہا کہ بھائی

لال بجھکڑ آوے تو یہہ لڑکا بچے - نہیں تو اِس کا

بچنا دشوار ※ یہہ سُن کوئی اُسکا مالک لال بجھکڑ

کو بلا ہی لایا اور آتے ہی وہ دونوں نے دیکھکر فرمایا ※ کہ

بوجھے لال بجھکڑ اور جو بوجھے کو

چھان بلینڈ ادور کرو اِسے اوپر کرکے لو

نقل ۳۱

لاڑکپور ایکدن اکبر بادشاہ کے روبرو خوب

گائے - شاہ نے رنجہ کمر ہاتھی دیا ییے لے آئے ※

برس ایک کے بعد اُن دونوں بھائیوں کے جی

میں آیا کہ آج ہاتھی کی خوراک چلکر دیکھیں کہ

کو دریافت کر پلنگ کے تلے پائینتی لوٹ رہا - پھر
ایک کے بعد اُمرا نے کسی اپنے چاکر سے پوچھا
کہ اب وہ بلا گئی - اِسمیں کلاونت نے جواب
دیا کہ بابا کیوں یہہ بلا تو قدمن لگی ہی بن کھانا
کھائے کب جات ہی :: اِس لطیفے کو سمجھ
خوش ہو اُسنے اِسے اپنے ساتھ کھانا کھلا کچھ
دے رخصت کیا

نقل ۲۹

کسی گانو میں ایک لڑکا چھدام کی کوڑی
لے بھڑ بھونجے کی دوکان پر چبینا لینے گیا - اُسنے
چبینا کوڑی لے تول دیا - اسنے کھونی کو کھپچی
میں کر دونوں ہاتھ بڑھا لینے تو لیا پر ہاتھ
نہ نکال سکا - تب رونے لگا - اُسکا رونا سن

اِس دوہے کے ارتھ کو تو سمجھو ؛

گھٹ گھٹ میں مورت وہی لال جو نہیں وِیکت
جیسے بہوتی آرسی کھنڈ کھنڈ مہ ایک

نقل ۲۸

ایک اُمرا بڑا بخیل تھا کہ کبھی جھوٹھے ہاتھ سے کتا بھی اُس نے نہ مارا تھا اور کھانے کھلانے کا تو کیا ذکر ؛ ایک روز کوئی کلاونت بھولا بھٹکا اُسکے یہاں جا پہنچا اور اُسے بڑا آدمی جان تنبورا مِلا خوب گایا اور اُن نے بھی ریجھہ کر داد دی - بارے اِتنے میں بکاول نے آ عرض کی کہ خداوند خاصا تیار ہی ؛ بولا کہ میرے سر میں درد ہی ابھی رہے ایک نیند لیکر کھاونگا - یہہ بہانہ کر منہہ ڈھک سو رہا اور کلاونت بھی اُسکے مکر کرنے کے مقصد

گیا - جہاں پناہ دیکھئے یہہ عورت کس بے حجابی سے اِدھر دیکھتی ہی - شاہ نے شہزادے کی بد طینتی دیکھہ فرمایا - بابا جان باپ بھائی کے روبرو حجاب کیا چاہئے ؛ یہہ سن شہزادہ شرما کر چپ ہو رہا

نقل ۲۷

کسی تیرتھہ کے نزدیک ایک مٹھہ میں کتنے ایک فقیر راماوت نیماوت نانک پنتھی دادو پنتھی سنیاسی بیٹھے آپس میں مت کا بیاد کر رہے تھے - کوئی کسی کی بات نمانتا تھا اپنے اپنے پنتھہ کی چھوڑائی برائی کرتے تھے ؛ ندان جھگڑتے جھگڑتے تونبے کھپر پھوٹنے کی نوبت پہنچی - اِس میں ایک ابدھوت بولا سادھو کیوں لڑمرتے ہو

کہا کیوں - جواب دیا - ایسی شتابی میں ایک روز میری جان جاتی رہیگی اور چلا گیا

نقل ۲۶

شاہ جہاں بادشاہ دارا شکوہ شاہزادے کو بہت چاہتے تھے - ایک روز انباری دار ہاتھی پر سوار اور دارا شکوہ خواصی میں چلے جاتے تھے - اِسمیں شاہزادے نے ایک طرف دیکھا جو کوئی ساہوکار بچی سولہ سترّہ برس کی چھکا چاند سا مکھڑا کاجل مسی لگائے پان کھائے نکھ۔ سِکھ سے سنگار کئے جوانی کا مد پئیے دونوں ہاتھ۔ کواڑ کے دونوں بازوُں پر دئے بے حجاب کُھلے بندوں کھڑی دیکھتی ہی ؛ وسکی بے باکی دیکھہ شاہزادے نے ریجھ کر باپ سے

غلام نے سوائے افیم اور کسی نشے سے آشنا
نہیں ۞ یہ بات سن بہت خوش ہوا افیم کی
ڈبیا نکال اُن نے آپ کھا اُسے دے کر کہا۔
کہ میاں آج ہمارا جی چاہتا ہے میٹھے چانول جلدی
سے پکا دو تو کھائیں۔ بہت خوب کرکے پکانے لگا ۞
اِسمیں پینک جو لگی تو دو پہر گذر گئے۔ آقا نے
پکار کے کہا کہ ارے بھائی چانول پکے یا نہیں ؛
بولا کہ خداوند پک چکے ہیں پر دم دینا باقی ہے۔
کہا جلدی لاؤ ۞ قصہ کوتہ بہزار خرابی فجر سے
پکاتے پکاتے شام کو تیار کر لے گیا۔ دیکھکر
آقا نے کہا شاباش کیا جلدی پکا لایا ہے ۞
اِتنی بات کے سنتے ہی وہ ہاتھ جوڑ کر بولا کہ
قبلہ فدوی سے آپکی نوکری نہو سکے گی۔

گیا سمجھہ کے میرے حکم کو نمانا سچ کہو نہیں
تو بیطرح پیش آونگا ٭ ون میں سے ہر کسی
نے ہاتھہ باندھہ باندھہ کر کہا کہ جہاں پناہ خواہ
مارئیے خواہ چھوڑیئے غلام کے جیمیں یہہ بات آئی
کہ جہاں تناؔنویں گھرے دودھہ کے ہوگئے وہاں
ایک گھڑا پانی کا کیا معلوم ہوگا ٭ یہہ بات
سب کی زبانی سنکر بادشاہ نے بیربل سے
کہا جو کانوں سنتے تھے سو آنکھوں دیکھا - کہ
سوسیانے ایک مت

نقل ۲۵

ایک شخص بڑا افیمی تھا - اُسکے یہاں کوئی
خدمتگار نیا نوکر ہوا - اُن نے اُس سے پوچھا
کہ میاں تو کچھہ نشہ تو نہیں پیتا - بولا پیرمرشد

جو سو سیانے ایک مت ۞ شاہ نے کہا کہ یہہ مثل
ہی تو مشہور ہی جو سر بسر عقل گر گر بدیا ۞
پھر بیربل نے عرض کی کہ جہاں پناہ مزاج میں آوے
تو اس بات کو آزما لیجیے - فرمایا بہت اچھا ۞ اتنی
بات کے سنتے ہی بیربل نے شہر میں سے سو عقلمند
بلا بھیجے اور دو پہر رات کے وقت بادشاہ کے حضور
اُنہیں ایک خالی حوض بتا کر کہا - حضور کا حکم ہی
کہ اسی وقت ہر ایک آدمی ایک ایک گھڑا دودھ کا
بھر کر اس حوض میں لا ڈالے ۞ حکم بادشاہی کو سنتے
ہی ہر ایک نے اپنے جی میں یہہ بات سمجھ کر کہ جہاں
ننانویں گھڑے دودھ کے ہونگے تہاں میرا ایک
گھڑا پانی کا کیا معلوم ہوگا پانی ہی لا ڈالا - بیربل نے
شاہ کو دکھایا شاہ نے اُن سب سے کہا - تمنے

تھوڑی ہی ہی - بولے تو نے کیسے جانا - عرض کی
کہ جہاں پناہ مجھے پاخانے کی حاجت ہوئی ہی
اِس بات کے سُنتے ہی سب بیگمات اور
سہیلیاں کِھل کِھلا اُٹھیں - تب شاہ نے خفا
ہوکر کہہ اُسے اُٹھوا دیا کہ اُس شخص نے سچ کہا
تھا اُس مُلک کے لوگ لائق بادشاہوں کی
مجلس کے نہیں

نقل ۲۴

ایکدن اکبر بادشاہ نے بیربل سے کوئی بات کہہ
کے اُسکا جواب پوچھا ✲ بیربل نے وہ جواب
دیا کہ جو بادشاہ کے دِل میں ٹھہرا تھا - سُنکر
شاہ نے کہا کہ یہی بات میرے بھی جیمیں آئی
ہی ✲ بیربل بولا کہ پیر مرشد یہہ وہی بات ہی

رات پچھلی باقی رہگئی تھی - اُس وقت شاہ
نے وُہ بات یادکر کے پہلے پچھم والی رنڈی سے
پوچھا کہ رات کتنی ہوگی ۞ وُہ بولی جہاں
پناہ رات تھوڑی ہی - کہا تونے کس طرح جانا -
عرض کی کہ نتھ کے موتی ٹھنڈے لگتے ہیں ۞ پھر
دکھن والی سے پوچھا کہ شب کتنی ہوگی - جواب
دیا کہ عنقریب ہی کہ فجر ہو - فرمایا تونے کیونکر
دریافت کیا - بولی پان پھیکا لگتا ہی ۞
بعد اُتر والی سے پوچھا - جو رین کس قدر رہوگی
کہا نپٹ تھوڑی باہی - اِرشاد فرمایا تیں نے
کس ڈھب سے معلوم کیا - بولی حضرت سلامت
چراغ کی جوت مند ہوئی ۞ پیچھے پوربنی سے
پوچھا کہ نِس کتنی رہی ہوگی - اُتر دیا نہایت

اُسکی پیٹھ پر ہاتھ رکھ چاہے کہ کچھ کہے وو ہیں
اُس نے پھر کر ایک ایسی دُولتّی ماری کہ
پھر بچارا آہ کر بیٹھ گیا اور ہنسکر بولا کہ کیوں
ہو جسکا مُرَبّی ایسا ہو وِسکا لڑکا ویسا ہوا ہی
چاہے - اِتنا کہہ چلا آیا

نقل ۲۳

ایک بادشاہ نے کِسی سے کہیں یہہ بات سُنی
تھی کہ پورب کے لوگ بڑے بدلِحاظ وبے تمیز
ہوتے ہیں ؛ اِس بات کے امتحان کرنے کو
بادشاہ نے چار طرف سے چار رنڈیاں منگوا
تربیت کروا اپنی خِدمت میں رکھیں ؛ کئی برس
کے بعد ایکدِن بادشاہ محل سرا میں سر
شام سے بیٹھے ناچ دیکھتے تھے اور چار گھڑی

نقل ۲۲

کوئی پوستی جنگل میں بیٹھا پیالے میں پوست
گھول رہا تھا - اِتفاقاً کِسی جھاڑ جھور سے ایک
خرگوش جو نکل دوڑا تو اُس کے دھکے سے
اِس کا پیالا لُڑھک پڑا ٭ یہ خفا ہو بولا کہ تجھ
سے کیا کہوں بھلا تیرے مُربّی ہی سے جا کر کہونگی ٭
اِتنا کہہ کونڈی سوٹا بغل میں دبا شہر میں
جا ہر ایک چوپاے کو دیکھتا چلا - ندان ایک
گدھے کو جو اُس کے رنگ سے مُشابہ پایا تو گدھے
والے سے جا کر کہا کہ تیرے اِس جانور کے
بیٹے نے میرا پوست کا پیالا بھرا ہوا اُلٹا دیا ٭
اُس نے کہا کہ جس کے بیٹے نے اُلٹا دیا ہی وِسی
سے جا کے کہو - یہ سُن وہ گدھے کے پاس جا

نقل ۲۱

دو کائیتھ عقل مند لکھے پڑھے کسی مکان پر
بیٹھے بحثتے تھے - ایک کہتا تھا کہ آدمی اُتّم برن
میں پیدا ہونے سے پندت چتر ہوتا ہی اور دوسرا
کہتا تھا کہ اچھی سنگت سے - اُنکا بحثنا دیکھ کسی
بردے آدمی نے کہا کہ اس بحثنے سے تو تمہارا
قضیہ نہ مٹیگا - بہتر ہی کہ اس معاملے میں
کسی کو منصف بانو ٭ یہ بات اُن دونوں کو
پسند آئي اور سور داس جی کے پاس جا کر
ہر ایک نے اپنا دعوا اظہار کیا - سنتے ہی سور
داس نے اُنکے جواب میں یہ دوہا پڑھا
سوات بوند سیپی مکت کدلی بہو کپور
کارے کے مکھ بش بہو سنگت سو پھا سور

پھِر بولا حساب سُن لو - اُس نے کہا ابھی دیتے
دیر بھی نہیں ہوئی حساب کیا ٭ غرض دونوں
سے تکرار ہونے لگی اور سو پچاس آدمی
گھِر آئے - اُن میں سے ایک نے رُپے والے سے
کہا کہ میاں کیوں جھگڑتا ہی حساب کس لئے
نہیں سُن لیتا ٭ ہارمان اُس نے کہا اچھا کہہ -
وہ بولا جس وقت آپ نے غوطہ مارا میں نے
جانا ڈوب گئے پانچ رُپے دے تمہارے گھر
خبر بھیجی اور نکلے تب بھی اور پانچ رُپے خوشی
کی خیرات میں دئیے - رہے پانچ سو میں نے
اپنے گھر بھیجے ہیں ونکا کچھ اندیشہ ہو تو مجھ سے
تمسک لکھوا لو ٭ یہہ دھاندھل پنے کی بات
سُن وہ بچارا بولا بھلا صاحب بھر پائے

اڑھائی کوس ٭ یہ سن کوئی دوسرا بول اُٹھا
کہ وہ پوستی ہوگا کوئی قاصد ہوگا - پوستی
نے پیا پوست توکوندے کے اِسپار ریا اُس پار
اور جو بیچ میں جگہہ پاوے تو وہیں مقام کرے

نقل ۲۰

دو آشنا مِل کر سیر کو نکلے اور چلے چلے دریا
کنارے پر پہنچے تب ایک نے دوسرے سے
کہا کہ بھائی تم یہاں کھڑے رہو تو میں جلدی سے
ایک غوطہ لگالوں - اُس نے کہا بہت بہتر یہ سن
وہ بیس روپے اِسے سپرد کر کپڑے کنارے
پر رکھ جوں پانی میں پیٹھا توں اُس نے چالاکی
سے وے روپے کسی کے ہاتھ اپنے گھر بھیج
دئے ٭ اُس نے نکل کھڑے ہوں روپے مانگے ؛

نقل ۱۸

کسی بڑے آدمی کے پاس ایک خوش
مسخرا آبیٹھا تھا اور اُنکے یہاں کہیں سے گُڑ آیا
اُس نے ظرافت سے کہا کہ خداوند میں نے
عمر بھر میں تین دفعہ گڑ کھایا ہی - بولا بیان
کر - کہا ایک تو چھٹی کے دِن جنم گھونٹی میں
کھایا تھا اور ایک کان چھدایا تھا تب اور ایک
آج کھاؤنگا ❊ اُن نے کہا جو میں ندوں - بولا
دو ہی دفعہ کھایا سہی

نقل ۱۹

پانچ چار پوستی کسی مکان پر بیٹھے زتل مارتے
تھے - کہ اُن میں سے ایک کا پیالہ جوں ملکر تیار
ہوا - بولا پوستی نے پیا پوست تو دِن چلا

بات کہتے ہو

سب سے دِیا اُوپ ہی دِیا کرو سب کو ے
گھر میں دھرا نپائے جو کر دیا ہو ے

نقل ۱۷

کوئی شخص ور اندھا کہیں کو چلا جاتا تھا کہ ایک اندھے کوئے میں گِر پڑا اور لگا پُکارنے کہ چلیو دوڑیو لوگو میں کوے میں گِر پڑا ۞ لوگ رحم کھا دوڑ کے وہاں گئے اور کوے کے من گھتے پر کھڑے ہو اُس کے نِکالنے کا تردد کرنے لگے - کچھ دیر جو ہوئی تو وُہ بہیتر سے خفا ہو بولا کہ جلدی نکالتے ہو تو نکالو نہیں تو میں کِدھر ہی کو چلا جاتا ہوں مجھے پھر نپا وگے

آگے ہٹ بیٹھو ۔ بولا کیوں - کہا آسن خالی
ہی - پھر اُس نے جواب دیا - کیا تمہارے
کہے سے ہٹ بیٹھیں گے جیسے سائیس نے بیٹھا دیا ہی
ویسے بیٹھے چلے جاتے ہیں

نقل ۱۶

ایک بنیاں جو بت لاتا سو نت کا نت غریب
بھوکھے پیاسوں کو بانٹ دیتا اور آپ نہنگ
لاڑلا ہو رہتا ۔ ایک دن اُس کے بڑے بھائی
نے پانچ چار پڑوسیوں کو بٹھائے اُس سے
کہا کہ بھائی جی ہم مہاجن ہیں ۔ ہمیں پونجی رکھ
بیوہار کیا چاہئے ۔ اِسطرح بیٹھور تھکانے دیا کریں
تو ہماری مہاجنی کیونکر رہے ۔ جواب دیا بھائی
صاحب کیا تم نے یہ دوہا بھی نہیں سنا جو ایسی

آرزو کرتے کرتے ایک بیٹی ہوئی - اُن نے نپٹ لاڑ پیار سے اُس کا نام فضیحتی رکھا ؛ قضا کار وہ دو تین برس کی ہو کر مر گئی - اُس کے غم سے وہ نِت شام صبح نام لے لے رویا کرے ؛ ایکدِن سو ہائے میری فضیحتی ہائے میری فضیحتی کرکے رو رہی تھی - کہ اِس میں اُس کا خاوند آیا اور سمجھانے لگا کہ سُن نیک بخت ہماری تمھاری حیات باقی اور خدا کا فضل چاہئے تو ایک فضیحتی کو کیا روتی ہی ہے تیری فضیحتی ہو رہینگی

نقل ۱۵

ایک کایتھ کم سوار گھوڑے پر بیٹھا بازار میں چلا جاتا تھا - کِسی شاہ سوار نے اُسے مینڈ کی طرح پیچھے ہٹتا دیکھ کے کہا کہ بھیاجی ذرا

اِتّفاقاً ایک روز یہ اِدھر سے جاتے تھے اور اُدھر سے شکار کئے بادشاہ گھوڑے پر سوار چلے آتے تھے ؛ یہہ دور سے دیکھتے ہی ایک اونچے بڑ کے درخت پر جا چڑھے اور اُنھوں نے بھی گھوڑا مار اُسی پیڑ کے نیچے لا کھڑا کیا اور اِنھیں پہچان کر کہا - کیوں بے میں نے جو تم سے کہا تھا کہ میرے مُلک میں نہ رہنا - جواب دیا بلّیا لیوں - ہم سب مُلکوں میں پھر آئے جہاں دیکھو تہاں آپ ہی کو مُلک دیکھو یا تبیں ہار مان اب آسمان کی راہ لئی ہی ؛ اِس لطیفے سے خوش ہو بادشاہ نے اُنکی تقصیر معاف کی اور نوکری بحال

نقل ۱۴

کسی کنجڑن نے چالیس برس کی عمر میں ...ی

بادشاہ اُنسے چہل کرتے ؛ اِس سے وے بھی
گستاخ ہو رہے تھے ؛ ایکدِن بادشاہ نے اُن
میں سے کسی کو کہا گاؤ - وہ بولا نہیں
جہاں پناہ بیل - پھر حضرت نے فرمایا ابے کچھ
بول - جواب دیا مول بیس رُپے - پھر
شاہ نے کہا کیا حرامزادہ ہی - اُس نے کہا
حرامزادہ ہو تو کوڑی نہ لوں ؛ اِتنی بات
کے سُنتے ہی بادشاہ نے خفا ہو کر اُنھیں کہا کہ
میرے مُلک میں رہے تو بیطرح پیش آؤنگا
اور قلعے سے نِکلوا دیا ؛ بے مارے ڈر کے دِن
کو تو دو کوشی چو کوسی شہر کے باہر گانو میں
نکل جاتے اور رات کو آتے - اِسی بھانت نِت
شام کو آوتے اور دو گھڑی کے تڑکے چلے جاتے

جھُنجھلایا ۔ اُس نے اُس کے جواب میں یہہ دوہا پڑھ سُنایا

کنک کنک تیں سَو گُنی مادِکتا ادھکاے
وُہ کھائے بَورات ہی یہہ پائے بَورائے

نقل ۱۲

متھرا کے چوبے بڑے تھے باز ہوتے ہیں - ایکدن کوئی چوبے بازار سے نارو بینگن خرید لایا ۔ دیکھکر اُس کی جورو نے پوچھا کہا بہرتا کروں - یہہ بولا سوتیں کہا چوک پڑی - اُسنے جواب دیا لوگ تمھیں جو یسی کہتے ہاں ۔ یہہ سُن چوبے لاجواب ہوا

نقل ۱۳

لار کپور نام دوکلاونت اکبر کے یہاں تھے - اکثر

پیارا بکرا یاد آیا کہ جب نہ تب اُس کی بھی اِسی طرح ڈاڑھی ہلتی تھی - اِس لئے میں روتا ہوں ٭ یہ سُن سب کھِل کھِلا اُٹھے اور واعظ شرمندہ ہو دم کھا رہا

نقل ۱۱

کوئی بڑا دولتمند تھا پر اُس کے فرزند نہ تھا - اُس نے لڑکے کی خاطر بہتیرے تردد کئے اور رُپے خرچے لیکن نہ ہوا - تب اُس نے ہار مان ایک غریب کے لڑکے کو گود لیا اور اپنے مال اسوال کا مالِک کیا ٭ کتنے ایک دن بعد وُہ مر گیا - یہ اُس مال کو پاتے ہی لگا اندھا دُھند اُڑانے اور کچال چلنے - اِس کی یہ چال دیکھ کسی نے ایک سے پوچھا کہ اِس کا کیا سبب جو یہ دولت پاتے ہی

لیا اور کہا کہوں بابا فقیر کو کچھ جواب نہ مِلا ۔
اُن میں سے ایک نے کہا سائیں روپیا تو لیا اب کیا
کہتے ہو ٭ بولا بابا یہہ تو منھ مار کے لیا ہی ابھی فقیر
کا سوال باقی ہی

نقل ۱۰

ایک واعظ کِسی گانو میں کِتنے ایک آدمیوں کو
وعظ کرتا تھا - اِس میں کوئی گنوار بھی وہاں آ
بیٹھا اور لگا اُس کا منھ دیکھ دیکھ بیقرار ہو رونے ٭
اِس کو روتا دیکھ سب نے جانا کہ یہہ کوئی بڑا
موم دِل ہی جو اِتنا روتا ہی ٭ ایک نے اِس سے
پوچھا کہ بھائی سچ کہہ تو جو اِتنا روتا ہی تیرے دِل
میں کیا آیا ہی ٭ واعظ کو اُنگلی سے بتا بولا کہ اِن
میاں کی ڈاڑھی ہلتی دیکھ مجھے اپنا موا ہوا

ہی جو تو رِ جھاے لیگو ؛ یہہ سن وہ شرمندہ ہو چپ چاپ اُٹھ کر چلا گیا

نقل ۹

کئی ایک امیرزادے کسی جگہہ ایک مینخ گاڑ اُس پر رُپیا رکھ تیر اندازی کرتے تھے اور شرط یہہ تھی کہ جو اِس رُپے کو اُڑاوے سو لے ؛ اِتّفاقاً کسی آزاد نے جا وہیں اُن سے سوال کیا کہ بابا کچھ ہولا نام کا سودا کرو - اُن میں سے ایک نے ہنس کر کہا شاہ صاحب - نشانہ مارو اور رُپیا لو ؛ فقیر نے جھٹ اُسکے ہاتھ سے تیر کمان لے یا معبود کر کے ایک تیر اٹکل پچّو مارا کہ وہ رُپیا اُڑ گیا ؛ وے بولے واہ وا - اِن نے دوڑ کر رُپیا تو اُٹھا

نقل ۸

کسی ٹھاکر دوارے میں کئی ایک عطائی چین
سے بیٹھے گا رہے تھے اور بہت سے لوگ
کھڑے سنتے تھے ۞ اِس میں ایک ڈھیٹھ بیڑاگی
آیا اور اُن کے ہاتھ سے تنبورا لے سب کے بیچ
میں بیٹھ لگا بیڑا ہو گانے - اُس کا کھڑاگ
سُن سب اُداس ہوئے پر کوئی کچھ نہ بولا
نِدان ایک چھوٹے کھڑا سنتا تھا - اُس نے
کہا باجو بس کرو بہت گائے - بیڑاگی
نے کِھجلا کے جواب دیا مہاراج - میں تو اپنے
ٹھاکر کو رجھاتا ہوں اور کوئی ریجھا تو کہا اور
نہ ریجھا تو کہا ۞ چھوٹے بولا سارے مو کو ن تو
رجھائے ہی نہ سکیو کہا ٹھاکر مو ہو سوں کو ڑھ

نقل ٧

دو کلاونت دکھن سے کمائی کئے دِلّی کو چلے آتے تھے کہ راہ میں دو ٹھگوں نے آ لیا اور لگے برچھیاں بھالے اُٹھا اُٹھا کے مار مار ڈال ڈال پکارنے ۔ اُس وقت یہ دونوں بھی جھٹ گاڑی سے اُتر چٹ پٹ تل کے ٹٹو پر جا بیٹھے اور لگے اُن سے پوچھنے کہ بلّیا لوں مار مار ڈار ڈار ہی کر جانیو ہی کبھی کبھو چھوڑ بھی ہو گھنیلے ہو ۔ اُن میں سے ایک بولا کہ کیوں ۔ انھوں نے کہا کہ کیوں جگ ہو مار یو جات ہی ۔ اِس لطیفے سے وے بہت خوش ہوئے اور اُنھیں نہ لوٹ ہنسکر چلے گئے

تو ہر ایک کے گھر سے اُسے بُلاہٹ ہوئی - تب
اُس کے کسی آشنا نے پوچھا کہ کہو دوست - آج
تم اکیلے کیا کروگے اور کس طرح گھر گھر فاتحہ
پڑھوگے ؛ بولا بھائی مجھے فاتحہ پڑھنے سے کیا کام -
مُردہ دوزخ جاے یا بہشت مجھے اپنے حلوے
مانڈے سے کام ہی

نقل ۶

کسی نے ایک گیانی سے پوچھا کہ مہاراج -
آدمی جگمیں پیدا ہو کر دُکھ سے کیونکر چھوٹے
سو دیا کر مجھ سے کہو - تب اُس نے اِسکو
جواب تو نہ دیا پر یہہ دوہا پڑھا

بھگت مان بھگتے بنے گیانی مورکھ دوے
گیانی بھگتے گیان سوں مورکھ بھگتے روے

گھوڑا کیا ٭ کہا بیٹا اِس بات کا کچھ مُضایقہ نہیں لیکن ہُشیار رہنا خوب ہی

نقل ۴

ایک بنیاں کہیں گیا تھا دو تین دن بعد وہاں سے آیا تو اُس نے اپنے گھر کا دروازہ بند پایا ٭ پُکارا کِواڑا کھولیو۔ بھیتر سے اُس کی جورو نے جواب دیا کہ کھولوں ہوں بابا۔ اُس نے سُنکر کہا ای رانڈ کیا بکتی ہی۔ وُہ بولی میری آنکھ دُکھہ ہی۔ کہا آنکھ کی توسیج ہی میّا

نقل ۵

پٹھانوں کی کسی بستی میں ایک مُلّا تھا۔ جو کچھ فاتحہ درود کا اُن کے کام ہوتا اُس کو بُلا لیتے اور اپنا کام کروا لیتے ٭ اِس میں شب برات جو آئی

چُپ ہو رہا

نقل ۳

کوئی راجپوت بہُت افیم کھاتا تھا - اِتّفاقاً اُسے سفر درپیش ہوا اور کسی منزل میں جا کر اُترا - وہانکے لوگوں نے آکر اِس سے کہا کہ ٹھاکُر صاحب یہاں چوری بہُت ہوتی ہی آپ چوکسی سے رہئیگا ٭ یہہ بات سُنکر رات تو اُس نے جاگ کر کاٹی پر یہہ بات جیمیں رکھّی کہ چوری بُہت ہوتی ہی ٭ فجر ہوتے ہی گھوڑے کی پیٹھ لگا - ایک شہر کے بیچ چلا جاتا تھا کہ ایکا ایکی پینک سے چونک کر پُکارا ارے رمچیرا ارے رمچیرا گھوڑا کہاں - وُہ بولا مہاراج - گھوڑے ہی تو بیٹھے ہی جاتے ہو اور

نہ کہنے پایا کہ اُسنے اپنے جوگ سے اِس کا مطلب دریافت کرکے کہا

دوہا

سُکھ دُکھ پرتِ دن سنگ ہی مینٹ سکے نہیں کوے
جیسے چھایا دیہہ کی نیاری نیک نہوے

یِہہ معقول جواب پاوہ بِچارا صبر کر اپنے گھر آیا ؞

نقل ۲

ایک اندھا بیراگی کاشی کے بیچ منکر نِکا گھات پر بیٹھا گہن میں دہی پیڑے کھا رہا تھا کہ دیکھکر کِسی پنڈت نے پوچھا سوُرداس جی یِہہ کیا کرتے ہو - بولا مہاراج دہی پیڑے کھاتا ہوں کہا گہن میں - جواب دِیا - بابا میرے گروکی دیا سے سدا ہی گہن ہے ؞ یہہ سُن پنڈت ہنسکر

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نقل ١

ایک ساہوکار پوتروں کا رجّا زمانے کے پینچ پاچ میں
آ اپنی دولت سب کھو بیٹھا اور لگا نپٹ دکھ
پانے اور فاقے کرا کے کھینچنے ۞ نِدان اُس کے جی
میں یِہ خیال گذرا کہ جو میں کسی مہا پرس یا سِدھ
کے پاس جاؤں تو یِہ دکھ مِٹے کیونکہ سُنا ہی
ساوھ کے درشن سے بیادھ جاتی ہی ۞ اِتنا بِچار
چلا چلا ایک جوگی کے پاس گیا - یِہ اُسّے کُچھ

साहूकार ساہوکار A great merchant.

पोतड़ोंका پوتڑوںکا } Happiness or prosperity from one's birth.

रज्जा رجّا }

महापुरुष مہاپرش A religious man.

साध سادھ Adj. 1, virtuous. 2. n. s. m. a religious man.

दरशन درسن Seeing, interview.

ब्याध بیادھ Pain, anguish, disease.

प्रतिदिन پرت دن Every day, always.

देह دیہہ The body.

छाया چھایا Shade, shadow.

न्यारी نیاری Fem. of نیارا apart, separate, just.

मअ़क़ूल معقول Reasonable, proper,

२ ۲ STORY 2d.

बैरागी بیراگی 1, adj Austere, recuse. 2, A Fuqeer who practises austerities.

काशी کاشی The name of Benares.

गहन گہن An eclipse.

दही دہی Coagulated milk.

पेड़ा پیڑا A kind of round sweetmeat made with curds.

सूरदास † سورداس A blind man.

गुरू گرو A spiritual guide, pastor, teacher.

दया دیا Pity, mercy.

---

† It means literally the *slave of a Hero*; it was the name of a celebrated singer who was blind, and hence applied to every blind man.

सदा | سدا | Always.

---

३ ٣ STORY 3d.

अफ़ीम | افيم | Corrup. of افيون or Suns. अफेरा N.S. F. opium.

दरपेशहोना | در پیش ہونا | To happen, to become necessary.

मनज़िल | منزل | A stage, halting [place

उतरना | اُترنا | To come down, to alight, to stop at a place.

ठाकुर | ٹھاکر | 1. An idol. 2. A lord, [master.

चौकसी | چوکسی | Attention, diligence.

घोड़ेकी पीठ लगना | گھوڑے کی پیٹھ لگنا | To mount on horseback.

पीनक | پینک | Intoxication and

४ ४

drowsiness from opium.

चौंकना چونکنا To start, to start [from sleep

रमयेता رم جیترا (properly रामयेता the slave of God,) A name generally given to slaves by the Hindoos.

---

४ ۴ STORY 4th.

बनिया بنیاں A shopkeeper, grain [merchant.

किवाड़ا کواڑا A valve, folding door.

रांड राند A widow.

बकना بکنا To prate, to chatter.

मैया میاں Mother.

---

५ ۵ STORY 5th.

पठान پٹھان A tribe of the Moo-[sulmans.

मुल्ला ملا A school - master, a [doctor.

फ़ातिह: فاتحه Prayers offered up in the name of the saints, &c.

दरूद درود Benediction, bless- [ing.

शबिबरात شب برات The 14th day of the month Shuaban, on which the Moosulmans make the offerings in the names of deceased relations.

बुलाहट بلاہٹ Veb. N. F. calling.

आशना آشنا Acquaintance, friend.

दोज़ख़ دوزخ Hell.

बहिश्त بہشت Heaven.

हलुवा حلوا A kind of sweet-meat made of flour, ghee, and sugar.

मांडा مانڈا A kind of bread.

६ ٦ STORY 6th. 6

ज्ञानी گیانی Intelligent, judicious.

जग جگ The world.

दोहा دوہا A couplet.

भुगतमान بہگت مان Fit to enjoy.

भुगतना بہگتنا To suffer, to receive the punishment of a crime.

मूरख مورکہ Ignorant.

७ ٧ STORY 7th.

कलावंत کلاونت A kind of singers,

कमाईकरना کمائی کرنا To earn.

दौड़े دوڑے Highwaymen who rob on horse-back.

बरछी برچھی A spear, a javelin.

भाला بھالا A long spear.

झट جھٹ } Quickly.
अट چٹ

पनतल پرتل The baggage carried on a bullock or Tattoo—ٹٹو کا پرتل a pack [horse.

बलैया लौं بلیا لوں The 1st person Sing. of بلیا لینا To draw the hands over the head of another, in token of taking all their misfortunes upon himself.

चौपड़ چوپڑ The name of a game played with long dice

जुग جگ A pair. Two men standing on the same square in the game of Choupur.

लतीफ़ः لطیفہ Jest, joke, witti- [cism.

८ STORY 8th

ठाकुरद्वारा	ٹھاکر دوارا	A temple of Idols.
अताई	اتائی	One who sings & dances gratis.
चैन	چین	Ease, rest.
ढीठ	ڈھیٹھ	Impudent, forward.
तंबूरा	تنبورا	A sort of fiddle.
बेसुरा होना	بیسرا ہونا	To be out of time.
घटराग	گھٹراگ	Singing discordantly.
उदास	اداس	Dejected, sorrowful.
चौबे	چوبے	A Bramin. The descendants of those acquainted with the four vedus.
खिझलाना	کھجلانا	To get angry.
रिझाना	رجھانا	To please.
साला	سالا	Wife's brother, bro-

ther in law.

कूढ़ کوڑه Ignorant.

---

९ ۹ STORY 9th.

अमीनज़ादः اميرزاده Son of a nobleman.

मेख़ ميخ A pin, peg. [fix.

गाड़ना گاڑنا To drive, to set, to

तीरअंदाज़ी करना تیراندازی کرنا To shoot arrows.

शर्त شرط 1st. Condition. 2d. [wager.

उड़ाना اُڑانا To cause to fly.

इत्तिफ़ाक़न اِتّفاقاً By chance, accor- [dingly.

आज़ाद آزاد A kind of Fuqeer.

मौला مولا Lord, master.

सौदा سودا Trade, traffic.

निशानः نشانہ A but, mark.

यामअबूद یا معبود O God! [ture.

अटकलपच्चू اٹکل پچو At random, at a ven-

सांईं سائیں 1. Lord, master. 2. [Fuqeer.

---

१० ۱۰ STORY 10th.

वाइज़ واعظ A preacher, pastor.

गंवार گنوار An inhabitant of a [village.

मोमदिल موم دل Soft hearted.

डाढ़ी ڈاڑھی Beard,

खिलखिलाना کھل کھلانا To laugh heartily.

दमखानहना دم کھا رہنا To remain silent.

---

११ ۱۱ STORY 11th.

फ़रज़ंद فرزند A son.

तरद्दुद تردّد Anxious consideration.

हारमानना ہار ماننا To give up (in despair.)

गोदलेना گود لینا To adopt, or take a son by choice.

अंधाधुंध اندھا دھند } To expend extravagantly, carelessly.
लुटाना لٹانا }

कुचाल کچال Bad practice, misbehaviour

बुकलाना بکلانا To act, or talk foolishly.

कनक کنک 1. Gold 2. The plant *Dahúra*, which if eaten, intoxicates.

सौगुनी سوگنی Hundred fold.

मादिकता مادکتا Intoxication.

अधिकाना ادھکانا To increase, or augment

बौराना بورانا To be mad.

१२ ۱۲ STORY. 12th.

ठट्ठेबाज़ ٹھٹّھے باز A jester, joker.

मानूबैंगन مانو بینگن The egg plant of ma-
[roo (large.)

कहा کہا What ? for کیا

भरता بھرتا 1. A husband. 2.
Vegetables boiled or fried, and broken & pressed
[in the hand.

मोतें موتیں For (मुहसे) from
[me, by me.

चूकपड़ना چوک پڑنا To blunder, err, mis-
[take.

जोयसी جوے سی The wit of the sto-
rey consists in a pun on the word جوسی an as-
trologer, or astronomer, جوے a wife and the par-
ticle of similitude, سی in the manner of a wife.

१३ ۱۳ STORY 13th.

चुहलकनना	چہل کرنا	To jest, to look merry.
गुस्ताख़	گستاخ	Impudent &c.
गाओ	گاو	1. The imp. of گانا to sing, &c. 2. A cow.
बैल	بیل	A bull, an ox.
भांति	بھانت	Manner, mode, kind, sort.
नित्त	نت	Always.
तड़का	ترکا	Morning, dawn of day.
बड़	بڑ	The Bengal fig tree.
घोड़ामारना	گھوڑا مارنا	(Met.) to gallop off.
पेड़	پیڑ	Tree.
बे	بے	A voc. particle used contemptuously.
बलैयालेंउ	بلیالیوں	A mode of salutation

expressive of perfect devotion.

हार मानना ہار ماننا To give up. [vice.)

बहाल بحال Reinstated (as in ser-

---

१४ ۱۴ STORY 14th.

कुंजड़न کنجڑن The fem. of کنجڑا a woman who sells vegetables;

निपट نپٹ Excessive, very.

लाड़ لاڑ Lovingness, the play- [fulness of a child.

प्यार پیار Ditto.

फ़ज़ीहती فضیحتی Disgrace, infa- [my.

क़ज़ाकार قضا کار By chance.

हयात حیات Life,

फ़ज़ल فضل Virtue, excellence.

बहुतेरी بہتیری Much.

१५ ۱۵ STORY 15th.

कायथ کایتھ Name of a tribe of [Hindoos.

शाहसवार شاہسوار A good Horseman.

मेंडकी مینڈکی A frog; also the rump [of a horse.

भैयाजी بھیاجی A brother, generally applied to a cast of the Hindoos employed as [writers.

आसन آسن A seat.

१६ ۱۶ STORY 6th.

बट्टना بٹنا Answers to the idiomatic expression, *to make*, to *profit*, as آج میں نے کچھ نہیں بٹّا I made nothing today.

निहंगलाडला نہنگ لاڈلا A careless person.

पड़ैासी	پڑوسی	A neighbour.
पूंजी	پونجی	Stock, treasure.
ब्यैाहान	بیوہار	Profesion, calling, [transaction.
बेठैानठिकाने	بےٹھور ٹھکانے	Inconsiderately.
महाजनी	مہاجنی	The business of a muhajun. 2. Interest.
दिया	دیا	1. He gave. 2. A lamp.
अनूप	انوپ	Incomparable.
धनना	دھرنا	To place.
ज्यैा	جو	If.
कन	کر	The hand.

---

१७ ١٧ STORY 17th.

गुस्सःवन	غصہ ور	Adj. passionate.
अंधाकुआ	اندھا کوا	A dry well.
मनघटा	من گھٹا	The circle round a

Well

१८ ۱۸ STORY 18th.

खुशमसख़्रा خوش مسخرا A pleasant jester.

गुड़ گڑ Treacle, molasses,

ज़राफ़त ظرافت Wit, elegance, jocu- [larity.

छठी چھٹی Sixth ; a religious ce- remony performed on the sixth day after child [birth.

जनमघुटी جنم گھوٹی A medicine given to [new-born infants.

कानछिदाना کان چھدانا To cause to pierce, [or perforate the ear.

१९ ۱۹ STORY 19th.

पोस्ती پوستی One who intoxi-

cates himself with the infusion of poppy.

ज़टलमानना زٹل مارنا To chatter, to talk [foolishly.

क़ासिद قاصد An hurkaru, messen- [ger.

---

२० ۲۰ STORY 20th.

सैर سیر Travelling, amuse- [ment.

ग़ोतः غوطہ Diving.

पैठना پیٹھنا To enter.

ह्रानमानना ہار ماننا To give up a dis- [pute when helpless.

ख़ैरात خیرات Alms.

तमस्सुक تمسک A note of hand, [a bond

धांधलपना دھاندھل پنا Subterfuge, wran- [gling, trick.

भरपाना بھر پانا To receive the full amount; it is said to express disappointment, as میں نے بھر پایا *I am paid.*

---

२१ ۲۱ STORY 21st.

कायथ کایتھ A tribe.

लिखापढ़ा لکھا پڑھا Learned.

बह्सना بحثنا To dispute, argue.

उत्तम اُتّم Adj. Excellent.

बरन برن One of the four tribes among Hindoos.

चतुर چتر Wise, intelligent.

संगत سنگت Companionship

क़ज़ियः मिटना قضیہ مٹنا To make up a dis-[pute.

मुआमलः معاملہ Business, affair.

मुनसिफ़ मानना منصف ماننا Agreeing to justice

or determination of a judge or arbitrator.

दऽवा دعوا Claim, pretension, [plaint.

इज़हारकरना اظہار کرنا To explain, make e-[vident, express.

स्वातबूंद سوات بوند A drop which falls while the moon is in the Mansion Swatee, if in-[to shell, pearls are formed.

सीपी سیپی A shell.

मुकात مکت A pearl.

कदली کدلی A plaintain.

भयौ بھیو The same as भ

कपूर کپور Frankincense.

कारा کارا A black snake.

मुख مکھ The face.

बिष بکھ Poison.

सोभा سوبھا Ornament, decorati-[on.

सूर سور Blind.

---

२२ ۲۲ STORY 22d.

पोस्त پوست The infusion of pop-
[py heads.

घोलरहना گھول رہنا To continue mixing
[or dilating liquors.

झाड़झूड़ جھاڑ جھوڑ Jungle, bramble.

खरगोश خرگوش A hare.

धक्का دھکا A shove, a push.

लुढ़कपड़ना لڑھک پڑنا To roll, to slip.

मुरब्बी مربّی A guardian, protec-
[tor, patron.

कूंडी کونڈی An instrument or vessel in which snuff, bhung, &c are ground.

सोंटा سونٹا The same as سونٹا the dim. of سونٹ a club, mace, pestle.

बग़ल بغل The arm-pit.
चौपाया چوپایا Any four-footed a-nimal.
मुशाबह مشابہ Like, resembling.
दुलत्ती دُلتّی The kick of a four (footed animal.

---

२३ ۲۳ STORY 23d.

बदलिहाज़ بدلحاظ Disrespect, met· [shameless.
बेतमीज़ بے تمیز Want of sense, or [discretion.
इम्तिहान امتحان Examination, trial.
तरबियत تربیت } To cause to educate
करवाना کروانا } or instruct.
महलसरा محل سرا A place appropriated for women, a seraglio.

सरिशाम	سرِشام	The commencement of the evening.
नथ	نتهه	An ornament in the (nose of a woman.
अनक़रीब	عنقریب	Near.
सीठालगना	سیٹها لگنا	To be insipid, or (tasteless.
रैन	رین	Night.
इरशाद	ارشاد	To say.
फ़रमाना	فرمانا	
ढब	ڈهب	Manner, way,
मंदहोना	مند هونا	To become lessened (or abated,
पूरबनी	پُربنی	A woman of the Eastern part of the country,
निस	نس	Night.
ऊतर	اوتر	Answer,

पायख़ानेकी हाजत | پاۓخانیکی حاجت } Vide Horne Tooke's catalogus cacatus. !

बेगमात | بیگمات Women of rank, (ladies, queens,

सहेलियां | سہیلیاں Female companions, (hand-maids.

खिलखिला उठना | کھل کھلا اٹھنا } To burst out in laughter.

STORY 24th. ۲۴

२४

सौसियाने एकमत | سو سیانے ایک مت } A hundred wise men will be of one (opinion, a prov. and a very poor one.

सिरसिरअक़ल | سرسرعقل A prov. in opposition to the above meaning, many men of many minds.

गुनगुनबिद्या | گن گن بدیا May be understood by the following verse of Pope.

"One science only will one genius fit,
So vast is art, so narrow human wit!"

आज़मालेना آزما لینا To try, to essay.

हौज़ حوض A fountain or [bath.

निन्यानवे ننّا نوے Ninety-nine.

बेतरह بیطرح } Idiom. To treat ill.
पेश आना پیش آنا }

ख़ाह خواه Either, whether,
from خواستن to wish.

---

२५ ۲۵ STORY 25th.

अफ़ीमी افیمی An eater of opium,
[a drunkard.

नशःपीना نشہ پینا To drink to tipple.

डिबिया ڈبیا A little box.

मीठेचांवल میٹھے چانول Sweet rice.

आक़ा آقا A master.

दमदेना دم دینا Idiomat when meat
or rice is nearly boiled, and the fire is lessen-

ed under the pot, a small quantity of charcoal is put on the cover and the meat left to simmer, or دم دینا 'or as tea in a pot, to draw.

क़िब्लः قبلہ Has various meanings, it here means O father!

फ़िद्वी فدوی Devoted, servant.

---

२६ ٢٦ STORY 26th.

अंबारीदार ابنباری دار An elephant with the *Ambaree* or canopy.

ख़वासी خواصي The place where one sits behind a great man upon an elephant

मुखड़ा مکھڑا The face.

काजल کاجل Collyrium.

मिस्सी مسی A powder with which they tinge the teeth, a black colour.

नखसिख نکھ سکھ From top to toe
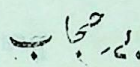
lit. from the nail of the toe, to the lock of the hair on the crown of the head.
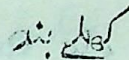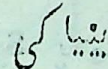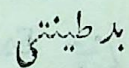
सिंगारकरना	سنگار کرنا	To adorn.
मद	مد	Wine, spirit.
किवाड़	کواڑ	A folding door.
बाज़ू	بازو	The fold of a door.
बेहिजाब	بے حجاب	Exposed, without [purda.
खुलेबंद	کھلے بند	*In dish abille*, naked.
बेबाकी	بیباکی	Fearlessness.
बदतीनती	بد طینتی	Viciousness.
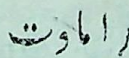
---

२७ ٢٧ STORY 27th.

तीरथ	تیرتھ	Pilgrimage.
मठ	مٹھ	A temple. [fuqueers.
रामावत	راماوت	System of a tribe of
नीमावत	نیماوت	The system of the

followers of Neemanund, a Faqueer.

नानकपंथी نانک پنتھی The followers of Nanuk, a faqueer.

दादूपंथी دادوپنتھی The religion of Dadoo a Faqueer

सन्यासी سنیاسی Another tribe who pray to Muhadevu.

मत مت System, &c.

बिवाद بباد Quarrel.

पंथ پنتھ System, way.

चौड़ाई چوڑائی Extensive, boasting.

बड़ाई بڑائی Greatness,

निदान ندان At length,

तूंबा تونبا A hollowed gourd in which beggars carry their water.

खप्पर کھپر An earthen cup used by Jogees.

नोबतपहुंचना نوبت پہنچنا To happen, to arrive,

अवधूत ابدوت A tribe of Faqueers who have no wordly cares and think only of God.

अर्थ ارتھ Meaning,

घट گہت The body, a water pot.

मूरत مورت A statue, an idol,

बिबेक بیبیک Discretion,

आरसी آرسی A mirror, looking glass,

खंड کہند A bit.

---

२८ ٢٨ STORY 28th.

बख़ील بخیل A miser,

झूठेहाथसे कुत्तानमारना جہوتہے ہاتہہ سے کتا نہ مارنا Not to strike a dog with the hand which

has touched food; to express excessive avarice.

भूलाभटका	بهولا بهٹکا	Missing the road,
दादहेना	داد دینا	To praise,
बारे	بارے	At length, one time
बकावल	بکاول	Head cook,
खासा	کهاسا	Food,
बहाना	بہانا	Trick, deceit,
मक़सूद	مقصود	Wish, intent,
पांयती	پائینتی	The foot of the bed,
लोटतरहना	لوٹت رہنا	To lie sleepless.
बला	بلا	Evil, misfortune,
बिन	بن	Without,

---

२९ ٢٩ STORY 29th.

छदाम	چهدام	A species of coin, four of which make a pysa.
भड़भूंजा	بهڑبهونجا	A man who par-

ches grain,

भुनैना چبینا Parched grain, eaten
[by the natives.

थंभा کھنبھا A pillar.

घपभी کھپچی An armfull.

लाल वुझक्कड़ لال بجھکّر The king of Go-
[tham, or king of the fools.

दुश्वार دشوار Difficult.

छान چھان Chupper, thatch.

बलैंडा بلینڈا A ridge pole of a
[house.

---

३० ۳۰ STORY 30th;

ख़ुराक خوراک Food.

रातिब راتب Daily allowance of
food (particularly to animals).

मूंढा مونڈھا A footstool.

बला بلا Evil, misfortune, ca-
[lamity.

ढोलक ڈھولک A little drum.

धूम دھوم Tumult, bustle.

शहरी شہری An inhabitant of a
[city.

क़िबलऐआलम قبلۂعالم Father, king.

क़सूर قصور Fault, defect, omis-
[sion.

एवज़ عوض Instead.

---

३१ ۳۱ STORY 31st.

बटोही بٹوہی A traveller.

बन بن Wood, forest.

डंडवत ڈنڈوت Obeisance from ڈنڈ
a staff or stick & وت manner, to fall down
[like a stick.

नाथ ناتھ A master, husband,

हिंगलाज ہنگ لاج A Temple of Devee.

ज्वालामुखी جوالامکھی A Volcano.

हरिद्वार ہردوار A leify on the banks of Gunga, from ہر god. دوار a door and lit. the [door of God, or God's gate.

कुरक्षेत्र کرچھیتر The place where the battle of the Pandva and Kuoruvu was fought [between the Sutledge & Kurnal.

गंगागोदावरी گنگاگوداوری A place.

मेला میلا A fair.

सेतबंध سیت بندھ } The place where
रामेश्वर رامیسر } Ram built a bridge and on which was placed the image of Muhadeo; the name of Muhadeo.

गृहस्ती گرہستی A farmer, a peasant.

दोष دوش Blame, a crime, fault,

भटकना بهتکنا To go about foolishly.

भरमगंवाना بهرم گنوانا To lose character.

कहावत کہاوت A proverb, saying.

निरमला نرملا Pure, clear, (as water.)

गंधीला گندهیلا Stinking, offensive.

साधूजन سادهو جن A good man.

रमना رمنا To wander, travel.

दागलगना داغ لگنا To receive a bad name.

---

३२ ۳۲ STORY 32.

ताजिर تاجر A merchant.

ख़ानेजंग خانۂ جنگ A breeder of dis-
[turbances (vul. a *kicker up of rows.*

ख़ानेजंगी خانۂ جنگی Civil war, bickering.

मामीपीना مامی پینا To shew partiality.

डांडभरना ڈانڈ بهرنا To fine, punish.

सीधाहोना سیدها ہونا To become upright.

हाथउठाना	ہاتھ اُٹھانا	To refrain.
तौबःकरना	توبہ کرنا	To promise to sin [no more.
बल	بل	A coil, twist.

३३ ۳۳ STORY 33

सेज	سیج	A bed.
संवारना	سنوارنا	To adorn, arrange.
बांदी	باندي	A female dam.
करवटलेना	کروٹ لینا	To turn in bed.
मुरदार	مُردار	A term of reproach, a dead body.
ताज़ियानः	تازیانہ	A whip, a scourge.
कोड़ा	کوڑا	Ditto.
बेदरेग	بیدریغ	Pitiless.
तमाशा	تماشا	A shew, spectacle.

३४ ٣٤ STORY, 34

शौक़	شوق	Inclination.
मनादीफेरना	منادی پھیرنا	To proclaim.
शौक़ीन	شوقین	Desirous, lascivious.
तकल्लुफ़	تکلف	Ceremony, extra- [vagance,
लालच	لالچ	Greediness.
पिंजरा	پنجرا	A cage.
ग़िलाफ़	غلاف	The cover of any [thing.
वस्फ़	وصف	Quality.
ग़र्रा	غرّا	Impudence.
हाज़िरजवाबी	حاضرجوابی	Ready at reply, wise.
इनआम	اِنعام	Present, gift,

३५ ٣٥ STORY 35.

बरज برج A Bastion.

खेत کھیت A field,

सबज़ः سبزہ Freshness, greenness,

मोर مور A peacock,

अरहर ارہر A sort of grain,

ज़राफ़त ظرافت Wit, humour, beau- [ty.

तोर تور Grain, and also (thine) تیرا

मोर مور A peacock, and [also میرا my.

फाटतजात है پھاتت جات ہی From پھاتنا to be torn, split.

पैठतजात है پیٹھت جات ہی Entering.

३६ ۳۶ STORY 36

कबीश्वर	کبیشور	The prince of poets.
जिहालत	جہالت	Ignorance.
गुन	گن	Honor, art, &c.
ताकौ	تاکو	for تسکا
ठांव	ٹھانو	Place,
दीगंबर	دیگنبر	Naked
मुक्ता	مکتا	A pearl,
पैहरत	پیہرت	Swimming
गुंज	گنج	A flower (the seed. [of)
किरात	کرات	Name of a race of [mountaineers.

३७ ۳۷ STORY 37.

तालिबुलइल्म	طالب العلم	A learner, a student.

आलिम عالم A learned man

मुश्ताक़होना مشتاق ہونا To be desirous, &c.

मुताल्अ़करना مطالعہ کرنا To contemplate, [consider, read.

मुअद्दबबैठना مؤدب بیٹھنا To sit in a respect- [ful manner.

ख़ादिम خادم A servant.

लियाक़त لیاقت Fitness.

इल्मिग़ैब علم غیب The knowledge of past, present and future events.

अख़्लाक़ اخلاق Disposition, the good [properties of mankind.

साहिबि अख़्लाक़ صاحب اخلاق A man of good disposition.

---

३८ ۳۸ STORY 38.

बहरा بہرا Deaf.

गड़रिया	گڑریا	A shepherd.
भेड़	بھیڑ	Sheep.
सौंहीं	سونہیں	Face to face, opposite.
टांग	تانگ	The foot.
पैग़ाम	پیغام	A message.

---

३९ STORY 39.

सख़ी	سخی	A liberal man.
बख़ील	بخیل	A miser.
दरमाह:	درماہہ	Monthly pay.
महीना	مہینا	Ditto.
ग़नीम	غنیم	An enemy, a plunderer.
जीत	جیت	Victory.
हार	ہار	Defeat.
मुसाहिब	مصاحب	Companion.

संग्राम	سنگرام	Battle, war.
ताज़ी	تازی	Arabian (Horse.)

४०	۴۰	STORY 40.
कछुआ	کچھوا	A Tortoise, turtle.
कौवा	کوّا	A crow.
एकएकी मदद करनता	ایک ایک کی مدد کرنا	Assisting each other mutually.
चिड़ीमार	چڑیمار	A fowler.
मोती	موتی	A pearl.
निरास	نراس	Hopeless,

४१	۴۱	STORY 41.
विद्यार्थी	بدیارتھی	A learner.
झुकतझुकत	جھکت جھکت	Bowing, bowing.
कहा	کہا	for کیا What?
बूढ़ा	بوڑھا	An old man.

बार	بار	A child.
तोहि	توہ	To you.
हेसखे	ہے سکھی	O friend !
याकौ	یاکو	for اس کا Of this,
कौन	کون	What ?
बिचार	بچار	Consideration, reflection.
समद्र	سمدر	The sea.
अगम्य	اگمیہ	Bottomless, unfordable.
करार	کرار	The side, shore.
रतन	رتن	Pearls.
झुकत	جھکت	Bending down.
झिझुकत	جھجھکت	Starting.
अपार	اپار	Shoreless.

भाट بہات Name of a tribe (Poets, Bards)

डिवढ़ीदार ڈیوڑہیدار Porter.

ठाढे ٹہاڑے Standing.

बेदुआ بیدوا A reader of the *Beds*.

रस رس (Rhet) a word expressive of the passions, which a composition is calculated to excite. Taste.

बतियां بتیاں Words.

जानत جانت Knowing.

बांधत باندہت Binding.

हुवा ہوا Air.

असीस اسیس Blessing.

४३ STORY ۴۳

भंडसाल بهنڈسال The grain which is preserved for a year or more for sale and monopoly.

आमकेआम آم کے آم گٹھلی }
गुठलीकेदाम کے دام

४४ STORY ۴۴

ढाढ़ी ڈهاڑی A musician, singer.

हथियानबंद ہتھیا ربند Armed.

निहत्था نہتّها Unarmed.

मुजरा مجرا Obedience, respect; with the verb. *kurna,* to visit.

बख़रा بخرا A share, portion.

बांटा باٹا Share, portion.

राहगीर راه گیر A traveller.

ठठोल ٹھٹھول A jester.

बटुआ بٹوا A small bag, a purse.

चौक چوک A market, square of [a City

बाड़िया باڑیا The Knife grinder, mentioned in the Antijacobin!!

मसूरीबाड़ مسوری باڑ } To sharpen.
चिरवाना چروانا }

---

४५ ۴۵ STORY 45.

मसजिद مسجد A Temple, place of [prostration.

मीनार مینار A turret, obelisk [lit. place of light.

जांबलब جان بلب At death's door lit. the life on the lips.

गुमटी	گمٹی	A Tower, bastion.
बारी	باری	A young girl.
हत्या	ہتیا	Blood.
मोकौं	موکوں	For *moojhko*, to me.

---

४६ ۴٦ STORY 46.

चौंकपडना	چونک پڑنا	To start, &c.
चीख़	چیخ	A scream, screech.
घिरआनां	گھِر آنا	To be surrounded,
जातन	جاتن	For *jiske*,
सोई तन	سوئی تن	That body,
तन	تن	Body,
दूजा	دوجا	Another, for *doosra*.

---

४७ ۴۷ STORY 47th,

खत्रानी	کھترانی	The wife of a-*khutree*.

चुस्तचालाक چست چالاگ Sagacious, active,

बसंतऋतु بسنت رت The spring season,

बहनेली بہنیلی An adopted sister,

मनलगन من لگن Agreeable &c.

मुंहबोली منہ بولی An intimate sister (or friend,)

कोरा کورا New, unhandled (ap-aplied to earthen vessels,)

कुल्हड़ा کلہڑا An earthen vessel to drink out of,

होंठ ہونٹھ The lip,

रे رے A vocative particle expressive of contempt,

माटी ماٹی Earth.

कूल्हरा کولہرا A small vessel to drink out of.

डारूं ڈاروں From *darna,* to

throw down,

पटकाना پٹکانا To dash on the ground.

लात لات A kick,

सही سہی From سہنا to support, endure,

मूंकी مونکی A blow with the fists.

कुदार کدار A pole-axe,

अंगार انگار Embers, sparks remaining in the ashes.

---

४८ ۴۸ STORY 48th,

गुमाश्तः گماشتہ An agent, factor,

रोकड़ روکڑ Ready money, cash,

डाका ڈاکا An attack of robbers,

खड़भिड़के	(بهڑ)	From (بهڑ) and بهڑنا to meet as two armies,
डकैत	ڈکیت	A robber,
मुनीम	منيم	A master,
दुशाला	دوشاله	A shawl,
धन	دهن	Wealth.

---

४९ ۴۹ STORY, 49

आमद्वोरफ़्	آمد و رفت	Coming & going,
नटखटी	نتهتی	Artifice, waggishness, shrewdness.
टालमटोल करना	ٹال مٹال کرنا	To evade, prevaricate.
सदिमजलिस	سر مجلس	Assembly,
भंडारी	بهنڈاری	A treasurer.

५० ۵۰ STORY 50.

निजानतपेशः تجارت پیشہ Following the trade of merchants.

आशिक़तन عاشق تن A lover.

आहकनना آہ کرنا To sigh.

जहान جہان The world.

कमाना کمانا To earn, to save.

वेसलीक़ः بے سلیقہ Unknowing, not dextrous.

गंवाना گنوانا To trifle دن گنوانا to spend the day in trifling.

---

५१ ۵۱ STORY 51.

गेंगीना گو نگیرا A self-interested person

नित نت Always.

दमबाज़ी	دمبازی	Deceit.
सरना	سرنا	To conclude.
बीसरना	بیسرا	Forgotten.
छाछ	چھاچھ	Buttermilk.
ऋहीर	اہیر	Herdsman.

---

५२ STORY 52.

शमअ	شمع	A candle.
परवानः	پروانہ	A moth.
किनायः	کنایہ	An allusion, metaphor.
दई	دئی	God.
अनचाहत	انچاہت	Undesired.
कौ	کو	Genitive sign, of.
संग	سنگ	Along with.
दीपक	دیپک	A lamp.
भाँवें	بھانویں	Intention.

पतंग	پتنگ	A moth.
निसंक	نسنک	Fearless.
मोड़ना	موڑنا	To twist.
पाछे	پاچھے	Behind.

---

५३ ۵۳ STORY 53.

भेष	بھیک	Form, or appearance.
कंगाल	کنگال	A poor man.
गौष्य	گوکھ	Portico.
बिसूरना	بسورنا	To weep without noise.
चक्की	چکّی	A mill.
खिड़की	کھڑکی	A window.
डाढैंमार	داڑھیں مار	To weep with noise.
माररोना	ماررونا	
शौहर	شوہر	A husband.
बिल्लाना	بلّانا	To weep with grief.

लीलीपीली	لیلی پیلی	To be angry.
आंख्यकरना	آنکهہ کرنا	
समंदर	سمند ر	The sea.
बनज	بنج	Trade.
नेह	نیہ	Affection.
निहालकरना	نہال کرنا	To enrich.

५४	۵۴	STORY. 54.
नटख्यटी	نتکہتی	Rascallity, roguishness.
ख्याय:	خایہ	Testicle.
घड़ा	گہڑا	A water pot.
बरामदहोना	بر آمد ہونا	To come forth.
उलालपड़ना	اُلل پرنا	To upset.
कियोहो	کیو ہو	Had done, for کیا تھا.

५५ ۵۵ STORY, 55.

तमसखुर تمسخر Joking.

कोल्हू کولھو A mortar.

तुक تک Rhyme.

बोझनि بوجھن Loads.

---

५६ ۵۶ STORY, 56.

बीघा بیگھا A measure of land.

क़तआ: قطعہ A space.

फुलवारी پھلواری A flower-garden.

इजारा اجارا A farm,

हुद्दातुद्दीकरना ہدّاتدّی کرنا To threaten mutually.

हाथापाई करना ہاتھا پائی کرنا To beat mutually.

बीचबिचाव بیچ بچاو Arbitration.

माजरा ماجرا Circumstance.

सूत سوت Cotton thread.

कपास کپاس Raw cotton.

कोली کولی A weaver.

लठालठी لٹھا لٹھی Mutual beating.

---

५७ ٥٧ STORY 57.

बहसना بحثنا To dispute, or argue.

मनुष्य منکھ Man.

गुन گن Virtue.

धन دھن Wealth.

कबीश्वर کبیشور Prince of poets.

सालिस ثالث An arbitrator, (3d).

मानना ماننا To agree to.

मुक़द्दमः مقدمہ Affair.

धर्म دھرم Faith.

सोरठा سورٹھا A certain metre.

तैं تیں From.

गरुवौ گروو Dignified.

होत ہوت Is.

संपत سنپت Wealth.

सहाय سہاے Assistance.

पून्यौ پونیو 14th day of the moon.

चंद چند The moon.

उदोत اُدوت Splendor.

दुतिया دُتیا 2d Lunar day, also,
2d day of the moon's decrease.

सरवर سرور Equal.

---

५८ ٥٨ STORY 58.

सूरबीर سوربیر Buhadur.

कायर کایر Coward.

सिफ़ात صفات Qualities. [in-law.

सुसराल سسرال House of the father-

गलाखोलके बोलना	گلا کھول کے بولنا	To talk aloud.
बिरियां	بریاں	Time.
गालियांगाना	گالیاں گانا	To sing indecent songs at marriages.
ससुर	سسر	Father-in-law.
बिरादरी	برادری	Family connections,
लोग	لوگ	People.
कोठा	کوٹھا	A small room.
निधड़क	ندھڑک	Fearless.
भूत	بھوت	A spectre.
पलीत	پلیت	A ghost.

---

५९ ٥٩ STORY 59.

भभूत	بھبھوت	Ashes.
धूनी	دھونی	A fire lighted by a fakeer,

सेली سیلی A fakeer's necklace.

सींगी سینگی A horn.

मुद्रा مدرا An Ear-ring worn by jogees.

बाघंबर باگھمبر A garment of tyger skin.

नंगधड़ंगा ننگ دھڑنگا Naked.

आसनमारना آسن مارنا To sit.

मगन مگن Pleased.

भजनकरना بھجن کرنا To call God to memory.

जोगी جوگی A certain cast of devotees.

जूआखेलना جوآ کھیلنا To play at dice.

सवांगबनाना سوانگ بنانا To disguise or imitate.

काफ़िलः قافلہ A caravan of travellers.

ग़ारतकरना غارت کرنا To plunder.

ताकपरबैठना تاک پر بیٹھنا To expect, or lie in wait.

नाथजी ناتھ جی Oh nath ! (Lord.)

आदेस آدیس A salutation of the jogees.

बहकाना بہکانا To lead astray, to deceive.

पीछानछोड़ना پیچھا نہ چھوڑنا To follow up.

---

६० ٦٠ STORY 60.

मुआमलः معاملہ Business.

धौल دھول A blow on the head.

धक्का دھکا A push,

धर्मावतार دھرماوتار A respectful saluta-

tion, personification of faith,

न्याव	نیاو	Justice, decision.
समाचार	سماچار	Information.
पृथीनाथ	پرتھی ناتھ	Lord of the world,
दंडवत	ڈنڈوت	Prostration.
मूज़ी	موذی	An oppressor.
भेद	بھید	A secret.
सामर्थ	سامرتھ	Ability, power.
दममारना	دم مارنا	To speak or meddle with.
रागी	راگی	A singer,
बागी	باگی	A horseman.
पारखी	پارکھی	A discriminator,
नारी	ناری	A pulse feeler,
गुरु	گرو	A preceptor,
उपजना	اُپجنا	To be born,
अंगसुभाव	انگ سبھاو	Natural disposition.

६१ ٦١ STORY, 61.

दअ़्वत	دعوت	Invitation,
दस्तरख़्वान	دسترخوان	Table cloth,
मोदी	مودی	A shop-keeper,
चरब	چرب	Fat.
दूकान	دوکان	A shop,
बरफ़	برف	Ice,
आबिज़लाल	آب زلال	Pure water,
निचोड़	نچوڑ	A squeeze, or filter,
मुशब्बह	مشبہ	A simile,
मुशब्बहबिहि	مشبہ بہ	That from which the simile is drawn,
अअ़्ला	اعلی	Greater,

६२ ٦٢ STORY, 62.

बरात	برات	Marriage train,

झाड़े फिरना	جھاڑے پھرنا	To go to the necessary,
देनलेन	دین لین	Barter,
रोज़नाम:	روزنامہ	Day book,
ख्याता	کھاتا	Waste book,
बही	بہی	Ledger,
देनापाना	دینا پانا	Traffic, profit and loss,
हाड़	ہاڑ	A bone,
चाम	چام	Skin, leather,
ऊतकेऊत	اوت کے اوت	A term of abuse used by bunneahs,
म्हारे	مھارے	Mine,
हूंकार	ہونکار	To make a noise through the nose,
घुरकना	گھُرکنا	To look at angrily, to frown,

ठीक ٹھیک Exact,

---

६३ ٦٣ STORY, 63.

नाई نائی A barber.

किसान کسان A husbandman.

गन्ने گنّے Sugar canes,

फांदी پھاندی A sheaf of 100 sugar canes.

चूसना چوسنا To suck.

ठोकना ٹھوکنا To beat.

रामराम رام رام Sahib salaam.

गांडा گانڈا Sugar cane.

हाथडालना ہاتھ ڈالنا To meddle with, to put ones finger in the pic,

जुतियाना جتیانا To bang with a slipper.

उजाड़ना اجاڑنا To destroy.

सूद سود Interest of money.

धौलियाना دهولیانا To bang with the hand,

जुगफूटना جگ پہوٹنا A term in chess and also signifying a difference between friends.

नर्दमारीगई نرد ماری گئی A die, a term in chess—the game is lost.

---

६४ ۶۴ STORY, 64.

पेशहोना پیش ہونا To be advanced.

सिलहख़ाना صلہ خانہ Arsenal.

दलना دلنا To grind coarsely,

पिसना پسنا To grind fine.

दल دل Army,

तुलना تلنا To draw up in array,

मारूबजना مارو بجنا To sound a kettle-drum,

भड़कना	بھڑکنا	To start,
हौं	ہوں	I. am
गिरतुहौं	گرت ہوں	I am falling,
दुपट्टाफिरानाना	دوپٹا پھرانا	To wave a flag of truce,
छाजना	چھاجنا	To fit, or become,
ठेंगा बाजना	ٹھینگا باجنا	To spoil.

६५ ٦٥ STORY, 65.

कुनबा	کنبا	Tribe,
धन	دھن	Wealth.
लहना	لہنا	To get.

६६ ٦٦ STORY, 66,

मातमपुरसी	ماتم پرسی	Condolence,
बेनवा	بینوا	Without any thing.
साधो	سادھو	A virtuous man.

या یا This, same as is اِس

संसार سنسار World.

बटाऊ بٹاؤ A traveller.

काकौ کاکو Whose, the same as کس کا

मनावनौं مناونون To appease.

सोग سوگ Grief.

रंक رنک Poor man.

सिंहासन سنگهاسن A throne.

६७ ٦٧ STORY 67.

गुसांईं گوسائیں A fuqueer.

बनारस بنارس A city.

रूखड़ روکهر A sort of devotee.

अलख الکھ Form of salutation.

लखना لکھنا To behold.

हमार ہمار Mine.

भजना بھجنا To call to mind.

नीच نیچ Base, low.

लाजवाब لاجواب Answerless.

---

६८ ٦٨ STORY, 68.

कमचोर کمچور A skulker.

काहिल کاہل Lazy.

तक़लीदी تقلیدی False, pretended.

खुजलाहट کھجلاہت Itching.

लोभ لوبھ Avarice, desire.

घिसा گھسا Rubbing, scratching.

---

६९ ٦٩ STORY, 69.

कड़ोड़पती کروڑپتی A man with a krore, or Neemoo mullick.

बक़ावल بکاول Head cock. [waste.

लूटालूट لوٹا لوٹ Excessive plunder or

बंदसेटनगाह ० بندہ سیٹہ نگاہ ० I.

७० ٧٠ STORY 70.

बांका باںکا A bragging beau.

चांख्यफाडफाड़ آںکہہ پہاڑ پہاڑ To look with all
देख्यना دیکہنا ones eyes.

खाजा کہاجا Name of a sweet-meat, and also imp. of k,hana,

थाल تہال A large plate.

मिहनताना: محنتانہ Hire.

धमकाना دہمکانا To cow, or threaten.

डांडना ڈانڈنا To gripe, or punish.

७१ ٧١ STORY 71.

चेला چیلا A disciple.

तीरथ تیرتہ A place of pilgrimage.

भाव بھاو Price.

मलीदा ملیدا A kind of food.

चूरमा چورما A ditto.

यात्रा یاترا Departure.

सूली سولی An inpating stake or gallows.

स्वर्ग سورگ Paradise.

जोगकमाना جوگ کما نا To perform a vow.

मनोरथ منورتھ Intention.

बहसाबहसी بحثا بحثی Disputation.

रामदुहाई رام دوہائی An oath of the hindoos.

---

७२ ۷۲ STORY, 72.

ऊपरली اوپرلی Uppermost.

चौखट چوکھٹ Door frame.

बांचना بانچنا To read.

हिम्मत همت Intention.

मर्दां مردان Plural of murd (مرد) man.

मदद مدد Assistance.

ख़ुदा خدا God.

बोरिया بوریا A mat.

अनबींधे ان بیندھے Unpierced.

दुलहन دلہن Bride.

गोदभरना گود بھرنا To fill the lap of the bride, (a ceremony at hindoo marriages.)

बधना بدھنا A water drinking vessel.

साहिबिकमाल صاحب کمال A saint.

झेंप جھینپ Modesty, shame.

मरतबः مرتبہ Rank.

अअ़ला اعلی Dignified, greater.

उलीचना اولیچنا To throw up water.

कोरे	کورے	New.
पोटली	پوتلی	A small bundle.
झोली	جھولی	A bag.
भैना	بھینا	Voc of بہن a sister.
दांतोंमें	دانتوں میں	To be astonished.
उंगलीदेना	انگلی دینا	

७३ ٧٣ STORY, 73.

गवैया	گویّا	A singer.
गुरुदेव	گرو دیو	Preceptor.
झलक	جھلک	Glittering.
धूप	دھوپ	Sunshine.
क़ादिर	قادر	Name of God.
नादिर	نادر	Ditto.
रूप	روپ	Form.

৭৪ ۷۴ STORY. 74.

দল্লাল	دلّال	A Broker.
দিনধোলে	دِن دھولے	Day light.
কোড়ীখানা	کوڑی کھانا	To subsist upon.
চৌধরী	چودھری	Head of each tribe.
বাট	بانٹ	Weight.
কাঁটা	کانٹا	Scales.
নিকতী	نکتی	Ditto.
রতী	رتّی	A weight used by jewellers, also fate, destiny.
পানদেনা	پان دینا	To favor or exalt, (by giving paun.)

৭৫ ۷۵ STORY, 75.

পূরী	پوري	A kind of bread.
কান্হকুব্জ	کانکبج	A seat of brahmans.

त़अ़न	تعن	Reproach.
प्रमान	پرمان	Proof, guidance.
चाहियत्	چاہیت	It is necessary,
मार्ग	مارگ	A road,

७६	۷۶	STORY 76,
जुआरी	جواری	A gamester,
शुहदा	شہدا	A prodigal,
क़ाबू	قابو	Opportunity,
खिसकाना	کھسکانا	To draw back,
लुक़ंदरा	لقندرا	A rake,
अंधी	اندھی	A blind woman,
पीसना	پیسنا	To grind,
पापी	پاپی	A sinner,
अकारथ	اکارتھ	Useless,

৭৭ ۷۷ STORY 77,

सद्रदरवाज़ः	صدر دروازه	Outward gate,
घंटालियां	گھنتا لیاں	Small bells,
गुंथवाना	گنتھوانا	To string,
छोर	چھور	End of a thing,
सक़्का	سقا	Water carrier,
पख्याल	پکھال	A bullock water bag,
मश्क़	مشک	A mans, ditto.

৭৮ ۷۸ STORY 78.

रदबदल	رد بدل	A dispute.
पुछवादेना	پچھوا دینا	To cause enquiry,

৭৯ ۷۹ STORY 79,

दुचिता	دچتا	Of two minds,

फूलना پهولنا To be pleased,

फिरत پهرت For پهرتا walks, moves,

काठ کاٹهہ A Pr. of stocks,

पाय پاے The foot,

---

८० ۸۰ STORY 80,

करता کرتا A performer, god,

करंता کرنتا Ditto ditto,

छत्रधरे چهتر دهرے A compound, signifying making a king by exalting the chatta over his head.

रीता ریتا Empty,

ढुलकाना ڈهلکانا To overturn.

---

८१ ۸۱ STORY 81.

मल مل Dung, also a proper

name & a hero,

बेग	بیگ	A lord, also dung,

---

८२ ۸۲ STORY, 82,

उलहना	اُلہنا	A complaint,
यास	یاس	Hopelessness,
हियेकाअंधा	ہئیے کا اندھا	A fool,
मतकाहीना	مت کا ہینا	A fool,
गांठकापूरा	گانٹھ کا پورا	A rich man,
छांदना	چھاندنا	To tether,
नदोला	ندولا	An earthen vessel,
बहकाना	بہکانا	To mislead,

---

८३ ۸۳ STORY, 83,

प्टथवी प्रदक्षना	پرتھوی پردکھنا	To travel round the world,
कित	کت	Whether.

या	یا	This;
पराअलबध	پرالبدہ	Destiny.

८४	۸۴	STORY, 84.
डींगमारना	ڈینگ مارنا	To boast.
तिल	تِل	A small grain.
गबरू	گبرو	A youth.
झंपतहोना	جھنپت ہونا	To flee.

८५	۸۵	STORY, 85.
गिलौरी	گلوری	A pawn made ready for eating.
खीली	کھیلی	Ditto. ditto.
भौंडी	بھونڈی	Bad.
दीदेफाड़ना	دیدے پھاڑنا	To look with attention.
देखेसैके	دیکھےسیکے	What do you see?

धरीसैं	دهري سيں	Are placed or kept.
अनाड़ी	اناڑي	An ignorant person.
बारहबाट	باره بات	Gone to the doys,

८६	٨٦	STORY 86.
अनबनाव	ان بناو	Disagreement.
बधिक	بدهک	A huntsman-
बध्यौ	بدهيو	Killed.
मृग	مرگ	A deer.
बान	بان	An arrow.
तैं	تيں	With.
रुधरौ	رودهرو	Blood.
दियौ	ديو	Gave.
अति	ات	Much, many.
हित	هت	Affection.
अनहित	ان هت	Enemy.
होतहैं	هوت هيں	It is.

दुर्द्दिन	دُردن	An evil day,
प्राय	پاے	Finding, or receiving,

८७	۸۷	STORY 87.
दर्पन	درپن	A mirror,

८८	۸۸	STORY 88.
बिसनपद	بسن پد	A hymen to god.

८९	۸۹	STORY 89.
कबि	کب	A poet,
राजसभा	راج سبھا	A kings court,
मौनगहना	مون گہنا	To remain silent,
साह	ساه	Innocent person,

९०	۹۰	STORY 90,
जूतीयटकाते आना	جوتی چٹکاتے آنا	To come on foot,

जलेब	جليب	Equipage,
लद लेना	لد لينا	To load, to mount,
डुरियालेना	ڈوریا لینا	To lead in hand,

९१ ۹۱ STORY, 91,

परशहर	پرشہر	A foreign city,
आढ़त	آڑھت	Sale by commission,
तिजारत	تجارت	Trade,
टक्करका	ٹکّر کا	Equality,
साम्हनाकरना	سامھنا کرنا	To compare,
क़ज़ाकार	قضا کار	By chance,
मुआमलः	معاملہ	Business,
बिलटना	بلٹنا	To become bad,
दिवालानिकलना	دوالا نکلنا	To be a bankrupt,
दैन	دین	Debt,
महाजन	مہاجن	A merchant,
महफ़िल	محفل	An assembly,

संपत سنپت Wealth,
ऋन رن Debt,
घना گھنا Much,
बैरी بیری An enemy.
बास باس Habitation,
रूखड़ा روکھڑا A small tree,
बिनास بناس Destruction,
साहु ساہ A merchant,
ओछीपूंजी اوچھی پونجی Having small possessions,
खसमैंखाय خصمیں کھاے Ruining masters, a Proverb,

---

९२ ۹۲ STORY. 92

उड़ानापुड़ाना اڑانا پڑانا To throw away,
बुजुर्ग بزرگ Ancestors,
पैसे پیسے Cash,

हवेली	حویلی	A house,
तोड़ा	توڑا	A bag of 1000 Rs.
तवाज़ुअ	تواضع	Invitation,
ऐब	عیب	Vice, blemish,
बेक़दर	بیقدر	Valueless,
तबाह होना	تباہ ہونا	To be ruined,
तख़्तरवां	تخت روان	A litter,
हाथोंहाथ	ہاتھوں ہاتھ	With speed,
आदाब बजाना	آداب بجانا	To pay respect,
नीमख़ुदा	نیم خدا	A King.
महलसरा	محل سرا	The seraglio,
ख़ासख़वास	خاص خواص	A royal female servant,

आंखखुलना	آنکھ کھلنا	To awake,
खसोटना	کھسوٹنا	To tear the hair,
बोटी	بوٹی	A morsel of flesh,

---

९३ ۹۳ STORY 93

टालमटाल تال مٹال Fraud, deceit,

---

९४ ۹۴ STORY 94

कंगाल کنگال A poor man,

हलवाई حلوائی A confectioner,

ख़ुंचः خوانچہ A small tray,

मुंहांमुंह منہا منہ Full to the brim,

दीसतानहीं دیستا نہیں Unable to see,

घरजाना گھرجانا To be reduced to poverty.

---

९५ ۹۵ STORY 95

मध्यभाग مدھیہ بھاگ Center,

सेल سیل A spear,

९६ ۹۶ STORY 96

घोला گھولا A pill of opium,

भुस بھس Chaff,

कड़वी کڑوی A stubble of a sort of grain

तांता تانتا In a string,

भिड़ना بھڑنا To strike against,

९७ ۹۷ STORY 97

पदारथ پدارتھ Valuables,

सुघड़नर سگھڑنر A wise, or virtuous man,

दिसावरां دساوراں Climates.

९८ ۹۸ STORY 98

ढंढोरिया ڈھنڈھوریا A Drummer,

ढंढोरा	ڈھنڈورا	A Drum,

९९	۹۹	STORY 99
ख़िज़ाब	خضاب	Dying the hair,
झुर्री	جھرّي	A wrinkle,
कलप	کلپ	Dying the hair.

१००	۱۰۰	STORY 100
ऋदावत	عداوت	Enmity.
भैंचाल	بھونچال	An Earthquake.
भावत	بھاوت	Contemplating.
देउंगा	دیئونگو	I will give.
सृष्ट	سرشت	The World,
इच्छा	اِچھّا	Desire,
दै	دوى	Two,
ग्रहन	گرہن	An eclipse,

जुगत	جگت	Address,
जंगलजाना	جنگل جانا	To perform a necessary act,
प्रमान	پرمان	Proof,

सन १८६७

राजा बीर बिक्रमाजीत के बीच

और अशरफ़ुल अशराफ़ लार्ड मिंटो

गवरनर जनरल बहादुर के राज में और

खुदावन्दि निअ़मत कपतान जान उलियम टेलर

साहिब और लिपटन अबराहाम लाकट

साहिब के हुक्म से श्रीलल्लूजी लाल कवि

ब्राह्मन गुजराती सहस्र अवदीच आगरे

वाले ने एक सौ नक़्ल ज़बानि रेख़्तः में

बनाय जमअ़ कर छपवाई

कालेज के नौसिष्य साहिबों

के पढ़ने को